भाग्य रेखा

भीष्म साहनी

शीला के नाम—

क्रम

जोत

जानकू ने चिलम को ठकोरते हुए एक बार फिर आसमान की तरफ देखा। बारिश हल्की तो हो गई थी, लेकिन बादल उसी तरह घने और बोझल, सारे आसमान को ढके हुए थे। रात सलामती से गुजर जाए, ओले न पड़ें, तो वह और इतजार नही करेगा, कटाई शुरू कर देगा।

जानकू ने अपने इष्ट देवता का नाम लिया और गले में बधे हुए देवता के चिह्न चादी की सिंघी को छुआ 'मालिक, नजर रखो।' फिर पास पड़े हुए, मलमल के छोटे से काले कपड़े को तह करने लगा।

जानकू का खेत पहाड़ की ढलाई पर था। खेत तो कहना ठीक नही, खेत के छोटे छोटे टुकड़े थे, जो सीढ़ियों की शक्ल में, एक के ऊपर दूसरा, तलाई को ढके हुए थे। कागड़े के सुदूर पहाड़ो में जगलात का जो रास्ता 'कोहड' से 'नरशेता' की ओर, ऊचे पहाड़ को कमरबन्द की तरह घेरे हुए है, उसी के दामन में, यह जमीन का टुकडा था। एक कोने में छिपा हुआ होने के कारण जानकू की जमीन बाकी गाव से अलग थलग थी।

गाव में खेत कट चुके थे और लोग मटौर मेले की तयारियां में थे। कागड़े के हर गाव वाले के लिए मटौर मेला एक लम्बे सफर के बाद अपने चिर वाछित स्थान पर पहुच जाने के बराबर था। खेत कट जाते और 'हाड' महीने के पहले दिन, गाव के लोग, नरसिंघो और नगारो को बजाते हुए गाव के देवता की पालकी उठाए हुए, कई पहाड़िया पार करके मटौर गाव की ओर जाते, जहा अनाज के बड़े देवता का मदिर था। दिन भर देवता की पूजा होती, और मदिर के फर्श पर चढ़ावे के गेहू का एक बिछौना सा बिछ जाता। फिर रगरलिया होती, लुगडी के नशे में किसान

झूमते हुए घरा को लौटते और अपने इष्ट देवता को फिर से मंदिर मे स्थापित कर देत।

पर जानकू इस मेले पर हमेशा हापता हुआ ही पहुंचता था। उसकी जमीन, छिपे हुए कोने मे होने के कारण, सूरज की धूप से वचित रहती थी। जहा औरो के खेत पहाड के विशाल वक्ष पर फैले हुए, दिन भर खिली हुई धूप का रस लेते, वहा जानकू के खेत पर केवल दोपहर की ढलती हुई धूप पडती—और इसी कारण बरसात के शुरु हो जाने तक खेत तैयार न हो पाता। इसीलिए जेठ महीने के आखिरी दिन हमेशा जानकू की नीद उचाट किये रहते। जहा और लोग मेले की तैयारियो मे व्यस्त होते, वहा जानकू की आखें आसमान को ताकती रहती कि ओले न पडें और खेत बच जाए।

यह थी जानकू की जमीन। अन्यमनस्क, मलमल के कपडे को सहलाते हुए, उसकी आखो के सामने कई दृश्य घूम रहे थे वह दृश्य भी जब उसने इस जमीन को खरीदने का निश्चय किया था। उसे ऐसा जान पडा जैसे फिर उत्तमी का छोटा-सा सलोना हाथ उसके दिल को छूने लगा है, और उसके कन्धे पर अपना सिर रखे उत्तमी कह रही है— ले लो न यह जमीन। मैं जो अब आ गई हू। मैं सब काम करूगी।

और जानकू ने उसका हाथ सहलाते हुए कहा—'यह जमीन के बहुत छोटे छोटे टुकडे है उत्तमी, काम करते-करते हड्डिया टूट जाएगी।'

'मैं तीन घडे पानी के उठाकर पहाडी पर चढ सकती हू। मैं सब काम कर लूगी।'

और फिर धीरे से जानकू के सीने के साथ सटकर हसती हुई, और अपनी चमकती हुई आखो स उसे अवाक करती हुई बोली—'यहा हम कोई देखेगा भी नही। जब चाहेंग काम करेंगे, जब चाहेंगे बैठ कर बातें करेंगे। यहा तो गाव के आदमी आते ही नही। तू कोठा बेचकर जमीन खरीद ले।'

और जानकू ने अपना पतक कोठा बेचकर यह जमीन खरीद ली।

दो ही महीने पहले सात पहाडिया दूर बैजनाथ से जानकू उत्तमी को ब्याह के लाया था। अढाई सौ रुपय तो देने पडे थे, लेकिन जसे स्वग खरीद के ले आया हो। उत्तमी गोडी करती तो हसती हुई, और जो जगल

मे से लकडिया काटकर लाती तो हसती हुई। और धीरे धीरे इसी जमीन की स्निग्ध ओट मे, उत्तमी दो बच्चा की मा भी हो गई थी।

पर अब उत्तमी नही थी। उसे मरे भी आठ साल से अधिक बीत चुके थे। उत्तमी का श्वेत कोमल हाथ, सहसा निर्जीव होकर, जैसे जानकू के कधे पर से लुढक गया।

जानकू ने आख उठा कर देखा तो लम्बरदार सामने खडा था। कद का लम्बा और गठीला, सिर पर पगडी और कानो म सोने की बालिया। लम्बरदार की चाल-ढाल म ही रोब था। जब बात करता तो अपने आप ही माथे पर बल पड जाते। जानकू एक हाथ से अपने गले मे बधी हुई 'सिघी' को छूता हुआ उठ खडा हुआ।

'तेरी जमीन फिसल रही है जानकू और तू बैठा चिलम पी रहा है। जमीन रहे या जाय, लगान देना होगा, पहले ही कह दू।'

और बिना कुछ कह सुने, बिना जवाब-सवाल का मौका दिये, वह रास्ते पर आगे निकल गया।

जानकू की टागें लडखडा गईं और वह हतबुद्धि घर की सीढी पर बैठ गया। उसे ओला का डर था, कि कही लहलहाते खेत को बरबाद न कर दें, जमीन के फिसलने का नही। लेकिन अक्सर वही दीवार टूटने लगती है जिसे मनुष्य सबसे अधिक मजबूत समझता है।

लम्बरदार की आवाज सुनकर जानकू के दोनो बच्चे घर से बाहर निकल आए और हैरान आखो से अपने बाप को देखने लगे। उनकी समझ मे न आया कि क्या उनका बाप एक वाक्य सुनने पर ही जमीन पर यू बैठ गया है। छोटे सोमी को तो फिसलती जमीन देखन की तीव्र उत्कण्ठा हुई, लेकिन पिता को चुपचाप बैठा देख कर मुह मे उगली दबाए खडा रहा।

सीढी पर से उतर कर जानकू मुडेर के पास आया जहा पत्थरा से ही ढकी हुई, देवता की छोटी-सी मूर्ति धरी थी, और हाथ बाध कर देवता के सामने खडा हो गया—'मालका नजर रखी नजर रखी महाराज।'

और फिर बार-बार देवता के चरणो पर अपना माथा रखने लगा।

जब से उत्तमी मरी थी, उसे देवता से डर लगने लगा था। उत्तमी की मौत पर पहली बार उसे देवता के क्रोध का आभास हुआ था, कि वह

कितना दुदम और घातक हो सकता है। और जानकू मानने लगा था कि सब बात देवता के हाथ मे है, जो उत्तमी मरे तो क्या और जो ओले पड़ें तो क्या। बल्कि जानकू तो मानता था कि उसने सचमुच देवता के चढे हुए तेवर देखे हैं देवता के मुह पर क्रोध की रेखा देखी है।

जानकू ने तब मे अपने घर के बाहर, दीवार पर, देवता की हाथ भर ऊची मूर्ति रख छोडी थी जिसके पास देवता की खड़ाव, एक टीन का छोटा सा त्रिशूल, और मूर्ति के ऊपर, एक लकडी पर टगी हुई देवता की पताका। आते जाते जानकू देवता के चरण छू लेता, और उठते बैठते अपने गले म बधी हुई देवता की सिघी'।

कागडे मे हर पहाड के दामन मे एक गाव है, और हर गाव का अलग अलग देवता। उसकी मूर्ति न केवल पहाड की जोत' पर (चोटी पर) ही आसीन रहती है, जहा से वह गाव के हर आदमी को देखती रहती है, बल्कि गाव के मन्दिर म और गाव के हर घर के बाहर भी, उसका स्थान ह। जानकू हर त्योहार जोत पर चला जाता और देवता को नमस्कार करता, और हर रोज मन्दिर म और घर पर देवता की पूजा करता। उसकी चेतना म उत्तमी का स्थान देवता ने ले लिया था।

आज फिर जानकू को देवता के माथे पर बल नजर आए और उसका दिल काप उठा। बार बार याचना करने के बाद वह अपनी जमीन की तरफ भागा।

शाम हो चुकी थी जब वह जमीन पर पहुचा। फटे हुए कम्बल का घुटनो तक कोट, बकरी के बालो का कमरबन्द, नगे पाव और सिर पर एक कौच की-सी मैली टोपी, विशालकाय पहाडो के दामन म अकेला खडा हुआ जानकू बार-बार अपनी जमीन को देख रहा था।

बरसात के दिनो म पहाडो पर से अक्सर चट्टानें गिरा करती ह, हवा की तेजी म रीह और चीड़ के पेड टूट टूट जाया करते हैं और सडको और खेतो के हिस्से बारिश के थपेडो से बह-बह जाते है। जमीन का खिसकना कोई नयी बात न थी।

लेकिन, जानकू को देख कर सन्तोष हुआ कि जमीन अभी तक बची थी, खिसकी नहीं थी, केवल जमीन की सबसे निचली सीढ़ी टूटी हुई थी

नाले की ओर झुक गई थी। पर पहाड की तलाई के निचले हिस्से मे एक गहरा चीर आ गया था, और यह चीर चन्द्राकार म फैलता हुआ जानकू के सार खेत को घेरे हुए था। बारिश का पानी इसी दरार मे से बह-बह कर नीचे आ रहा था और इसे और भी गहरा और चौडा किये जा रहा था। डर इसी दरार से था। अगर यह गहरी हो गयी तो सारी की सारी जमीन टूट कर बह जाएगी। ऐसे चीर जानकू ने पहले कई बार देखे थे लकिन इस तरह एक खेत का गला घाटत हुए नहीं।

जानकू उलट पाव भागता हुआ गाव की ओर दौडा। अगर खेत मे चीर पड गया है तो वह बन्द भी किया जा सकता है। अगर पटवारी ने दया की और लम्बरदार ने गाव के आदमी साथ कर दिये तो यह चीर बन्द हो जाएगा। और नही तो ऊपर से बारिश के पानी का रुख बदल दिया जा सकता है

पटवारीखाना गाव के दूसरे सिरे पर था। जब जानकू वहा पहुचा तो गाव के सब चौधरी, सायकाल के अन्धेरे मे बठे लम्बरदार का इन्तजार कर रह थे। दवता की भाकी तैयार हो रही थी। जानकू हाथ बाध कर बोला—मेरी जमीन वह चली है मालिको, कुछ करोगे तो बच जाएगी।

और जब पटवारी ने आख उठाकर जानकू की ओर देखा तो जानकू ने एक साम मे सारी वार्ता कह डाली।

थोडी देर के लिय सब चुप रहे। फिर राधे दुकानदार बोला—कल देवता का दिन है जानकू, और अभी अभी मन्दिर मे पूजा होने वाली है। आज तर साथ कौन जाएगा?'

'जो तुम लोग दया करोगे तो बच जाएगी। जानकू ने याचना की।

फिर पटवारी ने सिर हिलाते हुए, अपनी छोटी छोटी तीव्र आखो से जानकू को देखत हुए, धीरे धीर कहना शुरु किया। पटवारी पूजा पाठ करने वाला आदमी था, हर बात भाग्य पर विश्वास करके कहता था—'फिसलती जमीन को कौन रोक सकता है जानकू और फिर जेठ की बारिश। तुझ पर देवता का कोप ह। तेरी मदद कोई क्या करेगा? पिछले साल तेरा भसा हल चलाते हुए मर गया। कभी भैसे भी यू मरे हैं? फिर सबके खेत कट जाते हैं, तो तरे खेत का मिट्टा हमेशा हरा रहता है, कभी

ऐसा भी हुआ है ?'

राधे दुकानदार ने भी, पटवारी की हां में हां मिलाते हुए, हामी भर दी—'पहले देवता का कोप दूर कर दे, फिर खेत में बरकत आएगी। मरी मान और बकरे का चढ़ावा दे। कल देवता का दिन है।'

'बकरे के लिये पैसे कहां से लाऊं ?' जानकू ने रुंधे हुए गले से पूछा।

किसी ने कोई जवाब न दिया। अंधेरा बढ़ रहा था और उसकी बढ़ती छाया में चौधरियों के आकार धुंधले और अस्पष्ट हो रहे थे। बारिश की टप-टप उसी तरह जारी थी, और रिस रिस कर जैसे जानकू की आत्मा तक को निरुद्ध कर रही थी। देवता के कोप की बात सुनकर उसका दिल बैठ गया। उसे इसी बात का डर था कि कहीं फिर देवता का कोप न हो। जीवन भर में जानकू ने ऐसी भयानक रात न देखी थी।

पटवारी फिर अपने स्थिर, हृदयहीन लहजे में बोला— जोन पर जाके कोई मन्नत मान। ऊपर चला जा। बकरे के चढ़ाव की भी कोई जरूरत नहीं।'

कोने में बैठे हुए हरिचन्द ने पटवारी की बात काट कर कहा— सिर्फ मन्नत मान लेने से या देवता की पूजा से काम नहीं चलेगा जानकू। खेत फिसल रहा है, अभी कुछ कर पाएगा तो बचेगा नहीं तो कल तक उसका निशान भी नहीं मिलेगा। यह सब पुरानी बातें हैं। तेरी जमीन जंगलात की सड़क के पास है न, यह काम जंगलात वाले कर सकते हैं। तू रेंजर के पास चला जा। वह हाकिम है, मान जाए तो रातोरात मजूर लगा के जमीन के नीचे दीवार खड़ी कर देगा। और कोई तरीका नहीं। जा, देर मत कर।'

हरिचन्द की और पटवारी की पटती नहीं थी, खासकर जब हरिचन्द हाल ही में एक ठेकेदार का कारिन्दा बनकर अमृतसर तक उसके खच्चर हांक आया था, और बात-बात पर जिरह करता था।

लेकिन जानकू को कुछ सहारा मिला। देवता की तृप्ति जरूरी थी, मगर साथ ही अगर रेंजर मान जाए तो सम्भव है जमीन भी बच जाए। चुपचाप जानकू ने रेंजर के घर की राह ली। हरिचन्द उसे गली तक छोड़ने के लिये आया, और उसकी आस्था को पक्का करता हुआ कहने

लगा—'ऊपर भगवान है, तो नीचे हाकिम। पहले हाकिम की पैरवी कर जो मामला न सुलझे तो देवता के पास जाना।'

पर रेंजर के घर की ओर पहाडी पर चढते हुए जानकू की आस्था फिर टूटने लगी। जो सडक रेंजर के घर की ओर चढती थी, वही एक मोड पर अलग हो कर जोत को चली जाती थी। जानकू द्विविधा म पड गया। जोत पर एक बार माथा नवा आऊ तो फिर रेंजर के घर चला जाऊ। अगर देवता की तृप्ति पहले से करता, चढावा चढाता, पाठ करवाता, तो यह हालत न होती।

जानकू के कान मे चादी की एक मुर्की थी। उसने सोचा कि अगर इसे मन्नत मान कर जोत पर चढा आऊ तो बच जाऊगा। पर फिर फिसलती जमीन का ख्याल आया तो कदम रेंजर के घर की ओर जाने के लिये आतुर हो उठे। जोत पर पहुचते-पहुचते रात आधी से ज्यादा बीत जाएगी, रेंजर सो जाएगा और रात भर इतजार करनी पडेगी।

इसी द्विविधा म जानकू सडक के दोराह पर घबराया हुआ एक पत्थर पर बैठ गया। पटवारी के वाक्य फिर कान मे गूजने लगे। 'रेंजर क्या करेगा, जो देवता को मजूर होगा, वही होगा।'

पटवारी ने कभी गलत नही कहा था। पटवारी के अपने घर बच्चा नही होता था, लेकिन जब ज्वाला जी के मन्दिर मे उसने बकरे की बलि दी तो दूसरे ही साल चाद का सा बेटा उसके घर पैदा हुआ था।

भय, क्षोभ और उत्कण्ठा से जानकू का गला बार-बार रुध गया। वह कभी इतना अकेला, निस्सहाय और आश्रयहीन नही हुआ था। न मालूम कितनी देर तक दोराहे पर बैठा रहने के बाद वह, कापते पाव, और दोनो हाथो से 'सिधी' को पकडे हुए, रेंजर के घर की ओर मुड पडा।

रेंजर शराब के नशे मे था। शामदास रेंजर, जगलात का सबसे छोटा अफसर था, लेकिन तो भी हाकिम था, और हाकिम लोग रात के वक्त किसी से नही मिलते। बार बार दरवाजा खटखटाने के बाद वह लैम्प हाथ मे लिये हुए बाहर आया।

'रेंजर साहब, मेरे खेत मे चीर आ गया है, जो ठीक न हुआ तो सारा

खेत वह जायगा।' जानक ने पहले वाक्य मे ही अपनी दीनता का परिचय दे दिया ताकि रेंजर नाराज न हो।

'कौन है?' रेंजर ने लैम्प उठाते हुए ध्यान से देखा।

'जी हुजूर!'

'क्यो, क्या काम है?'

और जानकू ने फिर हाथ बाधकर सारा किस्सा कह सुनाया।

नशे के बावजूद भी, क्षण भर मे, रेंजर ने मामला समझ लिया। अगर जमीन बह गई तो सडक को भी नुक्सान पहुचेगा। लेकिन बोला नही चुपचाप खडा रहा।

देखो महाराज, आज मुझ पर मुसीबत आई है मेरी तरफ से आख नही मोडो। ऊपर भगवान्,है और नीचे तुम हो?

जानकू ने गिडगिडाते हुए हरिश्चन्द का कहा हुआ वाक्य दोहरा दिया और अधीर उत्कण्ठा से रेंजर के मुह की ओर देखने लगा। लेकिन हाकिमो की निगाह तो देवता की निगाह की तरह गोपनीय होती है, कब उस पर बरक्त करेगी, कौन कह सकता है।

जानकू को एकाएक सडक का ख्याल आया, जो बल खाती हुई ऐन उसकी जमीन के ऊपर से जाती थी। रेंजर के पाव घुटनो तक दबाते हुए बोला

देख मालिक जो मेरी जमीन बह गई तो सडक को भी नुक्सान पहुचेगा। वह कमजोर पड जायगी।

रेंजर ने गुस्से से पाव खीच लिय।

जानकू जानता था कि रेंजर पर एक ही चीज असर कर सकती है, और वह जानकू के फटे हुए जेबो म स कब की निकल चुकी थी। जानकू जब से गरीब हुआ था, यही सोचा करता था देवता और हाकिम दोनो को एक ही चीज तृप्त कर सकती है और वह उसके पास नही। वह देवता के श्राप को कम शात कर पायगा?

किसी जमाने मे रेंजर की उसकी पर नजर रहा करती थी। सारा गाव जानता था। जानकू यह सुना करता और 'दिल ही दिल मे रो दिया करता। पर गाव की कौन सी जवान लडकी थी जिस पर कभी-न-कभी

रेंजर की नजर न रही हो ? जानकू को और कुछ न सूझा तो उत्तमी का वास्ता डालते हुए हाथ बाध दिय—'उत्तमी के छोटे छोटे बच्चे भूखो मर जायेंगे माई बाप !'

और उसन फिर रेंजर के पाव पकड लिय

रेंजर को शराब की मस्ती मे उत्तमी का चेहरा याद आया, हर वक्त हसता शर्माता हुआ चेहरा, उसका छोटा सा गठीला बदन । उत्तमी के सास की धीमी सी बास भी रेंजर की उत्तेजित वासना को छू गई । लेकिन जानकू के सामने वह सरकारी अफसर था, और उत्तमी को मर भी बरसा बीत चुके थे और उत्तमी की जगह एक दिन के लिये भी खाली न हुई थी । पर रेंजर न अब की बार जवाब जरूर दिया 'मैं जगलात मे काम करता हू जानकू, मरा खेती के साथ कोई वास्ता नही । जा गाव वाला म मदद माग !'

इस कोरे जवाब से जानकू का सिर चकरा गया । वह इस तरह रेंजर के मुह की ओर ताकने लगा जैसे शून्य म देख रहा हो ।

जानकू को फिर देवता की याद आई । उससे जरूर भूल हुई है । अगर हापता हुआ जोत के सामन जा खडा होता और देवता के चरणो पर माथा रख देता, तो जरूर देवता को दया आ जाती । देवता की नजर हो तो तूफान थम जाते है, और टूटत हुए पहाड ज्यो के त्यो खडे रह जाते हैं । जानकू दिल ही दिन मे देवता के सामन अपना दुखडा रो गया और अपनी असीम व्याकुलता को दबाये हुए, चुपचाप वहा से चल दिया और बिना कुछ कहे सुने पहाडी उतरने लगा ।

फिर एक ऐसी घटना घटी जिसका चमत्कार जानकू कई घण्टे तक नही समझ पाया । अभी वह चन्द कदम ही दूर गया होगा कि रेंजर की आवाज ने पाव रोक लिये ।

'ठहर जानकू किधर भागा जाता है ? म तो तेरा दिल देख रहा था । आज तेरी जमीन टूट गई तो क्या सडक फिसलन लगेगी, इसम नुक-सान किस का है ? तू जमीन पर चल । म मजदूर लेकर पहुचता हू !'

जानकू जैसे काप गया । उसकी आवाज देवता ने सुनी है या हाकिम ने ?—नहा, नहीं, जरूर देवता न सुनी है । उसने जोत को याद किया तो

रेंजर का मन बदल गया। रेंजर को देवता का हुक्म हुआ है। जोत न भक्त की आरती सुनी है।

जानकू को सोचने की आदत न थी। उसकी मोटी मोटी उगलियो वाले हाथ ही, काम मे जुटे हुए, उसकी सारी सोच किया करते थे। लेकिन आज वह इस चमत्कार पर पुलकित हो उठा। उसे ऐसा लगा जसे कोई दिव्य हाथ उसके सारे बोझ को थामे हुए, उसे पग पग पर आश्रय दे रहा है।

अथाह भावोद्रेक मे जानकू ने रेंजर के पाव पकड लिये, और फिर भागता हुआ पहाडी उतरने लगा। लेकिन जमीन की ओर जाने की बजाय वह अपने घर की ओर भागने लगा। बारिश उसी तरह जारी थी, और रात का सन्नाटा गहरा हो रहा था।

अपनी डेवढी म पहुचकर रास्ता टटोलते हुए जानकू देवता की मूर्ति के सामने खडा हो गया और कापते हाथो से कान की मुर्की देवता के चरणो पर रख दी और बार बार माथा निवाने लगा। फिर अन्दर पहुच कर उसने कुप्पी जलाई।

जानकू के दोनो बच्चे, एक दूसरे से चिपटे हुए गहरी नीद सो रहे थे। छोटी लडकी गोपी, बिल्कुल अपनी मा की-सी सूरत लिये हुए, पीला चेहरा, पतले नक्श, घुटने छाती से लगाए, सिकुड कर पडी थी। उसके ओठो पर अब भी एक हल्की सी मुस्कान खेल रही थी जो कागडे की स्त्रियो का एकमात्र जेवर है और उनकी यातना को आजीवन छिपाए रखता है। उसके साथ लेटा हुआ सोमी बार बार करवटें ले रहा था।

जानकू ने सोमी के कन्धे को हिलाया। सोमी दसवें वर्ष मे था। अपने बाप का सा नाटा शरीर, चौडा मुह छोटी छोटी जन्म से ही निराश आखें।

जब सोमी आख मलता हुआ उठ बैठा तो जानकू चुपचाप उसे पिछली कोठडी म ले गया, और उसे जमीन पर बिठाकर खुद उसके सामने बैठ गया। कुप्पी की अस्थिर रोशनी म सोमी केवल प्रकाश और अधकार के नाचते साए ही देख रहा था।

जानकू ने अपने आतुर हाथो से, आखें बन्द करके, गले म बधी हुई

'सिघी' को उतारा और चुपचाप सोमी के गले म बाध दिया। और उसके सिर पर हाथ फेरने लगा। जानकू ने सोमी को भी देवता के अपण कर दिया।

जानकू के होंठ कुछ कह रह थे जिन्ह ऊघता हुआ सोमी नही समझ पाया। फिर जानकू उठ खडा हुआ और बिना कुछ कहे सुन घर से बाहर चला गया। सोमी, हतबुद्धि, कितनी देर तक खिडकी म से बाहर भाकता रहा, और गली के कीचड को लाघते हुए बाप के पाव की आवाज को सुनता रहा।

जब जानकू जमीन पर पहुचा तो रेंजर हाथ मे बटरी लिय, पाच छ मजदूरो के साथ, खडा था। उसने एक ही नजर मे समझ लिया था कि चीर की मरम्मत कोई बहुत बडी बात न थी। वह ऐसे सैंकडा चीर बाध चुका था। पर जानकू की नजरो मे अब भी वह एक भीपण खाइ के समान था।

रेंजर ने पहले ही से मजदूरो को उनका काम बतला दिया था। जब जानकू पहुचा तो उसने दोबारा, तलाइ पर बैटरी की रोशनी डालते हुए समझा दिया कि नीचे, जहा जमीन की सीढी फिसल रही ह वहा दो पत्थर चौडी दीवार बनेगी। जमीन पर जहा चीर था, जगह जगह पत्थर और मिट्टी की रोकें खडी की जायेंगी। और ऊपर, सबसे ऊपर सडक के पास, पानी का बहाव दूसरी तरफ बदल दिया जाएगा ताकि पानी जानकू की जमीन पर न पडे।

जानकू ने सिर हिला हिलाकर सब समझ लिया। उसन देखा, रेंजर की आवाज मे अब मिठास न थी, कटुता थी, तीखापन था—लेकिन वह हाकिम क्या जिसकी आवाज मे मिठास हो। और फिर जानकू को इसकी परवाह न थी, रेंजर देवता के हुक्म पर काम कर रहा था।

जानकू को चीर म रोकें खडी करने के काम पर लगाया गया और दो मजदूर उसके साथ दिये गये। रेंजर खुद दो मजदूरो को साथ लेकर ऊपर चला गया। और बाकी मजदूर, नीचे नाले के पास, दीवार खडी करने चले गये।

जानकू थका हुआ था, मगर काम पर लपक पडा। पत्थर नीचे नाले

के किनारे पर से लाने पडते थे। जानकू की बोझिल, थकी हुई टाँगें नीचे जाने पर बार-बार फिसल रही थी। लेकिन पग-पग पर वह जैसे अपनी जमीन के दिल की धडकन महसूस कर रहा।

काम कितनी देर तक रहा और कहा तक पूरा हो पाया जानकू को कोई सुध न रही। लडखडाते हुए पाव नाले की ओर जाते, और बोझिल, मुदा पीठ पर पत्थरो को उठाए हुए लौट आते। उसे मालूम न रहा कि वारिश की टप-टप कब बन्द हुई और जगल म से साय साय करती हुई हवा ने कब पहाडो को अपने आलिंगन मे ले लिया।

थका हारा जानकू एक यन्त्र की तरह काम कर रहा था। उसके वहमी मन म केवल एक ही वाक्य बार बार चक्कर काटता — आज देवता ने भवन की सुनी ह हाकिम को देवता का हुक्म हुआ है। मेरी जमीन बच जायगी।

पौ फूट रही थी जब जानकू ने कमर सीधी की। चीर मे जगह जगह रोक बन गई थी लेकिन पानी रिस रिसकर अब भी आ रहा था। जमीन तो वारिश मे जम कीचड हो गई थी और खेत भी बहुत कुछ उस कीच म मिल चुका था लेकिन जानकू को इसकी चिन्ता नही थी। जमीन बच गई तो मनो अनाज फिर निकल आएगा। जमीन फिसली नही थी, उसकी निचली सीढी भी नही गिरी थी, वरना उसे पता चल जाता। और अब तो उस पत्थर की पक्की दीवार का सहारा मिल गया होगा। सीढिया जरूर कच्ची हो गई थी लेकिन वह फिर भी ठीक हो सकती है। सिर्फ पानी का बहाव अभी पूरी तरह दूसरी तरफ नही मुड पाया था।

जानकू यह सब देख ही रहा था जब एक अजीब सा शब्द, गम्भीर और भयानक बादलो की गडगडाहट का सा उसके कानो म पडा। और बिना उसे सोचने का अवसर दिए एक ऊची चौडी चट्टान ऊपर से लुढकती पटा न स्वरा्री पहाड की तलाई पर मे गिरी।

जानकू घबराकर एक तरफ को हो गया। लेकिन जानकू के जमीन तब गप्तान म पहले ही चट्टान स्र गइ। जानकू न इसका कारण जानने के लिए रेंजर का पुकारा। लेकिन कोई जवाब न मिला। फिर यह सोचकर कि शायद रेंजर न सुना नहा स्वय ऊपर जाने लगा। थके हुए

लडखडाते पाव को घसीटता और कदम-कदम पर हाफता जानकू पहाडी चढने लगा। प्रभात की रोशनी मे धीरे धीरे हरएक चीज उसे नजर आन लगी थी।

सडक के पास पहुचा तो उसका दिल धक स बैठ गया। सडक टूट चुकी थी, और उसकी जगह पर एक गहरी खाइ अपना मुह फाडे खडी थी। यह उसकी जमीन के ऐन ऊपर था। और इसी खाई म पत्थर की चट्टान गिरकर एक जगह रुक गई थी। बारिश का पानी इसी म बह बहकर नीचे इकट्ठा हो रहा था। जानकू देखकर व्याकुल हो उठा। थोडी ही देर मे मिट्टी, पत्थरा और रुके हुए पानी का सारा बोझ उसकी जमीन पर आन पडेगा और देखते ही देखते सारी जमीन बह जायगी।

जानकू न चिल्लाकर रेंजर को आवाज दी, लेकिन सन्नाट म से आवाज पहाडा पर टकराकर लौट आई। जानकू को कोई जवाब न मिला। जानकू क्षण भर मे समझ गया कि अब सडक को मिलाने के लिए पुल की जरूरत होगी, न केवल पुल की ही बल्कि दो तीन दीवारा की भी—और छन छन करत पैसे रेंजर की जेब म जाएग।

जानकू आखें फाड-फाडकर खाई की ओर देखने लगा।

जानकू के हाथ अब भी थोडा काम कर सकते थे वह अब भी मरना नही चाहता था। किसान था अनाज से प्रेम करता था। खेत म, दरार से हटकर गन्दम के कुछ पौदे अब भी टढे होकर खडे थे। अगर उनके सिट्टे भी बच रहे तो बच्चे एक जून रोटी खा पाएगे।

जानकू चट्टाना को पकडता हुआ नीचे उतर आया, और पागला की तरह, जहा कही उसे गहू का सिट्टा नजर आया, उस तोडना शुरु कर दिया। गहू के पौद, जानकू के शरीर की तरह शिथिल और बजान हो रह थ।

गाव मे नर सिघे बजने लग और मल के निमन्त्रण म वातावरण जाग उठा। जब नगारा और नर सिघा की आवाज जानकू क कानो म पडी तो वह धरती पर बठा हुआ, बार बार एक पत्थर का उठाने की कोशिश कर रहा था जिसके नीचे गन्दम के कुछ सिट्टे कुचले जा रहे थे।

पत्थर था तो छोटा-सा, लेकिन जानकू उसस जूझ रहा था। गाव म

आती हुई आवाजें भी, हजारा स्मृतियो से लदी हुई, उसकी चेतना को
पूणतया न जगा पाए। थोडी देर म देवता की भाकी मटोर की ओर जाती
हुइ निक्ली। मजी हुइ पालकी को गाव के चार मुखिया उठाए हुए थे,
उसके आगे और पीछे गाव के लोग नगारे बजाते, नाचते, हसत चले जा
रह थे, और सबसे पीछे, सोमी और गोपी भी, अपने दीन मैले कपडो मे
चले जा रहे थे।

जमीन के ऐन सामने वह दोनो खडे हो गये और उनकी आखें अपने
बाप को ढूढने लगी। पत्थर के पास पडे जानकू को यो जान पडा जैसे
उत्तमी भी उनके पीछे आन खडी हुई है और बार-बार उसकी ओर इशारा
करती हुइ उसे बुला रही है

जब यह दश्य जानकू की नजरा से ओझल हुआ, तो उसे देवता की
जोत नजर आई—घने, काले बादला से घिरी हुई। महाराज के मुकुट को
काले बादल बार बार लपेट रहे है, महाराज अब भी नाराज हैं, वह इन्ही
काले बादलो को उसकी खेती पर भेज देंगे।

जानकू को महाराज के आकार मे फिर चढे हुए तेवर नजर आए और
उसने नमस्कार के लिए हाथ उठाए। लेकिन हाथो मे कोइ स्फूर्ति न आई।
वही के वही पडे रहे—एक हाथ जमीन पर, लेकिन गतिहीन, दूसरा हाथ
औंधा होकर घुटने पर।

जानकू उधर देखता रहा। धीरे-धीरे उसकी भयभीत आखो के
आगे जोत को भी ढकती हुई किसी दूसरे देवता की आकृति सामने आई।
उसके सिर पर भी बादल थे लेकिन उसके मुकुट को छू नही पाते थे, काली
काली भवें लाल दमकता हुआ चेहरा—और, जानकू देखकर डर गया—
उसक पाव के नीचे उत्तमी की देह औंधी पडी थी और उसका दूसरा पाव
जानकू को दबोचने के लिए उठा हुआ था।

जानकू ने उत्तमी को पुकारा लेकिन वह बोली नही सहमी हुई नजरा
से जानकू को देखती रही। उस देवता ने जोत को भी ढक लिया था।
जानकू ने देखा कि इस देवता का क्रोध तो महाराज के क्रोध से भी अधिक
है।

देवता का कद बढता जा रहा था, उसके हाथ दो के बजाय अनगिनत

हो रह थे, और वह पहाड के ऊपर खडा चट्टाना को तोड-तोड कर फेंक रहा था, और सब चटटानें जानकू की खेती को कुचल रही थी। उसकी सहस्र आखा म क्रोध की ज्वाला नाच रही थी। सहसा वह देवता फिर छाटा होने लगा, उसकी बाहे कम होते होते फिर केवल दो ही रह गयी। अब उसके पाव थोडी-सी जगह को घेरे हुए थे।

जानकू देख कर हैरान रह गया कि अब उसके पाव के नीचे उत्तमी की देह भी न थी। उसके साधारण कपडा पर कीच था, और मोटे-मोट बूट कीच से मिटले हो रह थे, जानक की चेतना ने रेंजर को पहचान लिया। पर जानकू समझ न सका कि वह रेंजर है, या उसके भाग्य का क्रुद्ध देवता। जो चटटानें खेनी को कुचल गयी थी, वह इसी के हाथो से गिरी थी, उत्तमी भी इसी के पाव के नीचे पडी थी,—तो क्या यह जोत के देवता से भी बटा देवता है?—नही-नही, यह तो रेंजर ह, रेंजर शामदास जो पठानकोट मे दस बरस हुए आया था।

जानकू के निरद्ध हाथ उसका गला घाटने के लिए सिहर उठे। उस इन्ही चटटानो मे तोड डालने के लिए तिलमिला उठे। लेकिन देवता का शरीर फिर बढने लगा, फिर उसके पाव के नीचे उत्तमी की देह छटपटाने लगी, फिर उसके अनगिनत हाथ चटटानें तोड-तोड कर उसकी खेती पर फेंकन लगे, और जानकू की पथराई हुई आखें धीरे-धीरे सिकुडने लगी!

अशान्त रूहें

करीब महीना भर बीमार रहने के बाद आज मैंने चारपाई छोडी और घर के नजदीक एक बाग मे टहलने के लिए गया। बाग उजडा हुआ और बहुत पुराना है जिसे किसी वक्त शायद ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने बनवाया था। इस वक्त वहा कोई न था। बाग के निचले हिस्से म अलग थलग एक रास्ता है, मैं इसी रास्ते पर थोडी देर टहलता रहा और फिर सुस्ताने के लिए एक बेंच पर जा बठा।

थोडी ही देर बाद मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मेरे नजदीक साम ले रहा ह। मुमकिन है थकावट की वजह से मुझे झपकी आ गयी हो या शायद मैंने ख्याल न किया हो पर आख उठाकर देखा तो एक आदमी बेंच के दूसरे कोने पर बैठा हुआ मेरी ओर देख रहा था। उमर म वह लगभग 40 का होगा, चेहरा पतला और जर्द-सा, कनपटियो पर के बाल सफेद थ और सिर पर के छोटे न रगे बाल हवा मे उड रहे थे। शक्ल-सूरत म कोई भला आदमी जान पडता था। मैं सभल कर बैठ गया।

कहिए ?'

वह चुप रहा और एकटक मेरे मुह की ओर द रहा। मन मे सोचा शायद मुझे पहचानने की कोशि कर रहा है बाद वह स्वय बोल उठा

आप इस वक्त है, वा वक्त नहीं ?'

मेरा स्वास्थ्य अच ने यहा हो मैंने चला,

देखता रहा । एक तो उसका अचानक मेरे पास आकर बैठ जाना और फिर एकटक ताकना मुझे विचित्र-सा लगा । मैंने कहा

'मैंन आपको पहचाना नही ।'

'मैं तो आपको अच्छी तरह जानता हू, आप है न ?'

'जी हा ।'

थोडी देर फिर चुप । अब मैंने देखा कि वह भी आराम से बैठ गया है, लेकिन आखें उसकी अब भी मुझे देख रही थी ।

'एक बात आप से पूछू ?'

'कहिए । मैंने जवाब दिया ।

'क्या आप सत्यवादी ह ?'

मैंने मुडकर उसकी ओर देखा, तो उसने फिर पूछा

'क्या आप दयानतदार हैं ?'

मैं इस अजीब से सवाल पर दिल-ही दिल मे थोडा गुस्से भी हुआ और हैरान भी ।

'यह आप क्यो पूछते ह ?'

'क्याकि दयानतर आदमी का स्वास्थ्य हमेशा ठीक रहता है । सत्य-वादी का शरीर हमेशा शुद्ध रहता है ।'

मैं हस दिया लेकिन अब मेरा कुतूहल उसके बारे मे बढने लगा ।

'क्या आप स्वामी विशुद्धानन्द को जानते है ?'

'जी नहीं', मैंने जवाब दिया ।

'वह 1925 म इस शहर मे आये थे । मैंने उन्ह दयानतदार रहने का वचन दिया था, और उस आज तक निभाता आ रहा हू ।'

'तो आप कभी बीमार नही हुए ?'

'जी नही, कभी नही ।'

उसके इस तरह के सवाल जवाब मुझे मनोरजक जान पडे लेकिन वह शख्स इन्ह बहुत गम्भीर समझता था । मानो दयानतदार रहना जिन्दगी और मौत का सवाल हो ।

'आप बडे सयमी है, जो आप सत्यवादी और दयानतदार ह, मैं तो यह दावा नही कर सकता , मैंने कहा ।

'1925 से पहले मैंने सब मिलाकर 46 रुपये 3 आने अनुचित ढंग से कमाये थे। वह मैंने धीरे धीरे अपनी तनखाह में से काटकर दो सालों में दान कर दिए। तब से मेरे मन पर से बददयानती का एक बोझ उतर गया।

अब के वह शख्स जमीन की ओर देख रहा था और धीरे धीरे कह रहा था

'आत्मा पर से बददयानती का धब्बा धुल जाये तो आत्मा साफ हो जाती है। सफेद चादर की तरह साफ हो जाती है',

'क्या आप नौकरीपेशा हैं?' मैंने पूछा।

'मैं रेलवे में टाइप सैक्शन का सुपरिटेंडेंट हूं।

मेरी नजर उसके धूल भरे पुराने बूटों पर पड़ी। वह एक ऐसे आदमी के बूट थे जो जियादह वक्त चलता रहता हो और ऐसा जान पड़ता जैसे आज तक किसी ने उन्हें पोंछा तक न हो। उनके तस्मे तक खुले थे। सुबह ही वह सज्जन उनमें अपने पांव डाल देते होंगे और दिन भर की धूल छानने के बाद रात को निकाल लेते होंगे। और सिर पर उड़ते हुए बाल और जर्द सा चेहरा, उत्तेजित सी आंखें, मैंने सोचा, क्लर्क लोग तो खासे बन संवर कर रहते हैं।

'जो आदमी दयानतदार है वह सुखी है। तेइस साल की मेरी सर्विस है। मैं दफ्तर में केवल दफ्तर का ही काम करता हूं। कभी कोई अपना निजी खत भी आ जाय तो नहीं पढ़ता। दिन में केवल 3 मिनट के लिए रोज गुसलखाने में जाता हूं और हर शनिवार मैं 18 मिनट जियादह काम कर लेता हूं, ताकि वह कमी पूरी हो जाय।

मैंने हिचकिचाते हुए पूछा

"आपकी आय कितनी है?'

'मैं 90 रुपये लेता हूं। मेरे लिए बहुत है। मैंने सर्विस 25 रुपये पर शुरू की थी।

'आपका परिवार भी होगा?'

'जी है। तीन लड़कियां और एक लड़का।'

'इतने बड़े परिवार का पालन आप 90 रुपये में क्योंकर पाते होंगे।'

मैंने पूछा।

'हमारे दफ्तर मे एक बडे अफसर चान्दवानी थे, आपने उन्हे देखा होगा। उन्होने एक बार मुझे दफ्तर मे बुलाया और कहने लगे, 'मैं तुम्हारी सीनियर ग्रेड के लिए सिफारिश करना चाहता हू।' मैंने हाथ बाध दिये। मैंने कहा, 'जनाब मैं यह तरक्की नही चाहता। मेरी नजरो मे सब कगाल है, भिखारी भी कगाल है और महलमाडियो वाले भी कगाल हैं, और हर क्षण कगाल हो रहे हैं। एक कगाल दूसरे कगाल को क्या दे सकता है।' थोडे दिनो बाद उन्होंने फिर मुझे बुलाया लेकिन मैंने माफ कह दिया, आप मेरी आत्मा को पैसा से खरीदना चाहते हैं, आप स्वय तो भ्रष्ट हो चुके हैं, मुझे भ्रष्ट करना चाहते हैं। तब वह चुप हो गये।'

'आपको कभी यह महसूस हुआ कि आपने गलती की? मेरे विचार मे तो आपकी दयानतदारी को ही देखकर आपकी सिफारिश करना चाहते थे?'

'क्या दयानतदारी का इनाम पैसे मे है? नही, रुपया आत्मा को भ्रष्ट कर देता है, क्या आप इतना भी नही जानते?'

'तो वह तरक्की आपको मिली?'

नही, मैं गढे म गिरने से बच गया।'

'तो दफ्तर के बाकी क्लर्क क्या सोचते होगे?' मैंने पूछा।

'उसके बाद दफ्तर वाले मुझे पागल कहने लगे। मैं सुनकर हस देता। एक दिन सुबह मैं दफ्तर मे दाखिल ही हुआ था कि एक ने कहा—'लो, कजर आज दो मिनट देर से आया है। मैंने सुन लिया और बिना कुछ कहे अपनी मेज पर बैठकर तीन बार धीरे धीरे इस शब्द का उच्चारण किया—कजर, 'कजर', 'कजर'। फिर पसिल मे एक कागज पर एक एक अक्षर करके इस शब्द को लिखा 'क' 'ज्' 'ज' 'र'। फिर उच्चारण किया और जोर से हसने लगा। यह तो केवल चार अक्षर हैं मैंने कहा, 'बस और कुछ नही, एक शब्द मात्र है, बस।' इसके बाद उन्होने मेरे कई नाम पुकारे पर मैंने कोई ध्यान नहीं दिया। जब वह मुझ पर हसते तो मैं उन पर हसने लगता। मैंने समझ लिया कि इन शब्दो का कोई अर्थ नहीं होता।'

इस तरह की बातों से मेरा मन कुछ विचलित सा होने लगा। यह शख्स जो बार बार कह रहा है कि मैं बहुत निश्चिन्त हूं, मुझे कोई चिन्ता नहीं, शायद वास्तव में इतना निश्चिन्त है नहीं, अपने आपको धोखा दे रहा है। और जो आदमी 90 रुपये में परिवार पालता हो उसे कई चिंताएं हो सकती हैं। उसकी काली बड़ी-बड़ी आंखें एक जगह पर टिकनी न थीं। मानो अपने दिल की व्याकुलता से कहीं भाग जाना चाहती हों। लेकिन मैं शायद गलती पर था। उसने अपने आपको बहुत कुछ सिखा पढ़ा रखा था और वह पूरी दयानतदारी से मानता था कि वह निश्चिन्त और सुखी है। मैंने धीरे से मुड़कर उसकी ओर देखा, वह कुछ चुप था लेकिन उसकी आंखें उसी तरह बेचैन कभी इस तरफ और कभी उस तरफ देख रही थीं। उसी वक्त सामने एक छोटे-से पेड़ पर एक बुलबुल ऊपर की शाख पर आकर बैठ गई। बाग में बुलबुल देखकर मुझे खुशी हुई कि सर्दी का मौसम तो खत्म हुआ। मैंने कहा 'देखिए बुलबुलें आने लगी हैं, अब सर्दी खत्म हुई जाती है' लेकिन उसने कोई ध्यान न दिया न ही बुलबुल देखने के लिए सिर तक ऊंचा किया।

मैंने वार्तालाप का सिलसिला जारी रखने के लिए फिर पूछा आप कहते हैं कि आप दफ्तर में अपना निजी खत तक नहीं पढ़ते यह तो मेरे विचार में एक आदर्श को बहुत खींचने वाली बात है कभी कोई जरूरी काम का खत हो सकता है दुःख सुख का तार आ सकता है जिसे सब काम छोड़ कर भी देखना पड़े तो देख लेना चाहिए।

'आप तो समझदार आदमी हैं यह आपने क्या कहा। एक नियम का पालन या हो सकता है या नहीं हो सकता। बीच का रास्ता कोई नहीं। और मैं दो मिनट के लिए अपनी आत्मा को कलंकित कर लूं बददयानत हो जाऊं? वह वक्त मेरा नहीं होता सरकार का होता है जिसमें काम करने के लिए मुझे तनखाह मिलती है। मेरी माता के देहान्त का तार मेरा सम्बन्धी दफ्तर में ले आया था। मैं किसी सम्बन्धी से दफ्तर में नहीं मिलता। जब मैंने मिलने से इन्कार कर दिया तो वह क्रोध में तार मेरी मेज पर फेंक कर चला गया। मैंने वह तार शाम को घर लौट कर पढ़ा।

'आपकी मा की मत्यु हो गयी थी। आपको इसका खेद न हुआ कि आपने तार पहले क्यो न पढा ?'

'मत्यु पर खेद कैसा ? हम सब मर रह हैं, हर क्षण मर रह है, किसी की मौत पूण हो जाती है तो हम उसे उसकी मत्यु कह देत हैं। मेरी मा तो जन्म स ही मर रही थी, इस पर खेद कैसा ? यू तो मैं भी मर रहा हू, आप भी मर रहे है।

'आपने क्या गीता का अध्ययन किया है ?' मने पूछा।

'म किताब नही पढता। पिछले पच्चीस साला मे मैंन कोई अखबार या किताब नही देखी। किताबा मे श द भरे रहते हैं, जिनका कोई अथ नही। मेरी आत्मा साफ है उस पर बददयानती का कोई दाग नहीं। जो वक्त मिले म लोगा की सेवा करता हू इसमे भी शान्ति मिलती है। सेवा मे बहुत शान्ति मिलती है।' वह शख्स फिर अपने आपस बात करने लगा था।

'म रोज रात को दो बजे उठना हू और अपनी सारी गली को पानी स धो देता हू, उस वक्त पानी आम होता है। सब गली वाले मुझसे खुश हैं। बहुत सोना अच्छा नही। म रात भर मे केवल 3 घटे सोता हू। नींद म जो सपने आदमी देखता है उनका आत्मा पर बुरा प्रभाव पडता है।'

इस विचित्र आदमी का पारिवारिक जीवन कैसा होगा मुझे कुतूहल हुआ।

'क्या आपकी स्त्री भी आपके साथ गली धोती है ?'

वह घबराये हुए नज़ा म मुझे देखने लगा 'नही तो।'

'क्या वह इस अच्छा नही समझती ?'

नही इसीलिए वह सुखी नही। अपने कर्तव्य के प्रति बददयानत है, इसलिए उस सन्तोष नहीं। मुझे धिक्कारती है, बच्चा को पीटती है। पहले म घर से निकल जाया करता था। साथ वाली गली धो दिया करता था, या एक मित्र के लडके को गणित पढा दिया करता था। इस तरह रात को सोने क वक्त या खाना खान के वक्त पहुचता था। मगर फिर मने सोचा कि यह अपनी स्त्री के प्रति द्वेष है। अब म घर पर ही रहना हू और जो कुछ वह कहती है सहनशीलता से सुनता हू। आजकल उसको लडकियो के

व्याह की चिन्ता है।'

उसकी इन बातो को सुनकर मुझे अचानक याद आया कि मेरे एक मित्र ने किसी एक दारस का जिक्र किया था जो रात को उठकर गलिया घोता है और दोपहर को बाग मे घूमता रहता है। क्या यह वही तो नही ?

'हा, लडकियो का व्याह आजकल समस्या बन गयी है'—मैने कहा।

'समस्या कसी ? आदमी किसी का क्या पालन कर सकता है ? मैने तो कभी चिन्ता नही की। ससार मे कोई समस्या नही, ससार तो एक जलता कुण्ड है जिसमे हर एक को अपनी आहुति देनी होती है, उसे तो यही देखना है कि उसकी आहुति स्वच्छ हो आत्मा पर कोई धब्बा न आने पावे।'

अब म उसे पहचानने लगा था लेकिन सहसा वह एकदम उठ खडा हुआ।

रात हो रही है, म रात के वक्त शहर के बाहर नही रहता। अपनी गली म चला जाता हू।

'यह क्यो ?'

'रात के अन्धेरे मे पिशाच और पापी घूमते हैं, और वायुमण्डल म अशान्त प्रेतात्माए उडती है। म इनकी सगति मे नही रहना चाहता।'

आप प्रेतात्माओ को मानते हैं ?'

पाप ही सबसे बडी प्रेतात्मा है। पापी लोगो के मरने के बाद उनका पाप जीवित रहता है जो रात के अन्धेरे मे जाग उठता है, चक्कर काटता है।'

लेकिन आपको इसका क्या डर है ?'

'नहा, मुझे कोई डर नही, डर कैसा ? मेरी दयानतदारी मेरी रक्षा करती है। लेकिन मैं अपनी आत्मा को मलिनता से बचाये रखना चाहता हू। अन्धेरे मे आत्मा पर मलिनता का प्रभाव पडता है। मलिनता की छाया से आप भी बचिए। अन्धेरे म बाहर न घूमा कीजिए '

और बिना कुछ कहे-सुने वह विचित्र आदमी मुडकर चलने लगा और

शीघ्र ही चील के दो बडे-बडे पेडो के नीचे से होता हुआ आखो से ओझल हो गया।

यदि मेरे मित्र ने मुझे सत्य बताया था तो इन्ही दो चील के पेडो के नीचे इस अभागे से पचीस साल पहले एक रात कोई अपराध हुआ था। किस प्रेरणावश वह अपराध हुआ एक व्याकुलता भरी कहानी है।

शिष्टाचार

जब तीन दिन की अनथक खोज के बाद बाबू रामगोपाल एक नौकर ढूढकर लाये, तो उनकी क्रुद्ध श्रीमती और भी बिगड उठी। पलग पर बैठे-बैठे उन्होने नौकर को सिर से पाव तक देखा और देखते ही मुह फेर लिया

'यह बनमानस कहा से पकड लाये हो? इससे मैं काम लूगी, या इसे लोगो से छिपाती फिरूगी?'

इसका उत्तर बाबू रामगोपाल ने अग्रेजी म दिया

'जानती हो तलब क्या होगी? केवल बारह रुपये। इतना सस्ता नौकर तुम्हे आजकल कहा मिलेगा?'

'तो काम भी वैसा ही करता होगा।' श्रीमती अग्रेजी मे बोली।

'यह मैं क्या जानू। नया आदमी है हाल ही मे अपने गाव से आया है।'

श्रीमती जी की भवें चढ गइ

तो इसे काम करना भी मैं सिखाऊगी? अब मुझ पर इतनी दया करो जो किसी दूसरे नौकर की खोज म रहो। जब मिल जाये तो मैं इस निकाल दूगी।

बाबू रामगोपाल तो यह सुनकर अपन कमरे मे चले गये और श्रीमती दलहीज पर खडे नौकर का कुशल क्षेम पूछन लगी। नौकर का नाम हरू था और शिमले क नजदीक एक गाव से आया था। चपटी नाक, छोटा माथा, बेतरह से दात, मोट मोट हाथ और छोटा सा कद, श्रीमती ने गलत नहीं कहा था। नाम पता पूछ चुकने के बाद श्रीमती अपने दाए हाथ की उगली पिस्तौल की तरह हरू की छाती पर दाग कर बोली

'अब दोनो कान खोलकर सुन लो। जो यहा चोरी चकारी की तो सीधा हवालात मे भिजवा दगी। जो यहा काम करना है तो पाई पाई का हिसाब ठीक देना होगा।'

श्रीमती का विचार नौकरो के बारे मे वही कुछ था जो अवसर लोगो का है कि सब मक्कार, गलीज और लम्पट होते है। किसी पर विश्वास नही किया जा सकता। सभी झूठ बोलते हैं सभी पैसे काटते हैं, और सभी हर वक्त नौकरी की तलाश मे रहत हैं, जो मिल जाए तो उसी वक्त घर से बीमारी की चिट्ठी मगवा लेत है। इसीलिए श्रीमती जी का व्यवहार नौकरो के साथ नौकरो का सा ही था। यू भी घर मे उनकी हुकूमत थी। जो उन्ह पतिदव पर गुस्सा आता तो अग्रेजी म बात करती, और जो नौकर पर गुस्सा आता तो गालियो म बात करती। दोनो की लगाम खीचकर रखती। उनकी तेज नजर पलग पर बैठे बैठे भी नौकर के हर काम की जानकारी रखती, कि नौकर न कितना घी इस्तमाल किया है, कितनी रोटिया निगल गया है अपनी चाय मे कितने चमचे चीनी उडेली है। जासूसी नावलो की शिक्षा के फलस्वरूप उन्ह नौकरो की हर क्रिया में षडयत्र नजर आता था।

काम चलन लगा। हुनू कुरूप तो था ही, इसपर उजड्ड और गवार भी निकला। उसके मोट मोट स्थूल हाथो मे काच के गिलास टूटन लगे, परदा पर धब्ब पडन लग, और घर का काम अस्त-व्यस्त रहन लगा। श्रीमती दिन म दस दस बार उस नौकरी से बरखास्त करती। पर तो भी हुनू की पीठ मजबूत थी, दिन कटने लगे और बाबू रामगोपाल की खोज दूसर नौकर के लिए शिथिल पडने लगी। नौकर उजड्ड और कुरूप था, पर दिन म केवल दो बार खाता था, उसपर वेतन केवल बारह रुपये। जो किसी चीज का नुकसान करता तो उसी की तनख्वाह कटती थी। दिन बीतने लगे हुनू के कपडे मैले होकर जगह जगह से फटने लगे, मुह का रग और भी काला पडने लगा और गाव का जाट धीरे धीरे एक शहरी नौकर म तबदील होन लगा। इसी तरह तीन महीने बीत गय।

पर यहा पहुचकर श्रीमती एक भूल कर गई। कहते हैं स्त्री म सकीणता का इलाज पुरुष के पास तो नही पर प्रकृति के पास अवश्य है। श्रीमान् और श्रीमती के एक छोटा सा बालक था जो अब चार बरस का हो चला

था और प्रथानुसार उसके मुंडन संस्कार के दिन नजदीक आ रहे थे। चुनांचे घर में बड़े उत्साह और प्यार से मुण्डन की तैयारियां होने लगी। उद के वात्सल्य ने श्रीमती जी की आंखें आड़ दाल और घी से इन्ग कर रंग बिरंग खिलौनों और कपड़ों की ओर फेर दी, नाचगाने और बाजे का प्रबंध होने लगा। मित्रों सम्बन्धियों को निमन्त्रण-पत्र लिखे जाने लगे, और धीरे धीरे चाबियों का गुच्छा श्रीमती जी के दुपट्टे के छोर से निकलकर नौकर के हाथों में रहने लगा।

आखिर यह शुभ दिन भी आन पहुंचा। श्रीमान और श्रीमती के घर के सामने बाजे बजने लगे। मित्र-सम्बन्धी मोटरों और तांगों पर बच्चे के लिए उपहार ले लेकर आने लगे। फूलों, फानूसों और मित्र मंडली के हास्यविनोद से घर का सारा वातावरण जैसे खिल उठा था। श्रीमान् और श्रीमती काम में इतने व्यस्त थे कि उन्हें पसीना पोंछने की भी फुरसत न थी।

ऐन उसी वक्त हतू कहीं बाहर से लौटा और सीधा श्रीमान् के सामने आन खड़ा हुआ।

हुजूर मुझे छुट्टी चाहिए, मुझे घर जाना है।'

श्रीमान् उस वक्त दरवाजे पर खड़े अतिथियों का स्वागत कर रहे थे, हतू के इस अनोखे वाक्य पर हैरान हो गये।

क्या बात है?'

'हुजूर मुझे घर से बुलाया है, मुझे आप छुट्टी दे दें।'

'छुट्टी दे दें! आज के दिन तुम्हें छुट्टी दे दूं?' श्रीमान् का क्रोध उबलने लगा। 'जाओ अपना काम देखो। छुट्टी वुट्टी नहीं मिल सकती। मेहमान खाना खाने वाले हैं, और इसे घर जाना है।'

हतू फिर भी खड़ा रहा, अपनी जगह से नहीं हिला। श्रीमान झुंझला उठे।

'जाते क्यों नहीं? छुट्टी नहीं मिलेगी।

फिर भी जब हतू टस से मस न हुआ तो श्रीमान का क्रोध बेकाबू हो गया और उन्होंने छूटते ही हतू के मुंह पर एक चांटा दे मारा।

उल्लू के पट्ठे, यह वक्त तूने छुट्टी मांगने का निकाला है।

चाटे की आवाज दूर तक गई। बहुत से मित्र-सम्बन्धियों न भी सुनी, और आख उठाकर भी देखा, मगर यह देखकर कि केवल नौकर को चाटा पडा है, आखें फेर ली।

श्रीमती को जब इसकी सूचना मिली तो वह जैसे तन्द्रा से जागी। हो न हो इसम कोई भेद है। मैं भी कसी मूख हू जो इस लम्पट पर विश्वास करती रही, और सब ताले खोलकर इसके सामने रख दिये। इसने न मालूम किस किस चीज पर हाथ साफ किया है, जो आज ही के दिन छुट्टी मागने चला आया है। भागी हुई बाहर आई, और बराण्डे मे खडी होकर हतू को फटकारने लगी। उन्होंने वह कुछ कहा जो हेतू के कानो ने पहले कभी न सुना था। कुछ एक सम्बन्धी इकट्ठे हो गये, और जलसे मे विघ्न पडता देखकर श्रीमान् को समझाने लगे। एक ने हतू से पूछा।

'क्या, घर क्या जाना चाहत हो?'

हतू चुपचाप खडा रहा, पहले कुछ कहन लगा, फिर इधर-उधर देख कर रुक गया और बोला

'जी काम है।'

'क्या काम है?'

हेतू ने फिर धीरे से कह दिया।

'जी काम है।'

इसपर श्रीमती का गुस्सा तो फिर भडक उठा, मगर बाकी लोग तो बात को निबटाना चाहते थे, हतू को चुपचाप धकेलकर परे हटा दिया। फिर पति-पत्नी मे अग्रेजी मे परामश हुआ। आखिर दोनो इसी नतीजे पर पहुच कि इस वक्त चुप हो जाना ही ठीक है। मुण्डन के बाद इसका इलाज सोचेंगे।

हतू बजाय इसके, कि फिर काम मे जुट जाता बराडे के एक कोने मे जाकर बैठ गया और न हू न हा, चुपचाप इधर-उधर ताकने लगा। इसपर श्रीमान आपे से बाहर होने लगे। पहले तो देखते रहे फिर उसके पास जाकर, उससे कडक कर बोले।

'काम करेगा या मैं किसी को बुलाऊ?'

हतू न फिर वही रट लगाई।

मे देर नही लगी। झट से सडक पार करके हतू वे सामने जा खडे हुए, और उसे कलाई से पकड लिया।

'अरे तू कहा था इतने दिन ? गाव से कब लौटा है ?'

'अभी-अभी लौटा हू साहब।' हतू ने जवाब दिया।

'काम पर आया है अपना ?'

हतू ने धीरे से कहा।

'जी।'

'कौन सा ऐसा जरूरी काम था जो जलसे वाले दिन भाग गया ?'

हतू चुप रहा।

'बोलते क्या नही, क्या काम था ? मैं कुछ नही कहूगा, सच सच बता दो।'

सहसा हतू की आखो मे आसू आ गये। होठ बात करने के लिए खुलते, मगर फिर बन्द हो जाते। बार-बार आसू छिपाने का यत्न करता मगर आखें ऐसी छलक आई थी कि आसुओ को रोकना असभव हो गया था।

बाबू रामगोपाल पसीज उठे।

'क्यो क्या बात है ?' उसका कन्धा सहलाते हुए बोले।

'जी मेरा बच्चा मर गया था।' लडखडाती हुई आवाज म हतू ने कहा।

बाबू रामगोपाल को सुनकर दुख हुआ। थोडी देर तक चुपचाप खडे उसके मुह की ओर देखते रहे, फिर बोले

मगर तुमने उस वक्त कहा क्या नही ? तुम से बार बार पूछा गया मगर तुम कुछ भी न बोले ?'

हतू ने धीरे से कहा।

'जी, वहा कैसे कहता ?'

क्या ?'

'खुशी वाले घर म यह नहीं कहते। हमारे म इसे बुरा मानते है।'

और श्रीमान स्तब्ध और हैरान उस उजडड गवार के मुह की ओर देखने लगे।

साहब मुझे जाने दो, मैं जल्दी लौट आऊंगा, मुझे काम है ।'

आखिर जब जलसे मे बहुत से लोगो का ध्यान उसी तरफ जान लगा तो दो एक मित्रो ने सलाह दी कि उसका नाम पता लिख लिया जाए, उसकी तनख्वाह रोक ली जाए और उसे जाने दिया जाए । चुनाचि श्रीमान न अपनी डायरी खोली, उसपर हतू का पूरा पता लिखा, नीचे अगूठा लग वाया और धक्के मारकर बाहर निकाल दिया ।

दूसरे दिन श्रीमती ने अपना एक टक खोलकर अपनी चीजा की पड़ताल शुरू की । अपने जेवर, सिल्क के जुडाऊ सूट चादी के बटन, एक एक करके जो याद आया गिन डाला । मगर बडे घरा मे चीजो की सूची कहा होती है और एक एक चीज किसे याद रह सकती है । श्रीमती जल्दी ही थक कर बठ गयी ।

तुमने उस जान क्यो दिया ? कभी कोइ नौकरो को यू भी जाने देता है ? अब मैं क्या जानू क्या क्या उठा ले गया है ?'

जाएगा कहा उसकी तीन महीने की तनख्वाह मेरे नीचे है ।'

वाह जी सौ पचास की चीज ले गया तो बीस रुपये तनख्वाह की वह चिन्ता करेगा ?

तुम अपनी चीजो को अच्छी तरह देख लो । अगर कोइ चीज भी गायब हुइ तो मैं पुलिस मे इत्तला कर दूगा । मैंने उसका पता ठिकाना सब लिख लिया है ।

तुम समझे बैठे हो कि उसने तुम्हे पता भी ठीक लिखवाया होगा ?'

महीना भर बीत गया । हतू की कोई खबर न मिली । उसकी जगह एक दूसरा नौकर आ गया और घर का काम पहले की तरह चलने लगा । जब श्रीमती जी को कोइ चीज न मिलती तो वह हतू को गालिया देती । पर श्रीमान धीरे धीरे दिल ही दिल म अफसोस करने लगे । कई बार उनके जी म आया कि उसके पैसे मनीआडर करा के भेज दें मगर फिर कुछ श्रीमती के डर मे कुछ अपने सन्देह के कारण रुक जाते ।

एक दिन शाम का वक्त था । श्रीमान थके हुए दफ्तर से घर लौट रहे थे जब उनकी नजर सडक के पार एक धर्मशाला के सामने खडे हुए हतू पर पड गई । वही फटे हुए कपडे वही निर्धन मुर्झाया चेहरा । उन्हें पहचानने

म देर नही लगी। झट से सडक पार करके हतू के सामने जा खडे हुए, और उसे कलाई से पकड लिया।

'अरे तू कहा था इतने दिन ? गाव से कब लौटा है ?"

'अभी-अभी लौटा हू साहब।' हतू न जवाब दिया।

'काम पर आया है अपना ?'

हतू ने धीरे स कहा।

'जी।'

'कौन-सा ऐसा जरूरी काम था जो जलसे वाले दिन भाग गया ?'

हतू चुप रहा।

'बोलत क्या नही, क्या काम था ? मैं कुछ नही कहूगा, सच सच बता दो।'

सहसा हतू की आखो मे आसू आ गये। होठ बात करने के लिए खुलते, मगर फिर बन्द हो जाते। बार-बार आसू छिपाने का यत्न करता मगर आखें ऐसी छलक आई थी कि आसुओ को रोकना असभव हो गया था।

बाबू रामगोपाल पसीज उठे।

'क्यो क्या बात है ?' उसका कन्धा सहलाते हुए बोले।

'जी मरा बच्चा मर गया था।' लडखडाती हुई आवाज म हतू ने कहा।

बाबू रामगोपाल को सुनकर दु ख हुआ। थोडी देर तक चुपचाप खडे उसके मुह की ओर देखते रह, फिर बोले

'मगर तुमन उस वक्त कहा क्यो नही ? तुम स बार-बार पूछा गया मगर तुम कुछ भी न बोले ?

हतू ने धीरे से कहा।

'जी, वहा कसे कहना ?'

'क्या ?'

'खुशी वाले घर म यह नही कहत। हमारे मे इसे बुरा मानत है।'

और श्रीमान् स्तब्ध और हैरान उस उजडड गवार के मुह की ओर देखने लग।

अनोखी हड्डी

'स्वणदेश के महाराज उदयगिरि पचास वप की अवस्था तक पहुचते-पहुचते महाराजाधिराज हो गये। देश-देशान्तरो मे उनकी विजय पताका लहरा चुकी थी, उनके पराक्रम का कोई वारापार न था। अनेक बन्दी राजा, महाराज के दुग म अपने जीवन के अन्तिम दिन अंधेरी दीवारो को देखते हुए काट रहे थे, और उन्ही के राज्यो की अनेक सुन्दर रमणिया, महाराज के अन्तःपुर की शोभा बढा रही थी। जब भी महाराज की सेना किसी राज्य को रौंद कर लौटती, तो उनकी विपुल स्वण-राशि और भी बढ उठती, और उनके स्वण मुकुट मे नये-नये स्फटिक चमकने लगते। पर महा-राज की आखें अब भी क्षितिज पर अटकी हुई थी।

वपा ऋतु के अन्तिम दिन थे। महाराज अपने मन्त्रियो के साथ, अपने राज्य के उत्तरी पवतो पर आखेट खेल रहे थे। दोपहर ढल रही थी जब महाराज एक नव वयस्क हिरन का पीछा करते हुए अपना रास्ता भटक गये। आखेट की उत्तेजना म वह मीलो की दूरी तक अपना घोडा दौडाते चले गये। पर हिरन का कुछ पता न चला। जगल की सीमा आन पहुची, और महाराज थक कर एक पेड के नीचे खडे हो गये। पर दूसरे ही क्षण महाराज ने आख उठाकर देखा तो पुलकित हो उठे। ढलते सूय के रंजित प्रकाश म सामने एक वहदाकार पवत, अपना गवपूण माथा ऊचा किए खडा था, और उसके पाव पर एक विशाल नीली झील बिछी थी। झील इतनी स्वच्छ और निमल थी मानो प्रकृति के अथाह सौन्दय को प्रतिबिम्बित करने का दपण हो। पहाड की तलाइया देवदारु के वृक्षो से लदी पडी थी। दाइ ओर की तलाइ पर एक छोटा सा नगर बसा हुआ था, जिसके घरो की छतें, साय-

कान के धुधने प्रकाश मे, दूर तक फैली हुई नजर आ रही थी।

महाराज इस सुनहले दश्य को एकटक देख रहे थे, जब उनके साथी उन्हे ढूढते हुए आन पहुचे।

मैं न जानता था कि मेरे राज्य म ऐसे सुन्दर प्रदेश भी मौजूद है।' महाराज ने कहा।

जिसपर महामन्त्री ने हाथ बाधकर धीरे स उत्तर दिया

'महाराज यह प्रदेश आपकी राज्य सीमा से बाहर है। आपकी राज-सत्ता यहा पर समाप्त हो जाती है, जहा पर महाराज खडे है।"

'तो क्या यह प्रदेश मेरे राज्य का अग नहीं है?'

नही महाराज यह एक छोटा सा स्वाधीन देश है, जिसके लोग मछलिया पकडकर अपना निर्वाह करते हैं।'

महाराज के मन मे एक गहरी टीस उठी, और उनकी आखें ईर्ष्या स विचलित हो उठी

'यह मेरे राज्य का अग नहीं है ' फिर अपने हाथो की उगलिया एक मुट्ठी मे समेटते हुए दृढ निश्चय से बोले 'आज ही लौटकर सेना को तैयार करो, महामन्त्री, मैं स्वय इस प्रदेश पर चढाई करूगा। मरे राज्य की सीमा अब वह पवत शिखर होगा। कहते हुए महाराज वहा से लौट पडे।

इस सुन्दर साक्षात् के बाद अभी दस दिन भी न बीत पाए थे कि वह शान्त वनस्थली, सैनिको के सिंहनाद से गूजने लगी। जगला के हिंसक पशु भी महाराज के पराक्रम के सामन त्रस्त होकर भाग उठे। झील की शान्त जल राशि जिसपर पहले गाते हुए माहीगीर मछलिया पकडते थे, अब उन्ही के खून से लाल होने लगी। महाराज के वीर सैनिका की बाण वर्षा पडा और पत्थरो को भी क्षत विक्षत करन लगी।

तीन दिन बीत गये। महाराज की सेना झील पार करके नगर की दीवारा तक जा पहुची। पर तो भी माहीगीरो न हथियार नहीं डाले। रात के समय जहा महाराज की सेना मे विजय का कालाहल होता, वहा नगर पर मरघट की सी स्तब्धता छा जाती। कही पर कोई टिमटिमाना दीपक भी नजर न आता। माहीगीर दिन भर लडते, रात को अपन मृत

सम्बा धया को ठिकाने लगाते और जब इस कराल अधकार म उन्हे आगा की कोई रेखा नजर न आती तो वह अपनी जननी माता धरती को हाथ लगा कर अपने प्राणो की वलि दे देन की शपथ ले लेते।

प्रात काल का समय था। महाराज अपने शिविर म बैठे, अपने मन्त्रियो के साथ नये आक्रमण का आयोजन कर रहे थे, जब द्वारपाल ने आकर प्रणाम किया

महाराज एक आदमी द्वार पर खडा आपसे मिलना चाहता है।

कौन है ?

कोई बूढा आदमी है महाराज।

कोई राजदूत होगा। एक मन्त्री ने कहा।

या छद्मवेष म कोई सैनिक होगा। दूसरे मंत्री ने कहा।

उसके पास कोई अस्त्र नही महाराज, वह बहुत बूढा है, और लाठी के सहारे बडी कठिनता से खडा हो पाता है।

महाराज ने प्रवेश की स्वीकृति दे दी। और थोडी देर बाद एक वद्ध पुरुष एक लम्बा मैला सा चुगा पहने, अवस्था के बोझ के नीचे दबा हुआ, लाठी पर झुककर चलता हुआ, महाराज के सामने आ खडा हुआ।

क्या है वद्ध ? तुम कौन हो ? मेरे पास समय बहुत थोडा है।

बूढा नमस्कार करते हुए बोला

'महाराज, समय तो मेरे पास भी बहुत थोडा है। महाराज के यश और कीर्ति से चारो दिशाए गूज रही हैं। मरने से पहले आपके दर्शनो की लालसा लिए चला आया हू।

महाराज थोडी देर तक चुप बैठे रहे, फिर धीरे से बोले

शत्रु देश से आए हो वद्ध ?

नही महाराज, मैं आप ही के राज्य का सेवक हू। यहा से थोडी दूर झील के किनारे मेरा झोपडा है।

महाराज ने फिर धीरे से पूछा

तुम क्या चाहते हो वृद्ध ?"

दान दक्षिणा का प्रार्थी बनकर आया हू, महाराज। युद्ध के कारण मेरा काम बन्द हो गया है। यह कहते हुए उसने अपने लम्बे वस्त्र की जेब

मे हाथ डाला, और एक छोटी-सी सफेद हड्डी का टुकडा निकालते हुए बोला

'मुझे केवल इस हड्डी के तुल्य सोना दे दिया जाए, महाराज, मुझे और कुछ नही चाहिए।'

महाराज ने हड्डी को देखा—नाखून से बडी वह हड्डी न थी, और उसे देखकर अकस्मात हसने लगे

'वृद्धावस्था मे लोग पागल हो जाते हैं। इस हडडी के तुल्य तो कण-भर सोना भी न आएगा, वृद्ध।'

'मेरे लिए वह भी निधि के समान होगा, महाराज।' वृद्ध ने कहा।

महाराज ने हसते हुए तुला मगवाने का आदेश दिया, और अपने पास पडे हुए चादी के थाल मे से दो स्वर्ण मुद्राए उठाकर वृद्ध की ओर फेंकी

'इनके साथ हडडी को तोल लो, वृद्ध।' और फिर काम म लग गये।

तुला आई। एक पलडे मे हड्डी का टुकडा रखा गया, दूसरे मे दो मुद्राए। पर जब मन्त्री ने तोला तो हड्डी का टुकडा भारी निकला। महाराज लज्जित हुए, और फौरन ही दो मुद्राए और निकालकर तुला मे डाल दी। याचक की प्रार्थना भले ही छोटी हो, पर दानी के दान मे उदारता होनी चाहिए।

पर हडडी का पलडा फिर भी भारी निकला।

महाराज हैरान हुए और तुला मे से हडडी को निकालकर देखने लगे। फिर उत्तेजित हाथो से चादी के थाल मे से एक साथ मुट्ठी भर मुद्राए निकालकर तुला म डाल दी, और तुला को अपने हाथ मे लेकर स्वय तोलने लगे।

पर पहले की तरह हडडी का पलडा अब भी भारी निकला।

सब दरबारी चकित हो पास आ गए। वृद्ध हाथ बाधकर बोला

महाराज मैं अपनी हड्डी को वापस लेता हू। शायद आपके पास इसके बराबर सोना दान के लिए नही है।'

महाराज इस अपमान को सहन न कर सके। एक बडी तुला के लाने का आदेश दिया, और हड्डी को उठाकर बार-बार मसलकर देखने लगे। बडी तुला आई, और उसम एक तरफ यह तुच्छ सी सफेद हड्डी, और

दूसरी तरफ चमकती मोहरों से भरा सारा का सारा थाल उडेल दिया गया।

पर हड्डी का पलड़ा जू का तू भारी निकला।

'यह जादू की हड्डी है वृद्ध, तुम मेरा अपमान करने आए हो।' महाराज की आखें दम्भ और क्रोध स लाल हो उठी। न वह हड्डी को बाहर फेंक सकते थे, न ही उसके बराबर सोना जुटा सकते थे।

इससे भी बडी तुला मगवाई गई। मोहरो के स्थान पर सोने की ईंटें रख दी गइ।

पर नन्ही सी सफेद हड्डी फिर भी भारी निकली!

एक पागल जुआरी की तरह महाराज उस तुला पर अपनी स्वण राशि लुटाने लगे। दरबारी चित्रवत खडे इस अनोखे व्यापार को देख रहे थे। महाराज के माथे पर पसीने के बिन्दु नजर आने लगे।

वृद्ध पास खडा धीरे से बोला

'महाराज उदयगिरि, आपका राज्य बहुत विशाल है। पर आपके राज्य की धन राशि तो क्या, ससार भर के राज्यो मे इसकी तुलना का सोना न मिल सकेगा।

महाराज का सास फूला हुआ था। वृद्ध की ओर देखकर बोले

'क्या कहा, वृद्ध?'

वृद्ध ने सिर झुका कर कहा

हा महाराज ससार के साथ सिन्धुओ का पानी भी यदि सोना बनकर आ जाए तो इस हड्डी की प्यास को न बुझा पाएगा।'

महाराज चुप हो गये। और एकटक वृद्ध के चेहरे की ओर देखने लगे। फिर धीरे से बोले

क्या बात है वृद्ध, इस हड्डी का क्या भेद है?"

यह कामना की हड्डी है महाराज। इसकी प्यास सदा बढती है बुझती नही।

महाराज विस्मय म आ गये। उनकी गम्भीर मुद्रा पर आवेग के स्थान पर पराजय और चिन्ता के भाव नजर आने लगे। उनकी आखें वृद्ध के चेहरे पर से हट कर अनोखी हड्डी पर आ गई

'तो वद्ध, क्या ससार भर की धनराशि इस हडडी से हल्की ही रहगी ?'

'हा महाराज', वद्ध ने कहा, फिर धीरे से बोला

'इस माहीगीर नगरी का धन तो इसके पलडे को छू तक न पाएगा।'

'तो वद्ध, क्या इस हडडी की तुलना ससार की कोई भी वस्तु नही कर सकती ?'

वद्ध मुस्कराया, फिर धीर से अपने पास खडे एक सैनिक के हाथ मे से, उसकी कटार ले ली, और दूसर ही क्षण अपन हाथ को जख्मी कर लिया।

'यह तुमने क्या किया वद्ध ? अपना हाथ काट लिया ?' महाराज ने हैरान होकर पूछा।

वृद्ध ने अपने जख्मी हाथ पर स टपकते लहू की एक बूद तुला मे डाल दी। देखते ही देखते, हड्डी का पलडा ऊचा उठने लगा और खून की बूद भारी हो उठी।

'महाराज मेरे बूढे लहू मे तो कोई स्पन्दन नही, कोई जीवन नही, पर एक युवक का लहू, या एक सरल बालक के शरीर का लहू तो अपने स्पशमात्र से हड्डी को हिला देगा।'

महाराज विचलित हो उठे, और चुपचाप शिविर मे से बाहर निकल कर भील के सामने आ खडे हुए। बाणो की वर्षा अब भी उसी वेग से चल रही थी, और नगर की ओर से युद्ध का हाहाकार पहले से भी अधिक ऊची हो उठा थी। चुपचाप खडे महाराज, बडी देर तक कभी हडडी को, और कभी भील के रक्त रजित पानी को देखते रहे।

कहते हैं, दूसरे दिन प्रात जब युद्ध की दुदुभि वजन का समय हुआ, तो महागीरो ने देखा कि महाराज उदयगिरि की सेनाए वापिस लौट रही हैं, और वना मे से भागे हुए पशु पक्षी फिर से वापिस लौटने लगे है।

[एक लाक कथा पर आधारित]

तमगे

अपनी सुशिक्षिता सुचारु भौजाई से एक दिन पूछा—'वहिन जी, अगर जग छिड गई तो क्या होगा ?' तो विमुखता म मुह टेढा करके बोली—'मैं तो कहती हू एक बार दोनो तरफ जी-खोल कर लड लें, यह रोज की चिख चिख जो अखबारो म पढते है वह तो खत्म होगी। एक ही वाक्य म उन्होन अपना फैसला कह सुनाया। फिर एक रोज, अपने पडोसी शान्तमुख श्वेतवसन, पुराने देशसेवक श्री गोकतराम जी वाली से यही प्रश्न जो पूछा कि वाली जी जग के बादल फिर गरजने लगे हैं, जो जग छिड गई तो क्या होगा ? तो वह सज्जन चलते चलते रुक गये, और अपने बाए हाथ की उगली पहले आसमान की तरफ, फिर मेरी तरफ हिलाते हुए बोले याद रखो दो चीजो पर इन्सान का कोई बस नहीं, एक जग और दूसरी मौत। जो जग होगी तो होगी जो नही होगी तो नही होगी, हम तुम कुछ नही कर सकते। इसी तरह यह प्रश्न तरह-तरह के लोगो स पूछने के बाद एक दिन मैंने अपनी मा से भी जा पूछा, जो न सुशिक्षिता हैं, न देश सेविका। वह चुपचाप मेरे मुह की ओर देखने लगी, और फिर बोली

तुम राजो को भूल गये हो ?

राजो, कौन राजो ?' मैंने हैरान होकर पूछा।

'राजो जिसने तुम्हें एक तमगा दिया था।

क्षण भर म मेरी आखो के सामने राजो धोबन का ऊचा कद और लाल दमकता हुआ चेहरा याद हो आया, और फिर वह सारी बात याद हो आई जो आज स लगभग तीस वर्ष पहले घटी थी, जब मैं छोटा-सा

लडका था। राजो धोबन ने मुझे एक चमकता हुआ सफेद तमगा दिया था जिस पर शाह जाज पचम की तस्वीर थी।

मैं चुप रहा, कुछ कहने का साहस न हुआ। मैं अपनी मा का अभिप्राय कहा तक समझा सकूगा, कह नही सकता, परन्तु उस वार्ता का कुछ हिस्सा जरूर सुनाना चाहता हू जिसमे मुझे वह तमगा मिला था।

दरअसल वह तमगा मेरे लिए नही था, वह तमगा राजो धोबन के बेटे मीरजमान का था जो पहली जग म सिपाही बनकर गया था।

उन दिनो मैं बहुत छोटा था और मेरी याद उस जग के बारे म बडी धूमिल और अस्पष्ट है। केवल इतना याद है कि मैंने कई बार गोरा फौज देखी थी जो कभी कभी हमारे घर के नजदीक जर्नेली सडक पर मे गुजरती थी, और हम मुहल्ले के लडके उस देखत न थकते थे। जब फौज चलती तो सब फौजिया के पाव एक साथ उठते जिससे तलवो की एक लम्बी सफेद रेखा खिच जाती जो हर क्षण बुझती और फिर बन जाती थी। इसी तरह उनके सफेद हाथो की रेखा बनती और बुझती थी। पर जग के खात्मे तक मैं कुछ बडा हो गया था, और मुहल्ले के जीवन को थोडा पहचानने लगा था।

हम जिस मुहल्ले मे रहते थे वहा अधिकतर कच्चे मिट्टी के मकान थे जिनम टागा हाकने वाले छाछी लोग रहा करते थे। रोज शाम को वह लोग सडक के किनारे खाटें बिछा लेते और हुक्के का दम लेत हुए आपस मे जग की बातें किया करते। उन्ही के वार्तालाप मे पहली बार मैंने मिसर ईरान, बसरा, इटली और फ्रास के नाम सुने थे। इन्ही के बहुत मे सम्बन्धी, कुछ मुहल्ले म से, कुछ मखियाडी, नूरपुर वगैरह गावो म से फौज मे गए हुए थे। और अब जग के खात्मे पर वह एक एक करके लौट रहे थे। कभी कोई जहाज हिन्दुस्तान के किसी दूरवर्ती बन्दरगाह पर लगर डालता तो हमारे मुहल्ले की चहल-पहल बढ जाती। फिर एक दिन मिठाइया बटने लगती, किसी किसी घर मे ढोलक बजती, और कुछ दिना के बाद दो-तीन जवान मूछो को ताव दिये हुए, तुर्रे हवा मे लहराते हुए मुहल्ले म घूमते हुए नजर आते, मुहल्ले भर के बुजुर्गों के पाव छूते, सम्बन्धियो से बगल-गीर होत और शाम के वक्त खाटो पर आ बैठते और अपनी अपनी जग

तमगे

अपनी सुनिक्षिता सुचारु भाजाइ से एक दिन पूछा— वहिन जी, अगर जग छिड गइ तो क्या होगा ? तो विमुखता म मुह टढा करके बोला— मैं तो कहती हू एक बार दोना तरफ जी खोल कर लड लें, यह रोज की चिख चिख जो अखबारा म पढत है वह तो खत्म होगी।' एक ही वाक्य म उन्हान अपना फैसला रह सुनाया। फिर एक रोज, अपने पडोसी शातमुख श्वतवसन पुराने देशसवक श्री दौलतराम जी वाली से यही प्रश्न जा पूछा कि वानी जी जग क वादल फिर गरजने लगे है जो जग छिट गई ता क्या होगा ? तो वह सज्जन चलत चलते रुक गय, और अपने बाए हाथ की उगली पहल आसमान की तरफ फिर मेरी तरफ हिलाते हुए वोले याद रखो दो चीजो पर इन्सान का कोई बस नही, एक जग और दूसरी मौत। जो जग होगी तो होगी जो नही होगी तो नही होगी हम-तुम कुछ नही कर सकत। इसी तरह यह प्रश्न तरह-तरह क लोगा म पूछने के बाद एक दिन मैंने अपनी मा स भी जा पूछा, जो न सुनिक्षिता हैं न देश सविका। वह चुपचाप मेरे मुह की ओर दखने लगी और फिर वोला

तुम राजो को भूल गय हो ?

राजो कौन राजो ? मैंने हैरान होकर पूछा।

राजो जिसने तुम्हे एक तमगा दिया था।

क्षण भर म मेरी आखा के सामने राजो धोबन का ऊचा कद और ...न दमकता हुआ चेहरा याद हो आया और फिर वह सारी वाता याद ... आई जो आज म लगभग तीस वर्ष पहले घटी थी, जब मैं छोटा-सा

लडका था। राजो धोबन ने मुझे एक चमकता हुआ सफेद तमगा दिया था, जिस पर शाह जार्ज पचम की तस्वीर थी।

मैं चुप रहा, कुछ कहने का साहस न हुआ। मैं अपनी मा का अभिप्राय कहा तक समझा सकूगा, कह नही सकता, परन्तु उस वार्ता का कुछ हिस्सा जरूर सुनाना चाहता हू जिसमे मुझे वह तमगा मिला था।

दरअसल वह तमगा मेरे लिए नही था वह तमगा राजो धोबन के बेटे मीरजमान का था जो पहली जग मे सिपाही बनकर गया था।

उन दिनो मैं बहुत छोटा था और मेरी याद उस जग के बारे म बडी धूमिल और अस्पष्ट है। केवल इतना याद है कि मैंने कई बार गोरा फौज देखी थी जो कभी कभी हमारे घर के नजदीक जर्नैली सडक पर से गुजरती थी, और हम मुहल्ले के लडके उसे देखते न थकते थे। जब फौज चलती तो सब फौजियो के पाव एक साथ उठते जिससे तलवो की एक लम्बी सफेद रेखा खिंच जाती, जो हर क्षण बुझती और फिर बन जाती थी। इसी तरह उनके सफेद हाथो की रेखा बनती और बुझती थी। पर जग के खात्मे तक मैं कुछ बडा हो गया था, और मुहल्ले के जीवन का थोडा पहचानने लगा था।

हम जिस मुहल्ले म रहते थे वहा अधिकतर कच्चे मिट्टी के मकान थे जिनम टागा हाकने वाले छाछी लोग रहा करते थे। रोज शाम को वह लोग सडक के किनारे खाटें बिछा लेते और हुक्के का दम लेते हुए आपस मे जग की बातें किया करते। उन्ही के वार्तालाप मे पहली बार मैंने मिसर, ईरान, बसरा, इटली और फ्रास के नाम सुने थे। इन्ही के बहुत से सम्बन्धी, कुछ मुहल्ले म से, कुछ मसियाडी, नूरपुर वगैरह गावो म से फौज मे गए हुए थे। और अब जग के खात्मे पर वह एक एक करके लौट रहे थे। कभी कोई जहाज हिन्दुस्तान के किसी दूरवर्ती बन्दरगाह पर लगर डालता तो हमारे मुहल्ले की चहल-पहल बढ जाती। फिर एक दिन मिठाइया बटने लगती, किसी किसी घर म ढोलक बजती, और कुछ दिनो के बाद दो-तीन जवान, मूछो को ताव दिये हुए, तुर्रे हवा मे लहराते हुए, मुहल्ले मे घूमते हुए नजर आते, मुहल्ले भर के बुजुर्गों के पाव छूते, सम्बन्धियो से बगलगीर होते और शाम के वक्त खाटो पर आ बैठते और अपनी अपनी जग

की कहानिया कहते। या फिर किसी किसी रात ऊचा ऊचा रोने और चिल्लान की आवाजे आने लगती, और मुहल्ले भर म खबर घूम जाती कि फला घर का आदमी जग म मारा गया है। वही औरतें जो एक घर म ढोलक बजाने जाती, वही अपने बुरके पहन, दूसरे घर म शोक मनान चली जाती।

देखत ही दखते हमारे मुहल्ले का वातावरण बदलने लगा था। बूढा फैजअली लाट कर आया, जिसने अपनी सारी पाशाक बदल ली, मगर सिर पर की नीली और सफेद पगडी नही उतारी, क्योकि वह हुजूर गवनर बहादुर को बग्घी का पियादह रह चुका था और यह उसकी वर्दी की पगडी थी। हमारा पडोसी जलालखान सूबेदार बनकर लौटा। जब वह लौटा तो लोग उसके बारे म जग से भी ज्यादा चर्चा करन लगे। मेरे दोस्त कहते थे कि जलालखान ऊटा पर रुपया के बोरे लाद कर लाया है। कोई कहता जलालखान फौजी नही डाकू है। मगर सबके सब उसस खम खात थे क्योकि हर तीसरे दिन उसे दो खच्चरो वाली एक बग्घी छावनी ले जाती थी, जिस पर वह हुजूर डिप्टी कमिश्नर साहिब बहादुर को सलाम करन जाता था। वह जग मे स बहुत अमीर होकर लौटा था। लोग कहत यह सब भरती का रुपया है जलालखान को सिपाही भरती करने के फी कस दो दो रुपय मिले थे। कोई कुछ कहता कोई कुछ। चन्द ही दिन बाद उसने हमारी गली के बाहिर एक नीले रग का लोह का फट्टा लगवा दिया जिस पर सफेद अक्षरो मे लिखा 'कूचा सरदार जलालखान'।

इसी तरह मेरे मासड फ्रास मे स लौट कर आए, और अपन साथ फौजी वर्दी मे खिचवाई हुई तीन तसवीरें भी लाए। कोई फौजी बसरे की बात कहता और कोई मिसर की। गलिया म लडके अपनी फौजें बना बना कर फ्रास और जमन की लडाइ का खेल खेलने लगे थे।

एक एक करके बहुत स फौजी लौट कर आ गय, मगर राजो धोबन का बेटा मीरजमान लौटकर नही आया। मैं अब समझ सकता हू कि क्या राजो धोबन हर रोज कई-कई घण्ट तक हमारी मा स बातें किया करती थी, क्यो दोना जलालखान को मुआ कसाइ कह कर पुकारता था और क्यो राजो धोबन जब मुझे देखती तो मेरे सिर पर बार-बार हाथ फेर कर

मुझे चिरायु होने की दुआए दिया करती थी।

राजो की उमर उस वक्त कोई चालीस वर्ष की होगी। वह एक मुसलमान बेवा थी। उसका खाविन्द करीम बख्श कोई इमारती राज मिस्त्री था जो एक दिन बनते मकान की छत पर से गिर कर मर गया था, और उसके मरने के बाद राजो ने कपडे धोने का काम शुरू कर दिया था। उसका बेटा मीरजमान कपडो की गठरिया एक गधे पर लाद कर रोज नदी पर जाया करता था। मीरजमान को मुहल्ले मे सब लोग जानते थे क्योकि वह मुहल्ले भर का सबसे शैतान लडका समझा जाता था। मुहल्ले का कोई टागा न था जिस पर वह कूद कर न चढा हो, कोई दीवार न थी जो उसने न फादी हो, कोई बुर्के वाली औरत न थी, जिसकी गालिया उसने न सुनी हो। शाम के वक्त जब हम अपने-अपने घरो को चले जाते तो वह गलियो मे गाता हुआ घूमता। उस वक्त मेरी मा, अपने दातो तले जबान काट कर, मुझे अपने कान बन्द कर लेने को कहती, क्योकि मीरजमान इश्किया टप्पे गाया करता था। जब वह 'दन्द मोतिया दे दाणे ' गाता हुआ हमारे घर के सामने से गुजरता, तो मेरे हाथ तो जरूर मेरे कानो को बन्द कर लेते, मगर मेरा दिल उसकी ताल के साथ ताल मिलाया करता। हम सब मुहल्ले के लडको को मीरजमान के गाये हुए गीत 'बालो' से लेकर 'बलिये' तक कण्ठस्थ हो गये थे। फिर न मालूम कब मीरजमान फौज मे भरती होकर हमारे मुहल्ले मे से चला गया, और किस लालच मे आकर राजो ने उसे घर से भेज दिया। पर अब मेरी मा और राजो धोबन बडी अधीर होकर उसकी बातें किया करती।

उन्ही दिनो एक छोटी-सी घटना घटी जिसने राजो को और भी अशान्त कर दिया। एक दिन रात के वक्त हमारे मुहल्ले मे शोर होने लगा, और ऊची ऊची आवाजें आने लगी। और एक आदमी जो अन्धेरे मे नजर न आता था, जलालखान के घर के सामने ललकारता और गालिया बकता हुआ, बार बार एक कुल्हाडे के साथ, उसके घर के दरवाजे को तोडने लगा। जलालखान के घर मे अधेरा था और न मालूम वह घर मे था या नही। फिर बहुत से लोग इकट्ठे हो गये और शोर धीरे धीरे खत्म हो गया और वह आदमी भी चला गया। बाद मे हमे मालूम हुआ कि वह आदमी

गुजरगान म आया था। उसका बाद जग म मारा गया था और उसका
म नाप और गुस्सा वह जनानगान पर निकालने आया था, क्योंकि
जनानगान न जबरन उसे भरती करवाया था।

अब सोच सकता हूँ कि राजो बेचारी के दिल पर उन दिनों क्या गुजरती
होगी। मुहल्ले म सब लोग उसे दिलासा देते थे। कोई कहता कि उसने
मीरजमान को बसरे म देखा था। कोई कहता फ्रांस मे जहां दरिया के
किनारे उसकी पलटन का कैम्प था। मगर राजो मा थी और मा अपने
पास सोए हुए बच्चों को देखती हुई भी अशान्त रहती है पाच साल से
बिछुड़े हुए जवान बेटे की सोच कर कैसे सब्र सन्तोष मे रह सकती थी।
जिस तरह सब यत्र का चक्र एक धुरी पर अटका रहता है राजो का
जीवन व्यवहार सारी चिंताए, सारी आशाए मीरजमान पर अटकी हुई
थीं। जो वह लोगों के घरों म काम करती तो उसी के लिए, जो वह दिन
म पाच बार नमाज पढ़ती तो भी उसी के लिए, और जो वह राह जाते
बालकों के लिए चिरायु होने की दुआ करती तो भी उसी के लिये। मीर-
जमान के नाम को कलेजे से लगाये वह जी रही थी।

फिर एक दिन राजो दौड़ी-दौड़ी हमारे घर आई और आते ही मा के
गले से लिपट गई। मीरजमान वापस लौट रहा था। उसे छावनी से चिट्ठी
आई थी जिसे वह हाथों म उठाए हुए थी। आज भी मुझे राजो का चेहरा
स्पष्ट याद है, जो उन सर्दी के दिनों म भी पसीने से तर था और राजो की
आखों म से खुशी के आसू बह रहे थे। बार-बार राजो चिट्ठी को छाती से
लगाती, उसे चूमती अपनी आखें पोछती और बार-बार मा से लिपट
जाती। शाम तक हम टागे वालों की बैठक मे से मालूम हो गया कि
मीरजमान का जहाज अदन की बन्दरगाह से चल आया है, और वह बड़े
दिनों म कराची पहुचेगा और नये साल की परेड पर उसे बहादुरी का
तमगा मिलेगा क्योंकि उसने जग म किसी अंग्रेज अफसर की जान बचाई
है। उस दिन सारी शाम हुक्के के धुए म मीरजमान की चर्चा होती रही।
राजो ने मेरे हाथ चार आने पैसे देकर भेजा कि फैजअली को देकर कहो
कि सबको कहवा पिलाए। लोग तरह तरह के अनुमान लगा रहे थे। कोई
कहता मीरजमान को ऊचा दर्जा देकर फौज मे रखेंगे, कोई कहता पेंशन

देकर बरखास्त कर देंगे । कोई कहता सात रुपये पेंशन होगी, कोई कहता ग्यारह रुपये । फैजअली बार बार अपनी दाढी पर हाथ फेर कर कहता—'इंसाफ देखा है तो अंग्रेज का । घोबन के बेटे को सरकार तमगा देगी ।'

राजो खुशी से बावली हो रही थी । हमारे घर के नजदीक एक मस्जिद थी जहा उसने एक दिन भिखमगों को खाना खिलाया । एक दिन एक हमसाए की बेटी 'अकरा' नाम की लडकी को मा के पास पकड कर ले आई और उसकी ठुड्डी पकड कर बार-बार उसका चेहरा दिखाती हुई कहने लगी—'मैं इसके साथ अपने मीरजमान का ब्याह करूगी, तुम्हे पसंद है ?' अकरा कोई तेरह चौदह बरस की लडकी होगी जो हाल ही मे, मुहल्ले के लडको के साथ खेलना छोड कर घर के पर्दों के पीछे जा छिपी थी ।

नया साल आया । अभी प्रभात भी न फूट पाई थी, और जमीन पर कोहरा और हवा मे धुंध छाई हुई थी जब छावनी मे तोपो की आवाज आने लगी । मैं कोहरे म ठिठुरता हुआ घण्टा भर मासड जी के मकान के बाहर खडा रहा ताकि म भी परेड देखने जा सकू । जब म उनके साथ गली बाहर आया, तो जलालखान के घर के सामने वही दो खच्चरो वाली बग्घी खडी थी, और उसमे जलालखान के साथ फैजअली, और अपनी जद और लाल रग की ओढनी म मुह सिर लपेट राजो घोबन भी बैठी थी । जलालखान ने हमे भी बग्घी मे बिठा लिया और हम परेड के मैदान की ओर जाने लगे ।

किन किन रास्ता पर से होते हुए हम परेड ग्राउंड के पास पहुचे मुझे याद नही । मगर दिन चढ रहा था जब छावनी के बडे मैदान के पास हमारी बग्घी खडी हुई । खचाखच लोगो की भीड मैदान के बाहर जमा हो रही थी क्योंकि हमारे शहर मे नये साल की परेड देखने सब छोटे-बडे जाया करते थे । मैदान के बाहर काटेदार तार लगी थी, और तार के पीछे एक ऊचा, पीले और नीले रग का शामियाना खडा था । जलालखान हम उस शामियाने की तरफ ले गया । शामियाने के बाहर गेट पर राजो को एक सिपाही ने रोक लिया, जिस पर राजो ने अपने आचल मे बधी हुई सरकारी चिट्ठी खोलकर उसके हाथो म दे दी ।

'तुम्हारा बेटा है मीरजमान ?'

'जी।'

'अदन के जहाज पर आया है ?'

'जी।

फिर फौजी ने फजअली से पूछा

'इसे क्यों साथ लाये हो ?'

'यह चिट्ठी जो इसे मिली है।' फैजअली ने जवाब दिया।

फौजी चुप रहा मगर एकटक राजो के चेहरे की तरफ देखता रहा

'उसकी परेड यहा पर नहीं है, पिछली बारका मे है।

'बारका मे किस तरफ ?' फजअली ने पूछा।

इसके बाद इस ग्राउन्ड के पीछे, बारका के झुरमुट म से निकलते हुए हम एक लम्बे हाल म जा पहुचे जिसकी छत पर से अनेक रग बिरग भण्डे टगे हुए थे और दीवारो पर तरह तरह के चित्र टगे हुए थे। हाल म कुर्सिया पर पहले से ही लोग बैठे थे और हाल के बीचाबीच एक चौडा रास्ता बना हुआ था जिस पर कई फौजी वर्दी पहने हुए खडे थे। जब से राजो छावनी मे पहुची थी उसकी आखें हर तरफ मीरजमान को ढूढ रही थी। कोई वर्दी वाला जवान सिपाही न था जिसे उसने घूर घूरकर न देखा हो।

फिर हाल मे एकदम सन्नाटा छा गया और लोग उठ खडे हुए। हम लोग हाल की दीवार के साथ खडे थे। केवल जलालखान हमसे अलग हाल म एक कुर्सी पर जा बैठा था। हमने देखा, सामने एक ऊचे प्लेटफार्म पर एक अंग्रेज अफसर आन खडा हुआ है। उसकी वर्दी पर जगह जगह लाल रग की टुकडिया लगी थी और कनपटियो पर के बाल सफेद हो रहे थे और उसकी छाती पर बहुत से तमगे चमक रहे थे। जहा पर वह खडा था, वहा पर एक छोटी सी मेज रखी थी जिस पर हरे रग का कपडा बिछा हुआ था और छोटे छोटे चमकते हुए तमगे रखे थे।

अंग्रेज अफसर ने कुछ कहा जो लोगो ने बडे ध्यान से सुना और उसके बाद हाल म तालिया पिटी। मगर उसके फौरन ही बाद फिर हाल म सन्नाटा छा गया और हाल म बैठे हुए लोग मुड-मुडकर हाल के पिछले दरवाजे की ओर देखने लगे। थोडी देर म हाल के पीछे से हल्की-हल्की

आवाज आने लगी, जसे कोई फश पर लोहे का टुकडा रगड रहा हो। इतने मे पिछले दरवाजे मे से दो गोरे सिपाही अन्दर दाखिल हुए और धीरे-धीरे प्लेटफाम की ओर बढन लग। उनके फौरन ही पीछे एक बडा सा पलग जिस पर सफेद चद्दर और लाल कम्बल म एक आदमी बैठा हुआ था, और जिसके नीचे ची ची करते हुए पहिये लगे थे अन्दर लाया जाने लगा। उसके पीछे एक और पलग था और उसके पीछे तीसरा, चौथा, पाचवा, इसी तरह लगभग सात पलगो की कतार, एक के पीछे दूसरा, अन्दर लाये गये। सब पर सफेद चद्दरें बिछी थी, सब पर लाल कम्बल रखे थे, और सब पर एक एक जख्मी आदमी लेटा या बैठा हुआ था। मने अपने मामड जी से पूछा

'यह कौन ह ?'

'यह सब बहादुर सिपाही है, इनको तमगे मिलेंगे।'

हाल मे बैठे हुए लोग बिल्कुल चुपचाप थे। केवल हमारे नजदीक राजो ने कुछ धीरे से कहा। मने उसकी तरफ देखा, उसका चेहरा पीला जद पड गया था, आखें जैसे घबराहट म खुल गई थी और होठ कापने लगे थे। वह फैजअली के कोट की आस्तीन को पकडे हुए थी, और उसके हाथो की उगलिया काप रही थी।

चौथे पलग पर मीरजमान बठा था। मन उसे देखते ही पहचान लिया, हालाकि उसका चेहरा काला पड गया था और सिर के बाल मूडे हुए थे। मीरजमान चुपचाप पलग पर बठा था और सीधा सामने की तरफ देख रहा था, जैसे उसे मालम ही न हो कि उसकी मा उसकी परेड देखने आई होगी। उसके दोनो हाथ उसकी गोदी मे पडे हुए थ। राजो उसे देखकर लडखडा गई, और फजअली की आस्तीन छोडकर मीरजमान के पलग की ओर जान लगी, मगर फिर किंकर्तव्यविमूढ फैजअली के मुह की तरफ देखने लगी। फैजअली ने उसे रोक दिया परेड म फौजी के पास कोई नही जा सकता। कर्नल साहिब नाराज होगे। जहा पाच साल इन्तजार किया है, थोडी देर और ठहर जाओ। और राजो चुपचाप, सिर पकडकर जमीन पर बैठ गई।

तमगे मिलने लगे। अंग्रेज अफ्सर ने एक तमगा मेज पर से उठाया

और पहन पलग के पास पहुचकर, जख्मी फौजी की छाती पर लगा दिया। फौजी का मुह और सिर पट्टियो म छिपे हुए थे। हाल मे तालिया बज उठी। फिर दूसरे फौजी की बारी आई। उसके दोना हाथ कटे हुए थे। उसकी छाती पर भी तमगा लग गया। बारी बारी एक एक फौजी की छाती पर, साहिब बहादुर के हाथ मे चमकता हुआ सफेद तमगा लगने लगा। एक एक तमगा लग चुकने के बाद हाल तालिया से गूज उठता।

फिर मीरजमान की बारी आई। साहिब बहादुर न उसकी छाती पर तमगा लगान से पहले उसके कन्धे को थपथपाया। फिर एक सफेद तमगा, जिस पर लाल रिबन बधा हुआ था उसकी छाती पर लगा दिया। मगर मीरजमान जू का तू बैठा रहा और सामने देखता रहा। उसके दोना हाथ उसकी गोद म पडे रह। साहब बहादुर थोडी देर तक उसके सामने खडे रह, फिर अपना दाया हाथ पजा मिलान के लिए उसकी तरफ बढाया। मगर मीरजमान फिर भी जू का तू बैठा रहा। थोडी देर बाद मीरजमान का दाया हाथ गोद म से उठा मगर कापता हुआ, थोडा सा ऊचा उठकर सहसा उसकी गोद मे लुढककर गिर गया। साहब बहादुर इस पर चुपचाप पाचवें पलग की ओर चले गए। राजो अब भी दोना हाथो म सिर थामे फश पर बैठी थी। उसने यह अभिनय नही देखा था।

इस घटना के लगभग महीने भर बाद की बात होगी जब राजो ने मुझे वह तमगा द दिया। उस दिन मैंने पहली बार राजो को फफक फफककर रोते देखा। उस समय राजो के घर के नजदीक ढोलक बज रही थी और हम मुहल्ले के लडके वहा जा पहुचे थे। अकरा लडकी का ब्याह एक नानबाई के बटे के साथ हो रहा था और बहुत से लाग गली म खडे बरात का इतजार कर रह थे। थोडी देर के बाद लडके राजो के घर के सामने आ खडे हुए और दरवाजे मे से भाक भाककर मीरजमान को देखने लगे, जो जू का तू खाट पर बैठा था जो न हिलता न जुलता न बोलता न हसता न रोता था। मा ने कहा था कि अब वह ठीक नही होगा। पहले तो लडके उस पर भाकते रह फिर छेडने लगे। कोई दरवाजे पर खडा हाकर उसे पुकारता कोई दीवार पर चढकर। फिर वह और भी लापरवाह हो गय। दो एक ने तो छोट छोटे ककड भी मीरजमान पर फेंके। जिस पर राजो

अपनी कोठरी से भागती हुई बाहर निकल आई। उसे देखकर लडके भाग गए। मगर उन्हें एक नया खेल मिल गया। बार-बार वह लौटकर आते, और छिप लुककर, कभी दरवाजे पर से, कभी दीवार पर स मीरज मान का नाम पुकारते, और जब राजो सामने आती तो भाग जाते। इसी दौरान मे राजो न मुझे देखा, म गली म खडा था जहा अकरा के ब्याह की देगें पक रही थी। वह मुझे अन्दर ले गई, और मुझे छाती स लगाकर जोर-जोर से रोने लगी। उसकी आखें लाल और सूजी हुई थी। थोडी देर बाद मुझे कहने लगी

'तुम तो इन लडको के साथ मीरजमान को तग नही करते हो?'

'नही! म क्यो करूगा, वह मेरा भाई है।' मने अपनी मा के सिखाये के अनुसार जवाब दे दिया।

इस पर राजो ने मुझे छाती से लगा लिया और फिर बहुत देर तक रोती रही। उसके बाद वह उठी और दीवार के साथ पडे हुए एक बक्से को खोलकर उसम स मीरजमान का तमगा निकाल लाई और मेरी हथेली पर रख दिया और बोली

यह तुम ले लो। अब यह मीरजमान को नही चाहिए। पर मुझ पर एक मेहरबानी करो, इन लडको को यहा से ले जाओ। यह तुम्हारी बात मानेंगे। कहो, ले जाओगे?'

इस सारी घटना को याद करते हुए मैं मा के चेहरे की ओर देखने लगा। मा की आखें सजल हो रही थीं। क्षण भर के लिए मुझे ऐसा जान पडा जैसे म राजो धोबन के चेहरे की तरफ देख रहा हू और गलती से जग के बारे म यह सवाल राजो धोबन स पूछ बैठा हू।

क्रिकेट मैच

क्रिकेट मैच का तीसरा दिन था। दर्शकों का उत्साह ठण्डा पड चुका था। लोग अपना सारा जोश और देश प्रेम, पहले दो दिन गला फाड-फाडकर चिल्लाने और तालियां पीटने मे खर्च कर चुके थे। और आज दर्शकों की सख्या एक तिहाई से भी कम थी, कुसियों की कतारो की कतारें खाली पडी थी। कुछ लोग बठे अखबार देख रहे थे, कई एक मुह को टोपी से ढाप सो रह थे, और अक्सर लोग मैच की ऊब से बचने के लिए सिगरट पर सिगरेट फूके जा रह थे।

पर मेरे साथ बैठी हुइ मेरे मित्र की स्त्री अब भी बराबर चहक रही थी

'अगर आज दिन भर लामन और पीटर ही बाल फेंकते रह तो हजारे आउट नही होगा। लासन तो बिल्कुल ही घटिया बाउलर है।'

वह जब से खेल शुरू हुआ था, पूरी त मयता स उसे देखे जा रही थी, और उस पर अनथक टीका टिप्पणी कर रही थी। उसके हाथ बराबर सलाइया पकडे हुए स्वेटर बुन रह थे, और आखें मैच पर लगी हुई थी। कोइ बाउड्री न थी जिस पर उसने ताली न बजाई हो, आर कोई कच न था जिस पर उसका सास न रुका हो। म बार-बार उसकी हा मे हा मिलाता, और उसक पति की ओर कनखियों से देखता।

सहसा हजारे आउट हो गया। लोगो म कुछ स्फूर्ति आई। क्रिकट भी शतरज की तरह है, जो गोटें पिटती रह और खिलाडी आउट होते रह तो खेल का मजा कायम रहता है।

अब हमारी टीम क्या खेलेगी? बाकी खिलाडियो म तो कोई भी

टिकन वाना नही। अब कौन खेलन आएगा ? साढे बारह बजने वाले है, अब तो लच के बाद ही खेल शुरू होगा, क्या जी ?'

वह एक एक वाक्य कहती और अनुमति के लिए अपने पति के चेहरे की ओर देखती।

तालिया पिटी, एक दूसरा खिलाडी मैदान म उतरा

'मोदी है, मोदी। इसे क्या भेजा है ? यह तो आखिर मे आना चाहिए था। अगर यह भी आउट हो गया तो फिर खेलेगा कौन ? क्या जी ?'

यदि कोई जीव अपने वातावरण का रग सबसे जल्दी पकडता है तो वह स्त्री ह। तीन बरस पहले यह एक घरेलू, शर्मीली स्त्री थी, अपने दो बच्चो और घर गिरस्ती मे उलझी हुई। पर अब कन्धो पर जाली की गुलाबी रग की चुन्नी, नथा होठो पर लाली कानो के कुण्डल बने हुए, सारी सज्जा क्रिकेट मच के अनुकूल बनाकर आई थी, और जबान पर भी क्रिकेट की ही चर्चा थी। मने कहा

'आप तो रमेश स भी ज्यादा क्रिकेट की जानकारी रखती ह।'

वह मुस्कराई, कहने लगी

'अगर यह कभी क्रिकेट खेलन दिल्ली आवें तो हमारा सारा शहर इनका खेल देखन भागता हुआ आएगा। सारे शहर म इ ह कोई आउट नही करा सकता।'

फिर इसके बाद जो स्वेटर बुन रही थी, उसके अधबुने बाजू को अपने पति के कन्धा से जोडकर सलाई मुह मे रखे, नि सकोच मापने लगी।

क्या जी, दो सलाइया और चढा द तो ठीक रहेगा ? कल म यह स्वेटर पूरा करके तुम्हे पहना दूगी। मेरा इकरार था न कि मैच खत्म हान से पहले इसे तैयार कर दूगी ?'

'अच्छा, अब थोडी देर मुह बन्द करके मैच दखो, पुप्पा।'

इस पर स्त्री ने अपनी बडी बडी विश्वासभरी आखा स अपन पति के चेहरे को देखा, फिर मुस्कराई और कहन लगी

'तुमने मुझे पहले क्या नही कहा ? मुझ मे यही तो बुरी आदत है। म बोलना शुरू कर दू तो बोलती ही जाती हू, चुप नही रह सकती।'

फिर मेरी तरफ देखकर खिसियाने लगी, उसका चेहरा लाल हो

उठा और वह चुप हो गई।

कई लोगों की वेश भूषा उनके चरित्र के अनुकूल नहीं उठती। उनकी वेशभूषा के नीचे असल व्यक्ति छटपटाता हुआ नजर आता रहता है। उस स्त्री पर भी उसकी वेशभूषा ठीक न बैठ पाई थी। जब भी वह हर वाक्य के बाद एक शंकित आग्रह से अपने पति के चेहरे की ओर देखती तो उसका घरेलूपन और सादगी उसकी आंखों म से झांकने लगती।

पर मेरे मित्र की सज्जा सचमुच उसके अनुकूल थी, रंग काला, दांत पान मदिरा तम्बाकू से बेतरह काले, हाथों की उंगलियों पर सिगरेट का पीलापन, आंखों म लोलुपता और चालाकी। कद का लम्बा था पर शरीर का शिथिल हो चुका था। उसकी एक हंसी, एक एक वाक्य के तीन तीन अर्थ निकलते। वह घाट का पानी पी चुका था।

'हैं जी देखिये, आपको भी ऐसी ही सफेद जर्सी बुन दूं जैसी कि उस लड़के ने पहन रखी है ?

उससे न रहा गया जब एक आदमी हमारी कतार के सामने से गुजरता हुआ अपनी कुर्सी की ओर जाने लगा। फिर मुझे देखकर मुस्कराई

'इनके पास एक भी सफेद जर्सी नहीं है।'

इतने म वह हड़बड़ा के उठ बैठी

'हाय, म भी कैसी पागल हूं। मुझे तो भूल ही गया था। मैंने तो अभी तक प्लेटें ही नहीं निकालीं।

और उठकर कुर्सियों के नीचे पड़ा हुआ टिफनकरियर निकाल लाई, और उसे खोलकर एक-एक चीज कुर्सी पर रखने लगी।

अभी लंच का वक्त हो जाएगा, और फिर नल पर इतनी भीड़ हो जाती है कि पानी ही नहीं मिलता।'

फिर उन्हीं कदमों, हाथ म एक थरमस बोतल उठाए, बाहर नल पर से पानी लेने थोड़ी चली गई। उसके चले जाने पर म अपने मित्र के साथ वाली कुर्सी पर जा बैठा

'पुष्पा भी बदल गई है' मैंने कहा 'खूब हाथ पर रखा हुआ है दाम, हर वक्त तेरे नाम की माला जपती रहती है।'

यह सुन मेरे मुंह की ओर ध्यान लगा, और थोड़ी देर बाद मुस्कराया

'हमारे घर म भी एक क्रिकट मैच चल रहा है, देखें कौन जीतता है।

'क्या मतलब ?'

वह मेरी ओर झुक कर बोला

'यह सब रग-ढग जो तुम दखत हो मछली पकडन की बेट हैं।'

अब की बार म उसके मुह की ओर देखन लगा।

'तुम समझत हो यह रग रागन लगाना उम म मिखा रहा हू ? हर दूसरे महीने यह कोई नया पाठ पढ आनी है। कभी हारमोनियम बजा रही ह, और कभी बाल कटवाए जा रह है और कभी ताश खेलना मीख रही है।'

फिर हसत हुए, अपन काले दातो को दिखात हुए, सिर टेढा करके बोला

'इस तरह यह हम पकड ले तो फिर कहना ही क्या है। अपने को तो आजादी चाहिय। खेल ल जो दाव पच खेलना चाहती हैं, मगर एक दाव म भी जानना हू।'

म उसके चेहरे की ओर देख रहा था। वह थोडी देर तक हवा म देखता हुआ सिगरेट के कश लगाता रहा, फिर मेरी ओर झुककर धीरे से बोला

'तुम्हारे कितने बच्चे है ?

'एक लडकी है, क्यो ?'

'तुम ज्यादह औलाद पसन्द नहीं करत ?'

'करता हू, मगर पैसे कहा स लाऊ ? तुम्हारे कितने बच्चे हैं ?'

'तीन। दो लडकिया, एक लडका।'

फिर अपन आप, कुछ सोचत हुए जसे अपने आप से बातें कर रहा हो बोला

'एक बच्चे का मतलब है साल भर का आराम और छुट्टी। अब महीने दो महीन मे यह मायके चली जाएगी। और इसके मायके कलकत्ते म है। हम साल भर प्यार की चिटिठया लिखत रहग।'

म अवाक, उसके मुह की ओर देखने लगा

'मगर तुम्हारे तो पहले ही तीन बच्चे है, और पाच वष भी तुम्हारी शादी को नही हुए।'

वह फिर हसन लगा

'इसके मायके अमीर है सब पल जाएगे और औरतो की गोद भरी ही रहनी चाहिए।'

फिर एक नया सिगरेट सुलगा कर टाग पर टाग रखे, आकाश को देखता हुआ बोला

'देखो तो मुझे पुष्पा पकडे, कसे पकडेगी ?'

पुष्पा पानी लेकर लौटी। खाना परोसा गया। पुष्पा ने हम दोनो को एक एक प्लेट पकडा दी और फिर आप एक तरफ बैठकर खुद खाना खाने लगी।

इतने मे रमेश के दो तीन दोस्त एक जवान स्त्री, दो पुरुष, कतारो को लाघते हुए, अपनी सीटो की ओर जाने लगे। रमेश के पास से गुजरे तो रमेश ने हसकर उन्हे सलाम किया। दोनो तरफ स हैलो, हैलो हुई। उस स्त्री की ओर लागो की नजरे घूम गई थी। उडता हुआ फूलदार साडी का पल्ला, उडते हुए बाल, काला चश्मा, खुशबू बखेरती हुइ आई और खुशबू बिखेरती हुई पिछली लाइन मे जाकर बैठ गइ। पुष्पा के चेहरे पर एक छाया-सी दौड गई और उसका चेहरा जद पडने लगा। पर मुझे देखकर वह धीरे-धीरे फिर मुस्करान लगी।

इतने म पिछली कतार मे से एक केले का छिलका उडता हुआ आया और रमेश के सिर पर जा लगा और साथ ही ऊचा ऊचा हसने की आवाज आई। रमेश ने घूमकर देखा, और हसता हुआ उठकर, पिछली कतार म जाकर बैठ गया।

रमेश अब भी वही रमेश है बदला रत्ती भर भी नही।'

पुष्पा पहले तो चुप रही, फिर हसकर बोली

इह लडकिया बहुत चाहती हैं। हमारी क्लब म भी अगर यह एक रोज नही जाए तो वह शिकायत करने लग जाती हैं। इनके पास लडकियो को मोह लेन का कोई जादू है।'

मुझे यह वाक्य सुनकर पुष्पा पर क्रोध आ गया। मुझे और तो कुछ

न सूझा, बिना सोचे मैंने कह डाला

'सुना है आप मायके जा रही हैं ?'

'मायके ? नहीं तो। आपको किसने कहा ?'

'रमन कहता था कि कुछ दिन तक शायद आप मायके चली जाएं।'

वह सहसा चुप हो गई। मुंह पर से बढ़ती वेदना की छाया उससे हटाए न हट पाई, उसके होंठ क्षण भर के लिये कांप गये, मगर उसने आंखों को तर होने से रोक लिया। धीमी सी आवाज में बोली

'शायद इन्हें बाहर दौरे पर जाना हो, इसलिये मुमकिन है मैं मायके चली जाऊं। यह बाहर चले जायेंगे तो मैं घर पर अकेली क्या करूंगी ?'

और फिर नजर नीची करके अपनी कांपती उंगलियों से स्वेटर बुनने लगी। मैच फिर शुरू हो गया था। और पीछे से हंसी मजाक की आवाजें बराबर आ रही थीं।

मुर्गी की कीमत

पैसे गिनना अहमदू की आदत बन गया था। अपनी सारी सोच हाथ में पैसे रखकर किया करता। उन्हें बार-बार मसल कर ही किसी निश्चय पर पहुंच पाता था।

आज सुबह खिल्लनमर्ग पर सर्दियों की पहली बर्फ का छींटा दिखाई दे गया। गोया गुलमर्ग में 'सीज़न' के आखिरी दिन आन पहुंचे। अहमदू का दिल घर जाने के लिए तड़प उठा। पांच महीनों से लगातार बोझ उठा रहा था। कोई सड़क या पगडण्डी बाकी न रही होगी जिस पर उसके पसीने की बूंदें न गिरी हों। लेकिन उसके बावजूद वह कुल बारह आने का सरमाया जमा कर पाया था। और इन बारह आनों में छः आने उस बोझ के थे जो अभी अभी वह टंगमर्ग के लारियों के अड्डे तक उठाकर लाया था। बारह आने—इन्हीं को वह सड़क से कुछ दूर, एक सूखे हुए नाले में खेलती हुई एक सफेद मुर्गी को देखता हुआ, मसल मसल कर गिन रहा था।

पांच महीने हुए, घर से रुखसत होते वक्त बीवी ने कहा था, "पैसे जाया नहीं करना। कम से कम इतने जरूर जमा करके ले आना कि मैं नया फिरन सिलवा सकूं। हो सके तो कपड़ा ही खरीद कर ले आना। बाहर सुना है मिल जाता है, श्रीनगर में नहीं मिलता।" यह भी झूठ नहीं कि अहमदू ने किफायत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। फिर भी वह केवल बारह ही आने जमा कर सका। "नहीं, अब वह घर ही जायगा। अब और हड्डियां चटखाने का कोई फायदा नहीं।"

खैर, घर जाने का फैसला तो वह कर ही चुका था। अब एक और

समस्या उसे पैसे मसलने पर मजबूर कर रही थी। और उसका सम्बन्ध घर से नहीं, उस मुर्गी से था जो सूखी नदी के पाट में, गोल-गोल पत्थरों पर फिसलती हुई, उसका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर रही थी।

अहमदू सोच रहा था, क्या न वह उस मुर्गी को खरीद ले! खाली हाथ घर जाना अच्छा नहीं। और कुछ नहीं तो नन्हा नूरू ही उससे खेल-खेलकर खुश होता रहेगा। कितनी प्यारी है। कभी न कभी अण्डे भी देगी। जरूरत पड़ने पर बेची भी जा सकती है, खायी भी जा सकती है।

लेकिन अगर खरीद ले तो लारी पर नहीं बैठ सकेगा। पच्चीस मील का सफर उसे पैदल करना होगा। इसी में रात हो जायेगी। पाँव छिल जायेंगे। घर लौटने की सारी उमंगें बैठ जायेंगी।

नाले के पार, दूर से एक लड़की भागती हुई चली आई और मुर्गी को उठाने लगी। यह इस मुर्गी की मालकिन थी। अहमदू ने बैठे बैठे पुकारा 'मुर्गी बेचोगी?'

लड़की ने पहले कोई जवाब नहीं दिया। हिरन की तरह पत्थरों को फलांगती हुई करीब चली आई और मुर्गी को चट से पकड़ लिया। उसे छाती से लगाकर अहमदू के सामने खड़ी हो गई

तुम खरीदोगे?'

हाँ।'

लड़की की उम्र दस बारह बरस की होगी। फिर भी वह मुर्गियाँ की खरीद फरोख्त का ढंग अच्छी तरह जानती थी। गुलमर्ग में अण्डे मुर्गी बेचना उसके माँ बाप का पेशा था। बोली—'छः आने होंगे।

'वाह जी! पाव भर के चूजे के लिए छः आने।' अहमदू ने कुछ लापरवाही दिखाते हुए जवाब दिया।

तुम्हें देता ही कौन है!' लड़की ने हँसकर कहा।

अहमदू उठ खड़ा हुआ। लोई कन्धे पर रखी और चलने लगा। लेकिन किसी आकस्मिक आवेश में फिर लोई उतार कर जमीन पर रख दी, और छः आने लड़की की हथेली में गिन दिये। लड़की ने अपनी बड़ी बड़ी आँखों से अहमदू को देखा और कहा—

घर जा रहे हो?

यह सवाल अहमदू को बडा अच्छा लगा। मुर्गी को अपने हाथो म लेते हुए उसने खुशी से कहा—

'हा।

कहा ?'

श्रीनगर।

लडकी पसे छनकाती हुई भाग गई। अहमदू सडक पर आ गया। अब लारियो के अड्डे की तरफ जाना फजूल था। पैदल ही जाना पडेगा। और जितनी जल्दी सफर शुरू कर दिया जाय उतना अच्छा।

तीन दिन की लगातार बारिश के बाद आज आसमान साफ हुआ था, और उसकी स्वच्छ नीलिमा के नीचे काश्मीर की वादी का एक एक रग निखर आया था। दूर से श्रीनगर शहर के मकान तक नजर आ रहे थे। इन्ही मे अहमदू का घर भी था, जिसम उसकी बीस वर्ष की पत्नी बीसियो प्रकार के रिश्तो, सखियो और रख रखाव मे अपनी जवानी को पीसती हुई, बडे सब्र से उसकी राह देख रही थी। अहमदू का जी चाहा कि बच्ची को फिर बुलाये और उससे बातें कर। मगर वह दूर जा चुकी थी। अपनी कुडकुडाती हुई मुर्गी के नम बदन पर हाथ फेर फेरकर अपनी कल्पना ही से बातें करता हुआ वह नगे पाव सडक पर चलने लगा।

ऊचे ऊचे सफेदे के पेडो की दो कतारो के दर्मियान श्रीनगर वाली सडक पहले कुछ दूर तक बल खाती हुई और बाद म सीधी चली जाती है। अहमदू उस पर दोपहर तक चलता गया, कधे झुके हुए, कुली की विशेष चाल जैसे कोई अदृश्य बोझ हर वक्त उठाये हुए हो। बाया हाथ कधे पर पडी लोई पर रखे हुए और दायें हाथ म मुर्गी को उठाये हुए जो चकित सी, विटक विटक कर दाए बाए देख रही थी। अपने अगूठे के नीचे अहमदू उसके दिल की धडकन महसूस कर रहा था, जिसम उसे अपने जीवन के सुखद क्षणो की याद आ जाती थी।

दोपहर होते होते अहमदू ने कोई बारह मील तय कर लिए। पहाड की ठण्डी हवा की जगह अब मैदान की गर्म हवा चलने लगी थी जो ग्रद के दरख्तो की कडवी बू म लदी हुई थी। अहमदू ने चाहा किसी गाव म पहुचकर चाँदी ले और कुछ खा ले क्योकि भूख जोरो से लग रही थी और

थोड़े कम गए थे। लेकिन दूसरी तरफ जल्दी घर पहुंचने के लिए जी मचल रहा था। वह सोच में पड़ गया। थके हुए छ आने फटे हुए कोट की जेब से निकालकर वह फिर मसलने लगा। क्या छ आने में बाकी सफर लारी में बैठकर नहीं हो सकता? आधे से करीब फासला तो वह काट ही चुका है। शायद कोई बिठा ले। मायूस होकर वह दो एक मील और निकल गया। लारियां गुजरतीं लेकिन वह हाथ दिखाने की हिम्मत न कर पाता। कौन गालियां सुने। आखिर इन पांच महीनों में कोई कम गालियां नहीं सुनी थीं। लेकिन भूख और थकावट ने अहमदू को बाध्य कर दिया कि वह रुक रुक कर बस को ठहरने का इशारा करे। अक्सर बस उसके मुंह पर धूल के बादल मारकर निकल गयीं। जो रुकीं उन्होंने उसे अपमानित किया, क्योंकि अभी तक वह उस सीमा के अन्दर दाखिल नहीं हुआ था जहां से श्रीनगर तक छ आने में सफर किया जा सकता है। जब उस सीमा में वह दाखिल हुआ तो सूरज अस्ताचल में पहुंच चुका था। एक लारी रुकी। क्लीनर ने छ आने पेशगी ले लिये, और पिछले हिस्से में अहमदू को भी ठूंस लिया। यह उसके लिए बहिश्त में पहुंच जाने के बराबर था। दो झटके लगते ही वह बैठा बैठा सो गया।

जब उसकी नींद टूटी तो लारी रुकी थी और वातावरण धूल से भरा हुआ था। इस धूल में श्रीनगर की सुपरिचित गंध थी। अहमदू ने गुदड़ी में आंखें मलते हुए लोई संभाली, मुर्गी को अपने पसीने से तर दाएं हाथ से बायें हाथ में लिया और उतरने की तैयारी करने लगा। लेकिन दूसरे मुसाफिर क्यों नहीं उतर रहे थे? अहमदू ने बाहर झांक कर देखा। लारी एक चुंगीघर के सामने खड़ी थी। दरिया के किनारे एक छोटी सी इमारत, उसके बरामदे में बड़ी-सी पुरानी मेज, उसपर बहुत से खाकी कागज और उनपर आंखें जमाये हुए दो दुबले दुबले बाबू। उन्हें देखते ही अहमदू का माथा ठनका। यहां हर चीज पर महसूल देना पड़ता है तो मुर्गी पर भी देना होगा। उसकी जेब में कच्ची कौड़ी भी न थी। सहसा उसे ध्यान हुआ कि वह एक नयी मुश्किल में फंस गया है। उसका घर यहां से करीब ही था, किसी डोंगे या नाव में दरिया पार करके वह पांच मिनट में घर पहुंच सकता था, लेकिन चुंगी वालों से नजर बचाकर निकल जाना असम्भव

है। या अल्लाह!

उसने देखा कि बाबुओं के सामने पैदल चल कर आये हुए देहातियों की कतार लगी है। किसी के हाथ में सब्जी है, किसी के पास फल या अंडे। इनके पीछे दो मुर्गियाँ बगल में दबाये एक बुढ़िया भी खड़ी है और दबे स्वर चपरासी की मिन्नत समाजत कर रही है। अहमदू को उसकी आवाज भी कुछ कुछ सुनाई दी। वह कह रही थी "मैं इन्हें अपने घर से लायी हूँ। उस सामने वाले डुंगे में जाऊँगी। वह भी मेरा अपना है, हम लोग लकड़ी ढोते हैं। आज ही रात बारामूला रवाना होंगे। खाने पीने का सामान घर से न ले जायें तो और कहाँ से ले जायें। मुझे मालूम होता कि तुम रोकोगे बेटा तो मैं इधर से आती ही क्यों। पहले तो कभी किसी ने नहीं रोका"

अहमदू का दिल बैठने लगा वह बिल्कुल बदहवास हो गया। उसे और तो कुछ न सूझा, उसने मुर्गी को अपनी लोई में छुपा लिया।

मेज के पीछे बाबू चुपचाप बैठे थे। एक पीली पगड़ी बाँधे हुए करीब पचीस वर्ष का काश्मीरी पण्डित था। उसके चेहरे से जाहिर था कि उसका हाजमा और ईमान दोनों कमजोर हैं। उसके सामने मेज पर एक संदूकचा पड़ा हुआ था जिसमें चुंगी के पैसे जमा किये जाते थे। दूसरा बाबू आँखों पर सस्ता-सा चश्मा लगाये, कान के पीछे कलम अटकाये हुए शून्य में देख रहा था। उसके सामने एक खुला हुआ रजिस्टर पड़ा हुआ था जिसमें चुंगी का हिसाब दर्ज होता था।

अहमदू ने फिर बुढ़िया की तरफ देखा। वह इस अपराजित ढंग से हाथ और सिर हिला हिलाकर बातें कर रही थी कि जैसे महसूल माफ करवा के छोड़ेगी। लेकिन उसी क्षण चपरासी ने बुढ़िया को जोर से धक्का दिया। दोनों मुर्गियाँ जोर से कुड़कुड़ायीं। बुढ़िया अब खामोश हो गई। अपने दुपट्टे के छोर से उसने, गाँठ खोलकर, कुछ पैसे निकाले और मेज पर रख दिये। फिर आस्तीन से आँखें पोंछती हुई अपनी राह चली गयी।

अहमदू का चेहरा तमतमा गया और शरीर सुन्न हो गया, अहमदू को ऐसा लगा जैसे संसार की गति एकदम रुक गई है जैसे यह लारी हमेशा से वहाँ खड़ी है और खड़ी रहेगी। उसे हर एक चीज निरुद्ध गति-हीन और भयानक नजर आने लगी। अब उसे इस मुर्गी से कोई आकर्षण

नहीं था। उसके बदन की नर्मी अब उस किसी के बदन की नर्मी की याद नहीं दिलाती थी। उसका बिटक बिटक कर देखना, नन्ह नूरू की तरह उस बिल्कुल ही भूल चुका था। और आखिर जब उसने खाकी वर्दी वाले चपरासी को अपनी तरफ आते देखा तो उसे फिर इच्छा हुई कि लपककर गाडी से उतर जाय और दरिया की राह ले। लेकिन पाव म जैसे मिक्सा जम गया था वह अपनी जगह से हिल न सका।

चपरासी अपनी छडी घुमाता हुआ आया। वर्दी के नीचे से उसकी मैली और फटी हुई कमीज जगह जगह से भाक रही थी, जूते भी फट हुए थे जिस कारण वह रुक रुक कर कदम उठाता था। लेकिन अहमदू की नजरो म यह एक साधारण इन्सान नहीं बल्कि एक विशालकाय दैत्य था। अहमदू के हाथ काप रहे थे, और इन्ह वह लोई के अन्दर डालकर बार-बार अपनी तसल्ली करता था कि कहीं मुर्गी के कुडकुडाने की सम्भावना तो नहीं।

चपरासी ने लापरवाही से अपनी छडी सीटो के नीचे पडे हुए सामान पर आजमायी। वह गरीब तबके मुसाफिरों की आदत से वाकिफ था। पूछने पर वह कभी नहीं बताते कि उनके पास कोई महसूल की चीज है। डाट डपट सुन लेंगे, मारपीट तक सह लगे, मगर धोखा करने से बाज न आयेंगे। इनसे भिक भिक तो महज रौब दिखाने के लिए करनी पडती है, हासिल कुछ भी नहीं होता। और फिर अभी अभी एक जगह से अच्छी आमदनी हो गयी थी आज ज्यादह भक मारने की जरूरत नहीं। उसने लारी का दरवाजा बन्द किया और वापस चला गया। कुछ क्षण बाद लारी चल दी।

अहमदू अवाक रह गया। इस तरह साफ बच जाने की उसे आशा न थी। जिस क्षण चपरासी ने दरवाजा बन्द किया था उसी क्षण मुर्गी एक बार कुडकुडाई थी। और अहमदू ने समझा था कि अपने सर्वनाश की घडी आ पहुची। उसके मन मे सन्तोष का सैलाब सा उमड आया।

लारी चलने लगी। लारी मे गति आते ही वातावरण फिर जीवित हो उठा। जब तक लारी खडी थी मुसाफिर इस तरह चुप थे जैसे उनके अपने शरीर ठण्डे पड गये हो, अब वह बोलने लगे। बाहर सडक पर भी

रौनक थी। दुकानों की बत्तियाँ जल रही थीं। और कहीं कहीं औरतों के गाने की आवाज भी सुनाई दे जाती थी।

अहमदू ने लोई का पल्ला ढीला किया और बायाँ हाथ खींचकर बाहर निकाला। मुर्गी उसकी हथेली में चुपचाप जैसे सोई हुई थी। आँखें बन्द, सिर हाथ के अंगूठे पर टेढ़ा होकर गिरा हुआ। बाहर की ताजा हवा में आने पर भी उसके नन्हे गुदगुदे शरीर में कोई हरकत पैदा न हुई। बर्फ के से सफेद पंख ढीले हो रहे थे। उसे देखकर भी अहमदू को यह ज्ञात नहीं हुआ कि वह कुडकुडाहट दम तोड़ते समय मुर्गी की आखिरी फरियाद थी। वह अपने हाथों से उसे कत्ल कर चुका था।

एकाएक अहमदू की आँखों से टपटप आँसू गिरने लगे और वह सिसकियाँ भरने लगा। देखते देखते उसकी सिसकियाँ तेज होती गयीं और वह बिलख बिलख कर रोने लगा।

मुसाफिरों की समझ में नहीं आया कि इस जाहिल कश्मीरी हातो को क्या हो गया है। वह क्यों रो रहा है और बड़बड़ाकर क्या कह रहा है। न ही उन्हें जानने की उत्सुकता थी। क्लीनर ने रस्सी खींचकर गाड़ी रुकवा ली, और अहमदू को धक्के देकर नीचे उतार दिया।

सड़क के इस हिस्से पर घुप अँधेरा था। लारी के चले जाने पर अहमदू स्तब्ध खड़ा रहा, फिर धीरे धीरे एक पुल की ओर जाने लगा, जो सड़क के किनारे एक नाले पर बना हुआ था। थोड़ी देर तक वहाँ खड़ा रहने के बाद उसने वह परों की सफेद गोल सी गेंद पुल के नीचे फेंक दी, और फिर घर की ओर जाने लगा। अब न उसके पास पैसे थे, और न आगे के लिए कोई निश्चय करना बाकी था।

नीली आखे

इम सडक पर आने जाने वाला का ताता केवल गहरी रात गये थमता है। कहा कही पर राह जात लोग कुतूहलवश इकटठे भी हो जात है और छोटी सी भीड बन जाती है, लेकिन घडी भर बाद यह भीड रेशमी कपडे की हल्की-सी गाठ की तरह खुल भी जाती है और आमदोरफ्त का ताता उसी तरह कायम रहता है। इस क्षणिक जनसमूह की अपने म कोई विशेषता या अभिप्राय नही, लेकिन इसकी भी एक हल्की सी ठोकर किसी को वरमा के लिए अचेन कर सकती ह कौन मानता ?

उसी सडक के किनारे, सायकाल के बढत अधेर मे एक अस्पताल के सामने दो व्यक्ति खडे रो रहे थे। एक बीस बाइस वष का लडका और दूसरी सत्तरह-अठारह वष की लडकी। ऐसा जान पडता था जैसे एक दूसरे म जुदा हो रह हो। लडकी बार बार आसू पोछती और पास ही पीपल के पेड की ओट म सिमटी जाती, लडका जमीन पर बैठा हुआ बडे आग्रह स उसे रुक जाने को कह रहा था

देख राजो दो दिन और माग खा फिर मैं ठीक हो जाऊगा, खुदा कसम मुझे छोडकर मत जा।

मैं कहा स मागू ? मुझे दना कौन ह ?'

ता यू छोडकर चली जायगी ? सरम नही आयगी तुझे ? मै मर रहा हू और तू भाग जा रही ह।

तू अस्पताल मे मजे स है। तुझे तो वहा बिस्तर भी मिलना है, मैं बाहर सडक पर क्या करू? और फिर लडकी की आखें आसुओ मे डबडबा आयी। लडका हल्के नीले रग की बीमारो की वर्दी पहने हुए था, चेहरे का

रग जद और शरीर शिथिल खडा तक न हो सकता था। जिस लडकी को वह बार बार जान से रोक रहा था, वह भी कोई सुन्दरी न थी, साधारण ग्रामीण लडकी थी। उसका भी चेहरा पीला और रो रोकर थका हुआ, कपडे मैले और कही कहा पर से फटे हुए, सिर के बाल रूखे और बिखरे हुए थे। हा, आख उसकी नीली थी, स्वच्छ आकाश की सी नीली जो किसी किसी वक्त आसू पोछने के बाद धुली हुई आकर्षक जान पडता।

पास खडे हुए लोग इस जुदाई का तमाशा देख रह थे। ज्यो ज्यो भीड बढती जाती, लडकी सहमी हुई पेड की ओट म छिपती जाती। लडका इन तमाशाइयो के सहारे लडकी को रोक लेना चाहता था। पास खडे हुए एक बाबू का हाथ जोडकर कहने लगा बाबू साहब, इसे समझाओ अपना देश होता तो दूसरी बात थी परदेश म मुझे यू छोडे जा रही है मैं इस कहा से हट गा ?

तू इस अस्पताल म क्यो नही रखता ? बाबू न पूछा।

वही पर थी बाबू, पर साहब न निकाल दिया, वहा सिरफ बीमार को रहने देत है।

अब के बाबू न लडकी को कहा—'अरी ठीक ही तो कहता है, दो दिन और माग खा जब यह तन्दुरस्त हो जाय तो काम करन लगेगा।'

यह क्या काम करेगा, घर से ले आया और यहा आकर बीमार पड गया। मैं कहा से माग कर इसे खिलाऊ ?

लडका व्याकुलता म बोल उठा— अरी म औरत के हाथ का मागा हुआ खाऊगा ? देखा साहब यह जोडा मैंने इस मिलवा कर दिया है।

'तो यह जाना कहा चाहती है ? बाबू न पूछा।

'मैं क्या जानू साहब, कहा जाना चाहती है। लडकी चुप थी।

अरी, बोलती क्यो नही कहा जायगी ?

अबकी रुधी हुई आवाज म लडकी न जवाब दिया— मुझे यहा डर लगता है। और फूट फूट कर रोने लगी।

इस लडकी का रोना एक भूखे बच्चे के रोने की तरह सरल जान पडता था लेकिन अचम्भे की बात थी कि जिस लडकी को सडक पर डर लगता है वह अपने एक मात्र आश्रय को छोडकर कहा जाना चाहती है ?

किसी साहब का अधेड उमर का बहरा भी, अपने लडके के साथ चलते चलते रुक गया था। पहले तो वार्तालाप सुनता रहा फिर अपने लडके से पूछा— क्या मगू यह रातवाली लडकी तो नही क्या? और जब मगू ने इसके उत्तर मे 'दिखा तो वही', जवाब दिया तो बहरा भीड के दायरे के अन्दर आ गया, और बीमार को सबोधित करके कहने लगा, 'अरे, यह तेरा औरत है? औरत को यू फक जाते है? जानता है, रात भर क्या बीती इस पर? देखो बाबू यह लडकी बच गई। मो हम हैरान है। दो शराबी इसके पीछे पडे गये। कभी यह रोती चिल्लाती एक गली म जा छिपती, कभी दूसरी मे। दस बार हमारी नीद टूटी होगी रात को।

इस पर भीड म से एक मनचले ने आवाज कसी अरे, तू ने ही तो शराब नही पी रखी थी रात को? खूब पहचाना तुमने?' कई लोग हसने लगे। बहरा थोडी देर हतबुद्धि भीड को देखता रहा, फिर चुपचाप भीड म से निकल कर चला गया।

जो थोडी सी सहानुभूति लडकी के प्रति बन पाई थी, वह इस एक वाक्य ने छिन्न कर दी। लडकी इस पेड के नीचे दूसरी रात न बिताना चाहती थी। व्याकुल और डरी हुई, एक पागल की तरह यहा से भाग जाना चाहती थी। भीड के लिए वार्तालाप बोझिल और नीरस हो रहा था। इस एक वाक्य मे कइयो के दिल हलके हुए। एक साहब सिगरेट का कश लगाकर चुटकी बजाते हुए बोले—'यह सब बकवास है, 'यह इसकी औरत नही, साला कही से भगा लाया है, अब तग आ गया है और फेकना चाहता है।

अरे वह तो खुद जाना चाहती है यह तो उसे रोक रहा है।' किसी ने जवाब दिया।

'तो इसे कोई और मिल गया होगा जो जाना चाहती है। साले शहर को गन्दा कर रहे है।' और सिगरेट का धुआ छोडते हुए इधर उधर देखने लगे। एक दूसरे साहब ने अपना सशय मिटाना चाहा—

'क्या री, यह तेरा खाविन्द है?

लडकी, डरी हुई, चुप खडी रही।

देखा साहब मैंने कहा नही था। जो खाविन्द होता तो बोलती नही? लोगो का कुतूहल बढने लगा। लडकी से फिर पूछा गया—

तो इसके साथ भाग कर आयी हो ? शादी नही की ?'

पीपल की ओट मे से सकुचाते हुए लडकी ने धीरे से जवाब दिया 'शादी करी है गली मे फकीर ने करवायी थी।

तमाशाइयो मे से कई खिलखिला कर हसे 'यह बाबू ठीक कहता है, यह शादी इसी तरह की है।

लोगो को फिकरबाजी का अच्छा अवसर मिल गया था लडकी पर तरह तरह के आक्षेप होने लगे, जैसे किसी पक्षी के पख नुचने लगें। बीमार जमीन पर बैठा, एक हाथ से पेट दबाता हुआ, बडी दीनता से कभी एक की तरफ कभी दूसरे की तरफ देख रहा था।

'टका जेब मे नही और आप इश्क करने निकले है!' एक ने कहा।

लडकी जवान है, इसीलिए साला इसे जाने नही देता!'

'बीमार है तो भी—' फिर कई लोग हसने लगे।

अब एक दाढीवाले सज्जन भी इस भीड मे खडे तमाशा देख रहे थे। सिर पर तुर्रेवाली सफेद पगडी, काला कोट, गहरी सिलवटोवाली सलवार मौका देखकर सीधे लडकी के पास जा पहुचे और अपने कामातुर हाथो से उसकी पीठ कधा और बालो को सहलाने लगे और उसे आश्वासन देने लगे। लडके ने देखा तो उसका दिल बैठ गया, लेकिन सिवाय व्याकुल याचना के और क्या कर सकता था। दो फौजी भी चलते चलते आन खडे हुए थे। एक ने दूसरे को कहा—चीज अच्छी है कहो सिफारिश करी ? सस्ते मे काम हो जायगा। जालिम की आखें है कि बस ।'

भीड बढने लगी। यहा हर राह जाते के कुतूहल के लिए सामग्री थी, मनोरजक, कामोत्तेजक! एक लडकी, घर छोडकर आयी हुई निराश्रय और फिर गरीब, जो कहोगे सुन लेगी जो सुनाओगे, सह लेगी। फिकरो की इस बौछार के सामने लडकी का चेहरा जर्द पडने लगा, और नीली आखें त्रस्त हो उठीं। बार बार सिर पर का आचल सभालती हुई पीपल के सहारे मनहीन-सी खडी थी। और इन्हा फिकरो म बीमार की क्षीण याचना बार-बार सुनने मे आती देख राजो मत जा। मैं जरूर अच्छा हो जाऊगा। नही हुआ तो देस लौट चलेंगे। अरी देखती नही मैं किस हालत म हू ? मेरे पास स मत जा ' और बार-बार रोने लगना।

एक हिंदुत्व प्रेमी भी इस भीड म खडे थे। आगे वढकर वडी गम्भीरता से पूछन लगे—'अरे यह लडका हिंदू है कि मुसलमान ?'

एक दूसरे हिंदू सज्जन ने जवाब दिया 'कभी हिंदू भी लडकिया भगाकर लाते हैं, जरूर मुसलमान होगा कोई।'

एक तीसरे न कहा 'इसके गले म ताजीब नही देखते ? मुसलमान ही तो है।'

लेकिन उन्ह फिर शक गुजरा, 'तो फिर यह साला मुसलमान, किसी हिंदू लडकी को तो भगाकर नही ल आया ?'

लेकिन लडकी के गले में भी एक तावीज बधा हुआ था जो फकीर द्वारा कराई गई शादी के वक्त, चिर सुहाग की कामना करते हुए उसने फकीर से लेकर पहना था। उसका काला धागा अब भी लडकी की गदन पर दीख रहा था, सो बात आगे नही वढ पाई।

धीरे धीरे कई एक बाता का पता चला।

केवल दस रोज पहले ही यह शादी हुई थी जब वह दोना मजदूरी की तलाश मे अपना गाव छोडकर यहा भाग आय थे। दोनो एक दूसरे के प्रेम मे उलझे हुए, वेसुध चले आये। तब इसकी ओर कोई आख उठाकर भी देखता तो लडका अपनी जान पर खेल जाता। पहले तो हफ्ता भर मजदूरी की तलाश मे इस नय शहर की खाक छानते रहे। जब मजदूरी मिली तो एक रात लडका पट की दद से चीख उठा, और रात भर छटपटाता रहा। राजो किंकतव्य विमूढ उसके सिरहाने वैठी हाय हाय करती रही। सुबह कही दद शान्त हुआ और लडका सो गया। पर तीसरे दिन फिर दद का दौरा हुआ, अबकी आधा दिन और आधी रात तडपते बीती। राजो काप उठी। अजनबी शहर मे एक-एक क्षण असह्य हो उठा। दूसरे दिन लडखडाते हुए दोनो इस अस्पताल के सामने पहुचे। खैरानी अस्पताल वालो ने रहम खाया और लडके को तो दाखिल कर लिया, लेकिन लडकी वाहर अकेली रह गई। सारा दिन उसकी खिडकी के पास पडी रहती और उसकी सेहत की दुआए मागती। लेकिन एक दिन बडे साहब ने देख लिया और झिडककर अस्पताल की हद से बाहर निकाल दिया। तब यह मागने निकली। अस्पताल के पास ही एक रेल का पुल है जहा आन-जान वाला

का सामान दूसरे पार ले जाने का एक पैसा मिलता है। दिन भर डरती सकुचाती मजदूरी तो करती रही, लेकिन अपनी नीली आखा को लोगो की नजरा से न बचा पाई। कल रात जब इसी पीपल के पेड़ के नीचे आकर सोने लगी तो एक नर पिशाच की परछाईं देखी। राजो पहले तो सहमी, फिर चीखती चिल्लाती उठ खडी हुई और रात भर उसके ढूढते साय से भागती फिरी

दाढीवाले सज्जन और भी दयालु हो रहे थे। उसके कधे सहलाते हुए धीरे से कहने लगे—'अगर यहा नही रहना चाहती, तो तेरा इन्तजाम मैं कर दूगा, तू अपने देश चली जा। मैं तुझे *गाडी मे बिठला आऊगा।'*

ज्यो ज्यो यह दाढी वाला आदमी लडकी के नजदीक जाकर उसे आश्वासन देता, बीमार पति का हृदय उतना ही अधिक व्याकुल हो उठता। दर्शका की फिकरेबाजी लडके को इतना विचलित न कर पाती थी, जितना कि इस अपरिचित आदमी का आश्वासन।

जब पीछे खडे हुए दो फौजी मजाक करते हुए चले गये, तब भीड कुछ चुप हुई। एक शख्स ने पूछा—

क्या वे मजदूरी कहा करता है?

'पुल पर साहब!' लडके ने जवाब दिया।

पुल पर? अरे पुल पर मजदूरी करके इसका पेट भी पालेगा और अपना भी?'

'तो साले, खिला नही सकता था तो इस मा को साथ क्यो उठा लाया था?' और फिर फिकरा की बौछार पडने लगी।

किसी को दया आई। जेब म से चार पैसे निकालकर लडके के पास फेंके और कहा— इसे अभी गाव भेज दे, नही तो तेरे हाथ से निकल जायगी समझा?'

लडके ने इकन्नी माथे पर लगाई। उसकी टूटी आशा फिर बनने लगी। याचना भरे स्वर म सब लोगा से मागने लगा—

दो दिन और गुजर हो जाने दो बाबू फिर मैं मजदूरी लायक हो जाऊगा। हम भिखमगे नहा हैं बाबू!'

सब दर्शका के सामने से तीन तीन बार घूम जाने के बाद उसके हाथ

मे केवल पाच आने पैसे इकट्ठे हो पाये। लडके न चुपचाप वह पसे राजो की मुट्ठी मे रख दिय।

ऐन इसी वक्त दूर से लाल पगडीवाला सिपाही अपनी गश्त पर आता हुआ नजर आया। लडकी ने उस देखा तो झट से पड के पीछे छिपकर खडी हो गई। बीमार ने सिपाही को आते देखा तो उसका सारा शरीर कापने लगा। घबराया हुआ बोला—बाबूजी इससे पैसे ले लो नही तो सिपाही सब छीन लेगा।'

'अरे घबराओ नही कुछ नही कहूगा।

'नही बाबूजी यह सब छीन लेगा, यह हम मिलन भी नही देता।

लडकी न फौरन आगे बढकर साथ खडे हुए दाढीवाले के हाथ मे पसे रख दिये और फिर छिप कर खडी हो गई। सिपाही की नजर जब बीमार पर पडी तो वह बढता हुआ चला आया—

उठ हरामजादे, अभी तक यही पर बैठा है।'

'हुजूर, अभी तक अस्पताल का दरवाजा बन्द नही हुआ है। माग नही रहा हू हुजूर। अभी चला जाऊगा।' बीमार न गिडगिडाकर कहा।

सिपाही न छूटते ही बीमार की कापती देह पर जोर से दो ठुडडे लगाये, और सिर पर थप्पड मारा जिस पर वह हडबडाकर हाथ जोडता हुआ, लडखडाता हुआ अस्पताल की ओर जान लगा। अस्पताल के दरवाजे पर पहुच कर एक बार फिर लडके ने चीख कर पुकारा—

'राजो, मत जाइयो दो दिन इन पैसो पर गुजर कर। मुझे ठीक हो जान दे। दोनो देस लौट चलेंगे यहा एक दिन नही रहगे। मुझ छोडकर मत जा। और फिर धीरे धीरे अपनी दुखती पसलियो पर हाथ रखे, दर्द से हाय-हाय करता हुआ, अधेरे म खो गया।

सिपाही चला गया। धीरे-धीरे भीड भी एक दु स्वप्न के दृश्य की तरह बिखर गई। लेकिन दाढीवाला इस दु स्वप्न की कुरूप छाया की तरह फिर धीरे धीरे लडकी के पास पहुचा। अब अधेरे मे देखन वाला उसे कोई न था। केवल बीमार अस्पताल की एक खिडकी के पीछे दोनो हाथो मे खिडकी के सीखचो को पकडे हुए आख फाड फाडकर बाहर झाक रहा था।

ऊब

अध्यापक के भाग्य का निर्णय करते समय विधाता ने कहा—'हे अध्यापक, तेरे निस्वार्थ सरस्वती पूजन से हम प्रसन्न हुए हैं। इस धन लालुप जगत मे जिस मूक सहनशीलता के साथ तूने दारिद्रय, अपमान और कठिनाइयो को स्वीकार किया है, वह श्रेयस्कर है। अध्यापक को ऐसा ही होना चाहिए। इस तपस्या के फलस्वरूप, हम तुझे, अपनी प्रसन्नता मे, ऊब का वरदान देते हैं। यूं तो तेरे हर कार्यक्षेत्र मे ऊब होगी, जब पढाने बैठेगा तो लडके भी ऊबेंगे और तू भी ऊबेगा, घर पर बैठेगा तो तेरा परिवार तुझसे और तू परिवार से ऊब उठेगा। परन्तु इस ऊब मे वह गहराई नहीं जो तेरे मानसिक विकास मे सहायक हो सके। हम तुझे साल मे तीन या चार बार असल, गहरी ऊब का रस पान करायेंगे ताकि तेरे मन की रही सही चचलता भी शान्त हो जाए और तू एक सच्चा भारतीय अध्यापक बन सके। और वह होगा विद्यार्थियो की परीक्षा के समय जब तुझे बिना कुछ कहे, बिना किसी से बात किये या कुछ पढे या सोचे, केवल शून्य मे ताकते हुए तीन घण्टे के लिए हर रोज निगरानी का काम करना पडेगा। ऐसा करने से तू जल्दी ही उस मानसिक जडता को पा सकेगा जो एक अध्यापक के जीवन का उद्देश्य है। तथास्तु।

मैं एक अध्यापक हूं विधाता का वरदान पाकर धन्य धन्य हुआ हूं। और आज उस दैविक रस को घूट घूट करके पी रहा हू जो विधाता ने मुझे सौंपा है।

हाल कोई साठ फुट के लगभग लम्बा है और कोई चालीस फुट चौडा। इसमे विद्यार्थियो की तरह कतारें, सनिकों की पात की तरह

नियमवद्ध रूप मे, पपर लिखन मे जुटी हुइ हैं। सब लडका के सिर एक साथ झुके हुए सबके दाए हाथ एक साथ लिखते हुए। और कही मे कोई शब्द सुनाई नही दे रहा। हाल के एक सिर पर एक ऊचा प्लेटफाम है जिस पर सुपरिन्टैण्डण्ट साहिब मेज के पीछे बैठे हुए अपन मोटे-मोटे गाला पर मोटा सा चश्मा लगाए कुछ लिख रहे ह। और हाल के दूसरे सिरे पर, बडे दरवाजे के ऐन बाहर ढीली-ढाली खाकी वर्दी पहने स्कूल का बूढा चपरासी, अपनी सस्ती, पुरानी एनक म स हवा को देखता हुआ एक स्टूल पर बैठा है। मेरे दाए हाथ की दीवार पर एक बडी गोलाकार घडी पाने नौ बजा रही है और कह रही है कि अभी से क्या थकन लगे, अभी तो पर्चा शुरू हुए केवल पन्द्रह मिनट हुए है।

जब परीक्षा शुरू हुइ थी तो इन लडको के प्रति मेरे हृदय मे तरह-तरह के उदगार उठन लगे थे। यह मेरे अपने विद्यार्थी हैं मुझ मे सालभर तक शिक्षा ग्रहण करत रहे हैं। आज इनकी परीक्षा हाने जा रही है इनका परिश्रम सफल हो, मेरा पढाया सफल हो। मेरे यहा मौजूद हाने से इनकी घबराहट कम होगी। दो एक न मुझे उठकर नमस्कार भी किया। इस मान से बढकर अध्यापक को उत्साहित करने के लिये और क्या पुरस्कार होगा? और यह मान उसे जीवन भर मिलता रहता है, लडका के नाको पर अक्सर अपरिचित हाथ बधकर खडे हो जाते हैं, सरकारी दफ्तरो म डाकखाने या कचहरी म, कोई न कोई पुराना शागिद, कुर्सी पर से उठ खडा होता है। और अध्यापक को अपनी जिन्दगी भर की थकावट भूल जाती है। पर इतने म ही एक लडके का प्रश्न का पर्चा उडकर, गजभर की दूरी पर जा गिरा। जब मैंने उसकी ओर देखा तो लडके ने मुझे उठा देने के लिय इशारा किया, जिसपर दो एक लडके हसने लगे। तब सारे उद्गार ठण्डे पड गए। लडके की कलाई पर सुनहरी घडी बधी थी। मैंने पर्चा उठा कर उसे दे दिया, और इस छोटे से अपमान से मुह फेरकर फिर अपनी रेखा पर चलने लगा।

हाल की दहलीज स लेकर जहा छब्बीस लडको की लाइन खत्म होती है वहा तक कुल अठारह कदम बनते है, और यहा मेरी निगरानी की सीमा आ जाती है। इससे आगे एक दूसरे अध्यापक का क्षेत्र शुरू होता है जिन्ह

मैं आज पहली बार देख रहा हूं। यह सज्जन अपने दोनों हाथ कुर्ते के जेबों में डाले दबी जबान में कुछ उच्चारण करते हुए अपनी रेखा पर चल रहे हैं। शायद वह गायत्री का जाप कर रहे हैं, जैसे मैं कदम गिन रहा हूं। उनका कद लम्बा और चेहरे पर संस्कृत के अध्यापकों की सी साधुता है। मेरे बायें हाथ की लाइनों में सक्सेना साहब चक्कर काट रहे हैं। यह एक कालिज में प्रोफेसर हैं, इस कारण स्कूल के अध्यापकों से बेरुखी से पेश आते हैं। सक्सेना साहब अपनी उम्र की परिधि तक नहीं पहुंचे क्योंकि वह अपनी किसी उधेड़बुन में खोए हुए हैं। एक प्रोफेसर को अपनी चिन्ताओं में कुछ मानसिक रस शायद मिलता होगा। पर मैं अपनी चिन्ताओं में रस कहां से लाऊं, छोटे छोटे दूकानदारों के छोटे छोटे कर्ज मालिक मकान का तकाजा कि तुम रात को बिजली बहुत देर तक जलाये रखते हो इनमें से पल्ला छुडाने के लिए मैं स्कूल भाग आता हूं। मेरे दायें हाथ पर किसी दूसरे स्कूल के अध्यापक है, खद्दर का कोट, खद्दर की ही रंगदार कमीज पतलून छोटा माथा, सिर पर के छोटे छोटे बालों में छिपकली की तरह लेटी हुई चुटिया, स्वयं लडकों को आम त्रण देने वाला चेहरा कि आओ मुझे छेडो। जब भी पीठ मोडते है तो दो तीन लडके अपने अपने पर्चों पर से कोहनी हटा लेते हैं ताकि पीछे बैठे हुए लडके उनके उत्तर पढ सकें। वह सज्जन पन्द्रह मिनट चलने के बाद ही कुर्सी पर जा बैठे हैं और बैठते ही उनका मुह लटक गया है। चलते रहा तो मन जागत अवस्था में रहता है बैठ जाओ तो मन सोने लगता है। इसीलिए मैंने निश्चय किया है कि मैं चलता रहूँगा और कम से कम दो घण्टे तो चलकर काटूंगा।

घडी ने नौ बजाए है। अभी अढाई घण्टे बाकी हैं।

पिछले पन्द्रह मिनटों में मैं दो बार शिक्षा मन्त्री बन चुका हूं। शिक्षा पद्धति में सैंकडों अकल्पित संशोधन कर चुका हूं। छ दिन जी तोड कर मेहनत करता हूं सातवें दिन मछलियां पकडने जाता हूं और सिगार पीता हूं। एक भाषण के बाद मैं प्लेटफार्म की सीढियों पर से उतर रहा हूं जब यही सुपरिन्टैण्डट साहब मेरे गले में फूलों के हार डालने के लिये आ रहे हैं। पर कल्पना के यह व्यंग्यपूर्ण दृश्य मुझे अशान्त और उद्विग्न कर जाते है। मुझे मन की एकाग्रता मिलती है तो केवल गिनती करने में। मेरे

कदम बदस्तूर चल रहे हैं और मन कदम गिन रहा है। पूरे अठारह कदमो मे मेरे क्षेत्र की सीमा आ पहुचती है। अगर छोटे से छोटे कदम रखके चलू तो पूरे चौबीस कदमो मे यह लम्बाई पूरी कर पाता हू। अगर बडे-बडे कदम रखू और इस चाल से चलू जिससे फौजी लोग किसी अफसर के मर जाने पर अर्थी के पीछे पीछे चलते है तो साढे पन्द्रह कदमो मे अपनी रेखा तक जा पहुचता हू।

एक बार एक उपदेशक महोदय से सुना था कि प्राणायाम मे एकाग्रता लाने का अचूक साधन, मन को किसी वस्तु पर केंद्रित करने मे है। इससे मन मे स्थिरता आ जाती है। अत मैं भी आज प्राणायाम का पहला पाठ पढ रहा हू। दीवार पर लगी सेठ माणिकलाल जी की तस्वीर को ध्यान से देख रहा हू और उसका चिंतन कर रहा हू। उनकी आयु चौवन वर्ष के लगभग होगी। चौडा ललाट, सिर पर गहरे काले रग की टोपी, बन्द गले का कोट, तस्वीर गले से नीचे पाचवें बटन पर समाप्त हो जाती है। इसके नीचे उन्होने शायद पाजामा पहना होगा। पाव मे क्या होगा, जूती या बूट? पर ध्यान वास्तविकता से भटककर कल्पना मे जाने लगता है। सेठजी के कितने बेटे बेटिया थी, उनकी आवाज गहरी थी या पतली, उनके दात असली थे या नकली, कुर्ते के नीचे मलोरवीन पहनते थे या नही, किस नम्बर का चश्मा लगाते थे। पर यह सब कल्पना है, प्राणायाम नहीं और मुझे इस कल्पना मे रुचि नही। इससे दिमाग थक जाता है और किसी भी अनुमान के सच झूठ का पता नही चलता। कदम गिनने मे एकाग्रता भी रहती है और मन भी नही थकता।

पर अब मैंने कदम गिनना छोड दिया है। अब मैं हाल की अन्य चीजें गिनने लगा हू। हाल मे दस बिजली के पखे है छ दरवाजे हैं दो बडे और चार छोटे। हाल के ऊपर दीवार के साथ एक खुली गैलरी है जिसपर पन्द्रह आलमारिया किताबो से ठसाठस भरी हुई रखी है, और एक एक आलमारी के ऊपर एक एक रेखाचित्र है किसी दार्शनिक का या लेखक का या कवि का। कुल पन्द्रह रेखाचित्र हैं। हाल मे कुल ग्यारह लडके इम्तहान दे रहे है। मेरे क्षेत्र मे कुल छब्बीस लडके हैं केवल दस के पास फौण्टेन पेन है। केवल तीन लडको के बूट अच्छी हालत मे हैं बाकी सबके घिसे पड़े।

दो लडके नगे पाव हैं। सात लडके ऐनक लगाए हुए हैं। एक लडका बाए हाथ म लिख रहा है। अब मैं काले-गोरे, दुबले मोटे, गरीब अमीर इत्यादि की अलग अलग गणना करने लग गया हू। आज पहली बार अपने विद्यार्थियो को ध्यान स देख रहा हू। दो लडके जो नगे पाव हैं, सदा क्लास म देर से पहुचत थ। शायद दोनो भाई हैं। जी चाहता है कि उनस पूछू कि उनका घर कहा पर है स्कूल से कितनी दूर है, उनका बाप जीता है या नही।

अब और क्या गिनू? यहा तक कि धोबी की तरह इन लडको के कपडे तक छाट छाट कर गिन चुका हू चार बुशशर्ट दो धोतिया, बारह पाजामे तीन कोट, सत्तरह कमीजें, दो कुर्ते। हाल के सब लडको तक मैं पहुच नही सकता वरना इनके अग प्रत्यग तक गिन डालता।

घडी पर नौ बजकर पच्चीस मिनट हुए हैं। अभी इस यातना के दो घण्टे और पाच मिनट बाकी है।

मेरे क्षेत्र स आगे निगरानी करने वाले सज्जन अब भी अपनी रेखा पर चल रहे हैं। केवल उनके आठ चक्कर बन्द हो गय है और हाथ जेबो म से निकल कर पीठ के पीछे बध गय है और चश्मा आखो पर स हटकर माथे पर चढ गया है। चलने की गति भी शिथिल पड गई है। हाल के बाहर, स्टूल पर बैठे हुए चपरासी न एक टाग उठाकर स्टूल के ऊपर रख ली है और उसी के नीचे पडा हुआ खाली जूता चपरासी को मुह बाए देख रहा है। सातवी लाइन का एक अध्यापक कुछ पूछने के लिए सुपरिटेंडेंट साहब की ओर जा रहा है। वह मुझे देख कर मुस्करा रहा है लेकिन फीकी सी, निर्जीव मुस्कान, जैसे उसे मतली आने वाली हो और उसे छिपा रहा हो।

मैं अब भी चीजें गिन रहा हू मगर किसी कोशिश म नहीं अन्य-मनस्क सा होकर। पिछले बडे दरवाजे के तीन शीशे टूट हुए है। टूट हुए शीशा का अब भी थोडा थोडा भाग वहा पर अटका हुआ है। मैंने नत्थी के तागे गिन डाले है। अब बाटने वाले पर्चे गिन रहा हू। जब पर्चा समाप्त होगा तो मेरे दिमाग मे चीजो के नम्बर ही नम्बर चक्कर काटेंगे।

पर मैं अब थक गया हू। पाव बूटो म जकडे हुए जान पडते है और

लाता म हल्का हल्का दद होन लगा है। क्यो न कुर्सी पर कुछ देर के लिये बैठ जाऊ ? अगर चपरासी की तरह एक लात ऊपर उठा कर बैठू तो एक एक करके दोना लाता को आराम मिल सकगा। पर अगर किमी लौण्डे ने यू बैठे हुए देख लिया तो मेरा तनिक सा रोब भी किरकिरा हो जायेगा। इमलिए मैं टाग पर टाग रखकर, शराफत से कुर्सी पर जा बैठा हू, जैसा तसवीर खिचवाने के लिए कोई बैठता है। इतने स ही, कम स कम कमर को आराम मिलने लगा है।

मैं फिर खडा हुआ हू और कपडो की धूल झाडकर फिर से चहल-कदमी करन लग गया हू। घडी म अब दस बजन म दस मिनट बाकी ह।

लडके अब भी पर्चा लिखने मे जुट हुए है। उनके लिये समय भागा जा रहा है। पलक मारत तीन घटे बीत जाएगे। कई लडके वक्त की समाप्ति पर भी पर्चे को कोहनी के नीचे दबाय, तज रफ्तार से लिखते चले जायेंगे मगर मेरे लिए समय की गति थम गई है, और हाल और उसकी मब चीजें चित्रवत खडी नजर आती हैं। अपनी अपनी रेखाआ पर चलत हुए अध्यापक भी इसी चित्र का हिस्सा बन चुके ह। एक एक मिनट का बीतना दूभर हो उठा है।

इस निगरानी के मुझे दो रुपय मिलेंगे। हर अध्यापक को दो रुपय मिलेंगे। केवल सुप० साहब को पाच या सात रुपये मिलेंगे। मैं चार दिन निगरानी करूगा, आठ रुपये के लिय। अगर दो रुपय की बजाए तीन रुपये भी मिलते तो शायद वक्त कट जाता। पर यह निरथक घूमना मुझसे नही सहा जाता। मन की जडता बढ रही है और पाव थक कर चूर हो गय ह। और दिन खीज उठा ह। आज पर्चा शुरू होने से पहले, एक अध्यापक न सुप० साहब को कहा था कि दो रुपय बहुत कम ह इस पर कौन अध्यापक निगरानी पर आना पसन्द करेगा, तो वह हस कर बोले, अगर दो रुपय की बजाय यूनिवर्सिटी आठ आने भी दन लगे तो भी अध्यापक लोग इस काम पर आयेंगे।' यह चपत खाते ही वह अध्यापक चुप हो गय। कई सत्य इतने अपमानजनक होते हैं कि उन्हें सुनकर इनसान का मुह बन्द हो जाता है। क्या मैं कल आऊगा या नही ? तिलमिलाए मन से कोई फसला करना ठीक नही। मैं फिर सोचूगा। पर आज जू ही पर्चा समाप्त होगा,

साइकल पर पाव रखकर सीधा घर चला जाऊगा। शरीर अब बैठना नहीं चाहता, लेटना चाहता है या किसी स लडना या किसी दीवार के साथ माथा फोडना। मगर भाग कर कैसे जा सकता हू ? पहले पर्चे गिनन होग, फिर उन्हे सुप० साहब मिलेंगे, फिर जब तक उन्हे बाध मोहर, उनकी सीवना म लाख न लग जाएगा तब तक छुट्टी कहा मिलेगी ? इतना ही नहीं बाहर बैठा चपरासी भी इस इतजार म है कि कब पचा समाप्त हो और वह मुझम बात कर पाये। यह क्या बात करना चाहता है ? हाल म आने से पहले ही क्यो न उसने बात कर ली ? शायद कुछ पैसे मागना चाहता है क्योकि महीने का आखिर है, या शायद अपने बेटे की फीस माफ करवाना चाहता है। इसम मैं क्या कर सकता हू ? उसे कह दूगा कि कल बात करूगा आज नही। खुद तो अब दोनो टागें स्टूल पर रखे बडे मजे म बैठा है।

घडी न साढे दस बजाय है। अब एक घण्टा बाकी रह गया है। यह भी धीरे धीरे कट जायेगा। 'शून्य' का दूसरा छोर नजर आने लग गया है। अभी अभी लडके नये कागज मागने लगेंगे इसके बाद पर्चे नत्थी करन के लिय तागा लेंगे। मैं इधर उधर पहुचकर कागज बाटन म जुटा रहूगा। पर अभी तक तो लडके जू के तू काम मे लगे हुए हैं

न मालूम कितनी देर तक मैं फिर चलता रहा हू और वक्त काटन के उपाय सोचता रहा हू। कितनी ही बार थक कर कुर्सी पर जा बैठा हू, और कितनी ही बार फिर उठकर चक्कर काटने लगा हू। मेरी किस्मत तब जागी जब मैं, कुर्सी पर अपना एक पाव रख, कुर्सी की पीठ के गोल गोल छेद गिन रहा था, कि स्टाप राइटिंग का ऊचा आदेश सुनाई पडा और लडके उठ उठकर अपने पर्चे देने लगे। हाल में कागजो की चरर मरर् का शब्द गूजने लगा, और मैंने आराम की ठण्डी सास ली।

हाल के बाहर चपरासी खडा राह देख रहा था। उसकी पुरानी बर्दी, मैला बूढा चेहरा, झुके हुए कन्धे और टूटी फूटी ऐनक मेरी ऊब को और भी असह्य बना रही थी। मैंने हाल के बाहर पाव रखा ही था कि वह आगे बढ आया। मुझे उसके चेहरे पर हल्की मुसकान नजर आई। यह मुस्करा क्या रहा है ?

'कहो क्या बात है, ताराचन्द ?'

'अगर आप जल्दी मे हो तो कल बात कर लू। आप कल भी आएगे न ?'

'नही, मैं सोचता हू नही आऊगा। दो रुपये की खातिर कौन यहा फजूल चक्कर काटता फिरे। मैं तो एक ही दिन म थक गया हू।'

नही साहब, आज के जमाने म जो मिल जाए वही अच्छा। छोडिये नही। और काम ही क्या है, मन चाह तो बैठे रहो, मन चाहे तो घूमत रहो।'

'तुम क्या जानो आदमी कितना ऊब उठता है। पर बूढा ताराचन्द हसन लगा। म हैरान सा होकर उसके मुह की ओर देखने लगा। यह हस क्यो रहा है ? फिर मैं समझ गया। वह भी तो मेरे साथ तीन घट तक स्टूल पर ही बैठा रहा है, वह भी तो ऊब उठा होगा। पर मेरा मन ठिठक सा गया। ताराचन्द के नजदीक जाकर, उस ध्यान से देखते हुए मैंने पूछा

'ताराचन्द कितने बरस इस स्कूल म काम किया है ?'

'साहिब, कोई पच्चीस वरस होने वाले है।'

'पच्चीस वरस से तुम इसी तरह स्टूल पर बैठते चल आ रहे हो ?'

'जी, यू ही समझ लीजिये।' ताराचन्द कहकर हसने लगा।

सदा मे यही काम है ?'

जी, प्रिंसिपल साहिब के दफ्तर के बाहर जो रोज बठता हू, आप देखत ही है।'

'कितने घण्टे रोज बैठते हो ?'

'कभी छ, कभी सात, इतना ता हो ही जाता है।

मैं काप उठा। सारा दिन स्टूल पर बैठे रहना उसका काम था। उसी काम पर अपना लडकपन जवानी, बुढापा, अपना सारा जीवन अपण कर चुका था। विना कुछ देख इसकी आखे कमजोर पड गई थी। इसी स्टूल पर बैठे बैठे इसकी पीठ झुक गई थी। केवल शून्य को ही ताकत हुए यह बूढा हो गया था।

तुम्ह क्या तलब मिलती है, ताराचन्द ?'

'साहिब तीन रुपय से शुरू किया था। तब लौंडा सा था। गाव म भाग

आया था।

भाग कर आये थे ? वह क्या ?'

वह लड़कपन के दिन थे साहब, शहर देखने के शौक से भाग आया।' ताराचन्द ने हंसते हुए कहा। उसकी घनी मूछों के पीछे, उसके टूटे दांतों की हंसी में अब भी लड़कपन की सरलता छिपी थी।

तुम्हें मुझसे क्या काम है ताराचन्द ?

'साहिब एक अर्ज है। अगले वर्ष मुझे यहां से छुट्टी मिल जायगी। आप प्रिंसिपल साहब से सिफारिश कर दें कि वह मेरे बेटे को इस काम पर लगा लें। अच्छा समझदार बच्चा है, धीरे धीरे काम सीख जाएगा।'

'तुम अपने लड़के को भी इसी काम में डालना चाहते हो ?'

'और क्या करूं साहिब ? एक जगह पर टिक तो जायेगा। धीरे धीरे तलब भी बढ़ जाएगी। अभी तो वह मानता नहीं, पर जो प्रिंसिपल साहिब ने हां कर दी तो मैं उसे मनवा लूंगा।'

मैं चुपचाप उसके मुंह की ओर ताकने लगा। मेरा मन जो गिनने का आदी बना हुआ था अनजाने में उसके चेहरे की झुर्रियां गिनने लगा। आंखों के इर्द गिर्द झुर्रियां के घेरे गालों पर झुर्रियों की लम्बी लम्बी लकीरें, माथे पर कनपटियों पर, कानों के नीचे गले पर झुर्रियों के चक्कर जो गले को दबोचे हुए हैं। पच्चीस साल की ऊब की झुर्रियां गिनना आसान न था।

मैं कह दूंगा ताराचन्द जरूर कह दूंगा।'

मैं कहता हुआ बढ़ गया। पर मुड़कर उसके चेहरे को देखने का साहस न हुआ। ताराचन्द को ऊब का वरदान कहां से मिला है ?

गंगो का जाया

गंगो की जब नौकरी छूटी तो बरसात का पहला छींटा पड़ रहा था। पिछले तीन दिन से गहरे नीले बादलों के पुंज आकाश में करवटें ले रहे थे, जिनकी छाया में गरमी से अलसाई हुई पृथ्वी अपने ठण्डे उच्छ्वास छोड़ रही थी, और शहर भर के बच्चे बूढ़े बरसात की पहली बारिश का नंगे बदन स्वागत करने के लिए उतावले हो रहे थे। यह दिन नौकरी से निकाले जाने का न था। मजदूरी की नौकरी थी बनाव पर बनी रहती, तो इसकी स्थिरता में गंगो भी बरसात के छींटे का शीतल स्पर्श ले लेती। पर हर शगुन के अपने चिह्न होते हैं। गंगो ने बादलों की पहली गर्जन में ही जैसे अपने भाग्य की आवाज सुन ली थी।

नौकरी छूटने में देर नहीं लगी। गंगो जिस इमारत पर काम करती थी, उसकी निचली मंजिल तैयार हो चुकी थी अब दूसरी मंजिल पर काम चल रहा था। नीचे मैदान में से गारे की टोकरियां उठा उठाकर छत पर ले जाना गंगो का काम था। मगर आज सुबह जब गंगो टोकरी उठाने के लिए जमीन की ओर झुकी, तो उसके हाथ जमीन तक न पहुंच पाए। जमीन पर पांव के पास पड़ी हुई टोकरी को छूना एक गहरे कुएं के पानी को छूने के समान होने लगा।

इतने में किसी ने गंगो को पुकारा 'मेरी मान जाओ गंगो अब टोकरी तुमसे न उठेगी। तुम छत पर ईंट पकड़ने के लिए आ जाओ।'

छत पर लाल ओढ़नी पहने और चार ईंटें उठाए, दूलो मजदूरन खड़ी उसे बुला रही थी।

गंगो ने न माना और फिर एक बार टोकरी उठाने का साहस किया,

मगर होठ काट कर रह गई। टोकरी तक उसका हाथ न पहुच पाया

गगो के बच्चा होने वाला था, कुछ ही दिन बाकी रह गये थे। छत पर बैठकर ईंट पकडने वाला काम आसान था। एक मजदूर नीचे मदान म खडा एक एक ईंट उठाकर छत की ओर फेंकता, और ऊपर बैठी हुई मज दूरन उसे झपटकर पकड लेती। मगर गगो का इस काम से खून सूखता था। कही झपटने म हाथ न चूक जाये, और उडती हुई ईंट पट पर आ लगे तो क्या होगा ?

ठेकेदार हर मजदूर के भाग्य का देवता होता है। जो उसकी दया बनी रहे तो मजदूर के सब मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं, पर जो देवता के तेवर बदल जाए तो अनहोनी भी हो के रहती है। गगो खडी सोच ही रही थी कि कही से, मकान की परिक्रमा लेता हुआ ठेकेदार सामने आ पहुचा। छोटा सा पतला शरीर काली टोपी, घनी घनेरी मूछो म से बीडी का धुआ छोडता हुआ, गगो को देखते ही चिल्ला उठा

'खडी देख क्या रही है ? उठाती क्यो नहीं, जो पेट निकला हुआ था, तो आई क्यो थी ?'

गगो धीरे धीरे चलती हुई ठेकेदार के सामने आ खडी हुई। ठेकेदार का डर होते हुए भी गगो के होठो पर स वह हल्की सी स्निग्ध मुस्कान ओझल न हो पाई जो महीने भर स उसके चेहरे पर खेल रही थी, जब स बच्चे ने गर्भ म ही अपने कौतुक शुरू कर दिये थे और गगो की आखें अन्तर्मुखी हो गयी थी। ठेकेदार झगडता तो भी शान्त रहती और जो उसका घरवाला बात बात पर तिनक उठता तो भी चुपचाप सुनती रहती।

'काम क्यो नही करूगी ? छत पर ईंट पकडने का काम दे दो, वह कर लूगी' गगो ने निश्चय करते हुए कहा

'तेरे बाप का मकान बन रहा है जो जी चाहा, करेगी ? चल दूर हो यहा से। आधे दिन के पैसे ले और दफा हो जा। हरामखोर आ जाते हैं '

तुम्हे क्या फर्क पडेगा, दूलो मेरा काम कर लेगी मैं उसकी जगह चली जाऊगी काम तो होना रहेगा।

'पहले पट खाली करके आओ, फिर काम मिलेगा।'

क्षण भर म ठेकेदार का रजिस्टर खुल गया और गगो क नाम पर लकीर फिर गई।

ऐन उसी वक्त बारिश का छीटा भी पडने लगा था। गगो ने समझ लिया कि जो आसमान म बादल न होते तो काम पर स भी छुट्टी न मिलती। आकाश म बादल आए नही कि ठेकेदार को काम खत्म करने की चिन्ता हुई नही। इस हालत म गभ वाली मजदूरन को कौन काम पर रखेगा। गगो चुपचाप आढना क पल्ले से अपन गभ को ढकती हुई बाहर निकल आई।

—उन दिनो दिल्ली फिर स जैस बसने लगी थी। कोई दिशा या उपदिशा एसी न थी, जहा नई आबादिया के झुरमुट न उठ रह हो। नय मकानो की लम्बी कतारें, समुद्र की लहरो की तरह फैलती हुई, अपन प्रसार म दिल्ली के कितने ही खडहर और स्मृति क काल रौदती हुई, बढ रही था। दखत ही दखते एक नई आबादी, गव से माथा ऊचा किये, समय का उपहास करती हुई खडी हो जाती। लोग कहते दिल्ली फिर स जवान हो रही है। नई आबादियो की बाढ आ गई थी। नया राष्ट्र, नय निर्माण-काय, लोगो को इस फलती राजधानी पर गव होने लगा था।

जहा कही किसी नई आबादी की योजना पनपने लगती, तो सैकडा मजदूर खिचे हुए, अपन फूस क छप्पर कधा पर उठाए, वहा जा पहुचत, और उसी की बगल मे अपनी झोपडा की बस्ती खडी कर लेत। और जब वह नई आबादी बनकर तयार हो जाती तो फिर मजदूरो की टोलिया अपन फूस के छप्पर उठाए किसी दूसरी आबादी की नीव रखने चल पडती। मगर ज्याही बरसात क बादल आकाश म मडराने लगते, तो सब काम ठप्प हो जाता, और मजदूर अपने झोपडो मे बठे आकाश को दखत हुए चौमासे के दिन काटने लगते। कई मजदूर अपन गावा को चले जात, पर अधिकतर छोटे मोटे काम की तलाश मे सडको पर घूमत रहते। काम इतना न था जितने मजदूर आ पहुचत थे। दिल्ली के हर खण्डहर की अपनी गाथा है, कहानी है पर मजदूर की फूस की झोपडी का खण्डहर क्या होगा, और कहानी क्या होगी? हसती खेलती नई आबादिया मे इन

झोपड़ों या इन झोंपड़ों में खेल गये नाटकों का स्मृति चिह्न भी नहीं मिलता।

उस रात गगो और उसका पति घीसू देर तक झोंपड़े के बाहर बैठे अपनी स्थिति को सोचते रहे।

जो छुट्टी मिल गई थी तो घर क्या चली आई, कहीं दूसरी जगह काम देखती।

देता है। इस हालत में कौन काम देगा? जहां जाओ ठेकेदार पेट देखने लगते हैं।'

झोंपड़े के अंदर उनका छः बरस का लड़का रीमा सोया पड़ा था। घीसू कई दिनों से चिन्तित था तीन आदमी खाने वाले और कमाने वाला अब केवल एक और ऊपर चौमासा और गगो की हालत! उसका मन खीज उठा। अगर और पन्द्रह-बीस रोज मजदूरी पर निकल जाते तो क्या मुश्किल था? गर्भ वाली औरतें बच्चा होने वाले दिन तक काम पर जुटी रहती हैं। घीसू गठीले बदन का नाटे कद का मजदूर था, जो किसी बात पर तिनक उठता तो घण्टा उसका मन काबू में न रहता। थोड़ी देर चिलम के कश लगाने के बाद धीरे धीरे कहने लगा, 'तुम गांव चली जाओ।'

'गांव में मेरा कौन है?'

'तू पहले से ही सब पाठ पढ़े हुए है, तू इस हालत में जाएगी, तो तुझे घर से निकाल देंगे?'

'मैं कहीं नहीं जाऊंगी। तुम्हारा भाई जमीन पर पांव नहीं रखने देगा। दो दफे तो तुमसे लड़ने मरने की नौबत आ चुकी है।'

'तो यहां क्या करेगी? मेरे काम का भी कोई ठिकाना नहीं। सुनते हैं सरकार जियादह मजदूर लगाकर तीन दिन में बाकी सड़क तैयार करा देना चाहती है।'

'मरम्मती काम तो चलता रहेगा?' गगो ने धीरे से कहा।

'मरम्मती काम से तीन जीव खा सकते हैं? एक दिन काम है चार दिन नहीं।' काफी रात गये तक यह उधेड़ बुन चलती रही।

सोमवार को गगो काम पर से बरखास्त हुई, और सनीचर तक पहुंचते पहुंचते झोंपड़ी की गिरस्ती डावांडोल हो गई। मां बाप और बेटा

तीन जीव खाने वाले, और कमान वाला केवल एक। गगो काम की तलाश मे सुबह घर स निकल जाती, और दोपहर तक बस्ती के तीन तीन चक्कर काट आती। किसी मे काम की पूछती तो या तो वह हसने लगता, या आसमान पर मडराते बादल दिखा देता। सडका पर दजना मजदूर दोपहर तक घूमत हुए नजर आने लग। फिर एक दिन जब घीसू न घर लौटकर सुना दिया कि सरकारी सडक का काम समाप्त हो चुका है, तो घीसू और गगा मजदूरा के स्तर से लुढककर आवारा लोगो के स्तर पर आ पहुचे। कभी चूल्हा जलता कभी नही। भर पट खाना किसी को न मिल पाता। छोटा बालक रीसा, जो दिन भर खेलते न थकता था, अब झोपडे के इदगिद ही मडराता रहता। पति-पत्नी रोज रात को झापडे के बाहर बैठत, झगडते, परामश करत और बात बात पर खीझ उठत।

फिर एक रात, हजार सोचने और भटकने के बाद घीसू के उद्विग्न मन न घर का खचा कम करने की तरकीब सोची। अधभरे पेट की भूख को चिलम के धुए स शात करते हुए बोला, 'रीसे को किसी काम पर लगा दें।'

'रीसा क्या करेगा, छोटा सा तो है ?'

'छोटा है ? चग भले आदमी का राशन खाता है। इस जैसे सब लडके काम करते है।'

गगो चुप रही। कमाऊ बेटा किसे अच्छा नही लगता ? मगर रीसा अभी सडक पर चलता भी था तो बाप का हाथ पकडकर। वह क्या काम करेगा ? पर घीसू कहता गया, 'इस जैसे लौडे बूट पालिश करत है, साइकिलो की दूकानो पर काम करत हैं, अखबार बचते हैं, क्या नही करत ? कल इस म गणेशी के सुपुद कर दूगा, इसे बूटपालिश करना सिखा दगा।'

गणेशी घीसू के गाव का आदमी था। इस बस्ती से एक फलाग दूर, पुल के पास छोटी सी कोठरी म रहता था। एक छोटा सा सदूकचा कन्धे पर से लटकाए गलिया के चक्कर काटता और बूटा के तलव लगाया करता था।

दूसरे दिन घीसू काम की खोज म झापडे मे स निकलते हुए गगो को कह गया

'म गणशी को रास्त म कहता जाऊगा। तू मूरज चढन तक रीस को उसके पास भेज दना।

रीसा काम पर निकला। छोटा सा पतला गरीर, चकित उत्सुक आखें वदन पर एक ही कुर्ता लटकाए हुए। गणशी के घर तक पहुचना कौन सी आसान बात थी। रास्त म प्रकृति रीस क मन को लुभान के लिए जगह जगह अपना मायाजाल फैलाए बैठी थी। किसी जगह ला लौंडे भगड रह थे उनका निपटारा करना जरूरी था रीसा घण्टाभर उन्ही के साथ घूमता रहा कहीं एक भस कीचड म फसी प डी थी, कही पर एक मदारी अपन खेल दिखा रहा था, रीसा दिन भर घूम फिरकर दोपहर के वक्त, हाथ म एक छडी घुमाता हुआ घर लौट आया।

कह देना आसान था कि रीसा काम करे, मगर रीस को काम म लगाना नय बैल को हल म जोतने के बराबर था। पर उधर भोपड म बची खचाइ रसद क्षीण होती जा रही थी। दूसरे दिन घीमू उस स्वय गणेशी के सुपुद कर आया, और पाच सात आने पैसे भी पालिश की डिबिया और ब्रुश के लिय द आया।

उस दिन तो रीसा जैसे हवा म उडता रहा। दिल्ली की नइ नई गलिया घूमन को मिली, नय नय लोग दखन को मिले। चप्प चप्पे पर आकपण था। रीसे की समभ म न आया कि बाप गुस्सा क्या हो रहा था जब उसे यहा घूमन क लिए भेजना चाहता था। दुकानें रग बिरगी चीजा स लदी हुइ और भीड इतनी कि रीस का लुब्ध मन भी चकरा गया।

रीसे की मा सडक पर आखें गाडे उसकी राह देख रही थी, जब रीसा अपन बोझल पाव खाचता हुआ घर पहुचा। अपन छ सालो के न हे स जीवन म वह इतना कभी नही चल पाया था, जितना कि वह आज एक दिन म। मगर मा को मिलत ही वह उस दिन भर की देखी दिखाई सुनान लगा। और जब बाप काम पर से लौटा तो रीसा अपना ब्रुश और पालिश की डिबिया उठाकर भागता हुआ उसके पास जा पहुचा बप्पु तेरा जूता पालिश कर दू?'

जिस सुनकर, घीमू के हर वक्त तने हुए चेहरे पर भी हल्की सी मुस्कान दौड गइ।

'मेरा नही, किसी बाबू का करना जो पैस भी देगा।'

और गगो और उसका पति अपने कमाऊ बट की दिनचर्या सुनत हुए, कुछ देर के लिए अपनी चिन्ताए भूल गये ।

दूसरा दिन आया। घीसू और रीसा अपन अपन काम पर निकले। दो रोटिया एक चिथडे मे लिपटी हुई घीसू की बगल के नीचे, और एक रोटी रीसे की बगल के नीचे। दोनो सडक पर इकटठ उतरे और फिर अपनी अपनी दिशा म जाने के लिए अलग हो गय।

पर आज रीसा जब सडक की तलाई पार करके पुल के पास पहुचा तो गणेशी वहा पर नही था।

थोडी दर तक मुह म उगली दबाए वह पुल पर आत जात लोगा को दखता रहा, फिर गणेशी की तलाश म आगे निकल गया। शहर की गलिया एक के बाद दूसरी, अपना जटिल इन्द्रजाल फैलाए, जैम रीसे की इन्तजार म ही बटी थी। एक के बाद दूसरी गली मे वह बढने लगा, मगर किसी में भी उसे कल का परिचित रूप नजर नहीं आया, न ही कहीं गणेशी की आवाज सुनाइ दी। थोडी देर तक घूमने के बाद रीसा एक गली के मोड पर बैठ गया, अपनी पालिश की डिबिया और ब्रुश सामने रख लिय और अपन पहले ग्राहक की इन्तजार करने लगा। गणेशी की तरह उसन मुह टढा करके पालिश श श श ! का शब्द पूरी चिल्लाहट के साथ पुकारा। पहले तो अपनी आवाज ही सुनकर स्तब्ध हो रहा, फिर नि सकोच बार-बार पुकारने लगा। पाच-सात मतबा जोर जोर से चिल्लाने पर एक बाबू जो सामने एक दकान की भीड म सौदा खरीदने की इन्तजार मे खडा था, रीसे के पास चला आया।

'पालिश करने का क्या लोग ?'

'जो खुसी हो दे दना।' रीसे ने गणेशी के वाक्य को दोहरा दिया। बाबू न बूट उतार दिय, और दूकान की भीड मे फिर जाकर खडा हो गया।

रीसे ने अपनी डिबिया खोली। गणेशी के वाक्य तो वह दोहरा सकता था, मगर उसकी तरह हाथ कसे चलाता ? बूट पर पालिश क्या लगी जितनी उसकी टागो, हाथा और मुह को लगी। एक जूते पर पालिश लगाने

म रीसे की आधी डिबिया खच हो गई। अभी बूट के तनव पर पालिश लगाने की सोच ही रहा था कि बाबू सामन आन खडा हुआ। रीस के हाथ अनजाने म ठिठक गय। बाबू न बूटो की हालात देखी, आव देखा न ताव जार से रीस के मुह पर थप्पड दे मारा, जिसस रीस का मुह घूम गया। उसकी समझ म न आया कि बात क्या हुई है। गणेशी का तो किसी बाबू न थप्पड नहीं मारा था।

हरामजाद, काले बूटो पर लाल पालिश !' और गुस्स म गालिया देन लगा।

पास खडे लोगा न यह अभिनय देखा, कुछ हस, कुछ एक ने बाबू को समझाया, दो एक न रीस को गालिया दी, और उसके बाद बाबू गालिया देता हुआ, बूट पहनकर चला गया। रीसा, हैरान और परेशान कभी एक के मुह की तरफ, कभी दूसरे के मुह की तरफ देखता रहा, और फिर वहा से उठकर, धीरे धीरे गली के दूसरे कोने पर जाकर खडा हो गया। हर राह जात बाबू से उसे डर लगने लगा। गणेशी की तरह 'पालिश श न !' चिल्लाने की उसकी हिम्मत न हुई। रीस को मा की याद आई और उलट पाव वापस हो लिया। मगर गलिया का कोई छोर किनारा न था एक गली के अन्त तक पहुचता तो चार गलिया और सामने आ जाती। अन गिनत गलिया मे घूमन के बाद वह घबराकर रोने लगा, मगर वहा कौन उसके आसू पाछने वाला था। एक गली के बाद दूसरी गली लाघता हुआ, कभी गणेशी की तलाश मे, कभी मा की तलाश मे वह दोपहर तक घूमता रहा। बार बार रोता और बार बार स्तब्ध और भयभीत चुप हो जाता। फिर शाम हुई और थोडी देर बाद गलिया मे अधेरा छाने लगा। एक गली के नाके पर खडा सिसकिया ले रहा था, कि उस जसे ही लडका का टोला यहा-कहा से इकटठा होकर उसके पास आ पहुचा। एक छोटे म लडके ने अपनी फटी हुई टोपी सिर पर खिसकात हुए कहा, 'अबे साले रोता क्यो है ?'

दूसरे न उसका बाजू पकडा और रीसे को खीचत हुए एक बराडे क नीचे ले गया। तीसरे ने उस धक्का दिया ! चौथे ने उसक कधे पर हाथ रखे हुए, उस बराडे क एक कोन मे बिठा दिया। फिर उस छोट स लडके

ने अपने कुर्ते की जेब म से थोडी सी मूगफली निकालकर रीस की झोली मे डाल दी ।

ले साल, कभी कोई रोता भी है ? हमारे साथ घूमाकर, हम भी बूट पालिश करत है ।

आधी रात गय, न हा रीसा, जीवन की एक पूरी मजिल एक दिन मे लाघकर, अपन सिर के नीचे ब्रुश और पालिश की डिबिया और एक छोटा सा चिथडा रखे, उसी बराडे की छत के नीचे अपनी यात्रा के नये साथिया के साथ, भाग्य की गोद मे सोया पडा था ।

—उधर झोपडे के अन्दर लेटे लेट कई घटे की विफल खोज के बाद, घीसू गगो को आश्वासन दे रहा था 'मुझे कौन काम सिखान आया था ? सभी गलियो म ही सीखते हैं । मरेगा नही, घीसू का बटा है, कभी न कभी तुझे मिलने आ जाएगा ।

घीसू का उद्विग्न मन जहा बेटे के यू चले जाने पर व्याकुल था, वहा इस दारुण सत्य को भी न भूल सकता था कि अब झापडे मे दो आदमी होगे और बरसात कटने तक, और गगी की गोद मे नया जीव आ जाने तक, झापडा शायद सलामत खडा रह सकेगा ।

गगो झापडे की बालिश्त भर ऊची छत को ताकती हुई चुपचाप लेटी रही । उसी वक्त गगो के पेट मे उसके दूसरे बच्चे न करवट ली । जैसे ससार का नवागन्तुक ससार का द्वार खटखटाने लगा हो । और गगा न सोचा—यह क्या जन्म लेन के लिए इतना बेचैन हो रहा है ? गगो का हाथ कभी पट के चपल बच्चे को सहलाता, कभी आखो से आसू पोछने लगता ।

आकाश पर बरसात के बादला से खेलती हुई चाद की किरणा के नीचे नये मकाना की बस्ती झिलमिला रही थी । दिल्ली फिर बस रही थी, और उसका प्रसार दिल्ली के बढत गौरव को चार चाद लगा रहा था ।

भाग्य रेखा

कनाट सरकस के बाग म जहा नइ दिल्ली की सब सडकें मिलती है, जहा शाम को रसिक और दोपहर को बरोजगार आ बैठत है, तीन आदमी, खडी धूप स बचने के लिए, छाह मे बैठे, बीडिया सुलगाए बातें कर रह है। और उनस जरा हटकर दाइ ओर, एक आदमी खाकी से कपडे पहने अपने जूता का सिरहाना बनाए, घास पर लेटा हुआ मुतवातर खास रहा है। पहली बार जब वह खासा तो मुझे बुरा लगा। चालीस पतालीस वष का कुरूप सा आदमी, सफेद छोटे छोट बाल, काला छाइया भरा चेहरा, लम्बे लम्बे दात और कधे आगे को झुके हुए, खासता जाता और पास ही घास पर थूकता जाता। मुझसे न रहा गया। मैंने कहा

'सुना है विलायत म सरकार ने जगह-जगह पीकदान लगा रखे हैं, ताकि लोगो को घास पौधा पर न थूकना पडे।'

उसने मेरी ओर निगाह उठाई पल भर घूरा फिर बोला

'तो साहब, वहा लोगो को ऐसी खासी भी न आती होगी।' फिर खासा और मुस्काता हुआ बोला

'बडी नामुराद बीमारी है, इसम आदमी घुलता रहता है, मरता नहीं।

मैंने सुनी अनसुनी करके, जेब म स अखबार निकाला और देखने लगा। पर कुछ देर बाद कनखियो स देखा, तो वह मुझपर टिकटिकी बाधे मुस्करा रहा था। मैंने अखबार छोड दी

क्या धधा करते हो ?'

'जब धधा करत थे तो खासी भी यू तग न किया करती थी।

'क्या करते थे ?'

उस आदमी ने अपन दोना हाथो की हथेलिया मेरे सामने खोल दी। मैंने देखा, उसके दाए हाथ के बीच की तीन उगलिया कटी थी। वह बोला 'मशीन से कट गइ। अब मैं नई उगलिया कहा से लाऊ। जहा जाओ मालिक पूरी दम उगलिया मागता है। कहकर हसने लगा।

'पहले कहा काम करते थे ?'

'कालका वकशाप मे।

हम दोनो फिर चुप हो गये। उसकी राम कहानी सुनने को मेरा जी नही चाहता था, बहुत सी राम कहानिया सुन चुका था। थोडी देर तक वह मेरी तरफ देखता रहा, फिर छाती पर हाथ रखे लेट गया। मैं भी लेटकर अखबार देखने लगा, मगर थका हुआ था, इसलिए मैं जल्दी ही सो गया।

जब मेरी नीद टूटी तो मेरे नजदीक धीमा धीमा वार्तालाप चल रहा था

'यहा पर भी तिकोन बनती है, जहा आयु की रेखा और दिल की रेखा मिलती है। देखा ? तुम्ह वही से धन मिलन वाला है।'

मैंन आखें खोली। वही दमे का रोगी घास पर बैठा, उगलिया कटे हाथ की हथेली एक ज्योतिषी के सामन फैलाए अपनी किस्मत पूछ रहा था।

लाग लपेट वाली वात नही करो, जो हाथ मे लिखा है, वही पढो।'

'इधर अगूठे के नीचे भी तिकोन बनती है। तेरा माथा बहुत साफ है, धन जरूर मिलेगा।'

'कब ?'

'जल्दी ही।'

देखते ही देखते उसने ज्योतिषी के गाल पर एक थप्पड दे मारा। ज्योतिषी तिलमिला गया।

कब धन मिलेगा ? धन मिलेगा। तीन साल से भाई के टुकडो पर पडा हू। कहता है, धन मिलेगा।'

ज्योतिषी अपना पोथी पत्रा उठाकर जाने लगा, मगर यजमान ने कलाई खीचकर बिठा लिया

'मीठी मीठी बातें तो बता दी, अब जो लिखा है वह बता, मैं कुछ नही कहूगा ।'

'ज्योतिषी कोई बीस बाइस वष का युवक था। काला चेहरा, सफेद कुर्ता और पाजामा जो जगह-जगह से सिला हुआ था। बातचीत के ढग से बगाली जान पडता था। पहले तो घबराया फिर हथेली पर यजमान का हाथ लेकर रेखाओ की मूकभाषा पढता रहा फिर धीरे से बोला

'तेरे भाग्य रेखा नही है।'

यजमान सुनकर हस पडा

'ऐसा कह न साले छिपाता क्या है ? भाग्य रेखा कहा होती है ?'

'इधर, यहा से उस उगली तक जाती है।'

'भाग्य रेखा नही है तो धन कहा से मिलेगा ?

'धन जरूर मिलेगा। तेरी नही तो तेरी घरवाली की रेखा अच्छी होगी। उसका भाग्य तुझे मिलेगा। ऐसे भी होता है।

'ठीक है, उसी के भाग्य पर तो अब तक जी रहा हू। वही तो चार बच्चे छोडकर अपनी राह चली गई है।

ज्योतिषी चुप हो गया। दोनो एक-दूसरे की मुह की ओर देखने लगे।

फिर यजमान ने अपना हाथ खीच लिया और ज्योतिषी को बोला

'तू अपना हाथ दिखा।

ज्योतिषी सकुचाया, मगर उससे छुटकारा पाने का कोई साधन न देखकर अपनी हथेली उसके सामने फैला दी

'यह तेरी भाग्य रेखा है ?

'हा।'

'तेरा भाग्य तो बहुत अच्छा है। कितने बगले हैं तेरे ?

ज्योतिषी ने अपनी हथेली बन्द कर ली और फिर पोथी पत्रा सहेजने लगा

बैठ जा इधर। कब से यह धधा करने लगा है ?

ज्योतिषी चुप। दमे के रोगी ने पूछा

'कहा से आया है ?'

पूर्वी बगाल से।

'शरणार्थी है ?'

'हा।

'पहले भी यही धधा था ?'

ज्योतिषी फिर चुप। तनाव कुछ ढीला पडने लगा। यजमान धीरे से बोला

'हमसे क्या मिलेगा ? जा किसी मोटर वाले का हाथ देख।'

ज्योतिषी ने सिर हिलाया

'वह कहा दिखाते हैं। जो दो पैसे मिलते हैं तुम्ही जैसो से।

सूर्य सामने पेड के पीछे ढल गया था। इतने मे पाच-सात चपरासी सामने से आए और पेड के नीचे बैठ गये

'जा उनका हाथ देख। उनकी जेबें खाली न होगी।'

मगर ज्योतिषी सहमा सा बैठा रहा। यकायक बाग की आबादी बढने लगी। नीले कुर्ते पाजामे पहने, लोगो की कई टोलिया एक एक करके आइ, और पास के फुटपाथ पर बैठने लगी।

फिर एक नीली सी लारी झपटती हुई आई, और बाग के ऐन सामने रुक गई। उसमे से पन्द्रह बीस लटठधारी पुलिस वाले उतरे और सडक के पार एक कतार मे खडे हो गये। बाग की हवा मे तनाव आने लगा। राह-गीर पुलिस को देखकर रुकने लगे। पडो के तले भी कुछ मजदूर आ जुटे।

लोग किस लिए जमा हो रहे हैं ?' ज्योतिषी ने यजमान से पूछा।

तुम नही जानते ? आज मई दिवस है, मजदूरो का दिन है।'

फिर यजमान गम्भीर हो गया

'आज के दिन मजदूरो पर गोली चली थी।'

मजदूरो की तादाद बढती ही गई। और मजदूरो के साथ खोंचे वाले, मलाई बरफ मूगफली, चाट चबेना वाले भी आन पहुचे, और घूम-घूम कर सौदा बचने लगे।

इतने मे शहर की ओर से शोर सुनाई दिया। बाग से लोग दौड-दौड कर फुटपाथ पर जा खडे हुए। सडक के पार सिपाही लाठिया सभाले तन कर खडे हो गये।

जुलूस आ रहा था। नारे गूज रहे थे। हवा मे तनाव बढ रहा था।

फुटपाथ पर खडे लोग भी नारे लगाने लग ।

पुलिस की एक और लारी आ लगी, और लाठीधारी सिपाही कूद कूदकर उतरे।

आज लाठी चलेगी ।' यजमान ने कहा । पर किसी न कोई उत्तर न दिया।

सडक के दोना ओर भीड जम गइ । सवारियो का आना-जाना रुक गया। शहर वाली सडक पर से एक जुलूस बाग की तरफ बढता हुआ नजर आया। फुटपाथ वाले भी उसम जा जाकर मिलन लग ' इतन म दो और जुलस अलग अलग दिशा स बाग की तरफ आन लगे । भीड जोश म आन लगी । मजदूर बाग के सामन आठ-आठ की लाइन बनाकर खडे होन लग। नार आसमान तक गूजन लग, और लोगा की तादाद हजारा तक जा लगी । सारे शहर की धडकन मानो इसी भीड म पूजीभूत हो गई हो। कई जुलूस मिलकर एक हो गए । मजदूरा ने झडे उठाए और आगे बढन लगे । पुलिस वालो न लाठिया उठा ली और साथ साथ जान लगे।

फिर वह भीमाकार जुलूस धीरे धीर आगे बढन लगा । कनाट सरकस की मालदार, धुली पुती दीवारा के सामने वह अनोखा लग रहा था जैस नीले आकाश म सहसा अधियारे बादल करवटें लेन लगें । धीर धीर चलता हुआ जुलूस उस ओर घूम गया जिस तरफ स पुलिस की लारिया आई थी। ज्योतिषी अपनी उत्सुकता म बच के ऊपर आ खडा हुआ था। दमे का रोगी, अब भी अपनी जगह पर जा बैठा, एकटक जलूस देख रहा था।

दूर होकर नारा की गूज मन्दतर पडन लगी। दशको की भीड बिखर गई। जो लोग जुलूस के सग नही गय व अपन घरा की ओर रवाना हुए। बाग पर धीर धीर दुपहर जैसी ही निस्तब्धता छान लगी। इतन म एक आदमी, जो बाग के आर पार तेजी स भागता हुआ जुलूस की आर जा रहा था, सामन से गुजरा। दुबला सा आदमी, मैली गजी और जाधिया पहन हुए। यजमान न उस रोक लिया

क्या दोस्त जरा इधर ता आओ।

क्या है ?'

'यह जलूस कहा जाएगा ?'

'पता नही। सुनते है, अजमेरी गट, दिल्ली दरवाजा होता हुआ नाल क्लि जाएगा, वहा जलसा होगा।'

'वहा तक पहुचेगा भी ? यह लट्ठधारी जो साथ जा रहे हैं, जा राम्ते मे गडबड हो गई तो ?'

'अरे गडबड तो होती ही रहती है, तो जुलूस रुकेगा थोडे ही।' कहता हुआ वह आग बढ गया।

दमे का रोगी जलूस के ओझल हो जान तक, टिकटिकी बाधे उसे देखता रहा। फिर ज्योतिषी के कधे को थपथपाता हुआ, उसकी आखो मे आखें डालकर मुसकराने लगा। ज्योतिषी फिर कुछ सकुचाया, घबराया। यजमान बोला

देखो, साल ?'

'हा, देखा है।'

अब भी यजमान की आखें जुलूस की दिशा मे अटकी हुई थी। फिर मुस्कराते हुए, अपनी उगलिया—कटी हथली ज्योतिषी के सामने खोल दी

फिर देख हथेली, साले तू कैसे कहता है कि भाग्य रेखा कमजोर है ?'

और फिर बाए हाथ स छाती को थामे जोर जोर से खासन लगा।

घर-बेघर

थानेदार करमचद, थाने के मज पर दोना टागें फलाए अपन मित्र के सामने अपना दु खडा रो रह थे।

कमम है जो यहा फूटी कौडी भी कभी ऊपर से मिली हो। जब स मैं इस इलाके म आया हू, बस मिट्टी छान रहा हू। दूसर इलाका के थानेदार है, जिस चीज पर हाथ रखते हैं सोना हो जाती है एक एक के घर छ छ कालीन हैं। यहा गुजारा चलाने के लिए भी पैस नही।'

उनका मित्र खिडकी के पास खडा सिगरट का कश लगाता हुआ, बाहर दख रहा था। खिडकी के सामन थोडी दूरी पर एक पक्की इटा की दीवार, थान की सीमा आक रही थी। उसके पार इलाके की चौडी पक्की थी और सडक के पार 'थानदार का इलाका शुरू हो जाता था। एक दूर तक फैली हुई ढलान पर अनगिनत झापडे कच्चे मकान, छोटी छोटी कोठिया, खोखे, एक दूसर म सट हुए खडे थ। शाम के बढत अधरे म उडती धूल के साथ साथ अब धुआ और अधकार भी उस बस्ती को ढकन लगे थे और इस आच्छादन म कही-कही जीण हीन झापडो के सामन चूल्ह जल रहे थ जो इस बस्ती म जीवन का आभास द रहे थे।

'कौन लोग हैं जो यहा पर रहत हैं ? शरणार्थी तो नहीं ? मित्र ने पूछा। 'मैं क्या जानू कौन हैं।' थानदार ने बडबडाते हुए जवाब दिया। जिन्ह उनकी मा नहा पहचानती, उन्ह मैं क्या जानूगा। चमार मजदूर छाबडी वाले भिखमग, आवारा तरह तरह क लोग यहा रहत हैं। किसी का नाम लेकर जाओ तो दिन भर भटकते रहो, उसका ठिकाना नही मिलता। यहा एक को दूसरा नहीं जानता।

इतने म वाहर वराडे मे बोभल वूटा की टप टप की आवाज आई और थोडी देर मे एक हवलदार ने अन्दर आकर, एडी टकराकर सलाम किया।

'क्या है ?' थानेदार ने बिना आखें ऊपर उठाये पूछा।

'जनाब, एक केस है।'

'कैसा केस है ?'

'वही औरत है जनाब, जो सरकारी कोठडी म रहती है।'

क्या फिर किसी का बच्चा उठा लाई है ? दो कोडे लगाओ और दफा कर दो। मेरे पास वक्त नही है।'

हवालदार फिर भी चुपचाप खडा रहा। थानेदार का मित्र कुतूहलवश खिडकी छोडकर मज के पास आ गया।

'क्या है ' जाते क्या नही ?'

'जनाब, उसके साथ एक आदमी भी पकडा हुआ है।'

'वह कौन है ?'

'कोई आवारा है जनाब, अधेड उमर का आदमी है ?'

थानदार गुस्मे मे बहुत गुराए मगर नाचार हो गए। नया मुजरिम था, बस सुनना जरूरी हो गया। हवालदार को मुजरिम पश करने का आदेश दिया और स्वय, मेज पर से टागें हटाकर, पास पडी हुई तुर्रेदार पगडी को सिर पर रखा और तोद सभालत हुए कोट के बटन ब द करने लगे।

'यह औरत कौन है ? मित्र न कौतूहल से पूछा।

इस औरत ने नाक मे दम कर रखा है। हर तीसर रोज इसकी शिकायत आती है। न मैं इस जेल म ठूस सकता हू न खुला छोड सकता हू। इस नामुराद को बच्चे उठानेकी इल्लत है। जहा कही इस कोई बच्चा अकेला घूमता हुआ मिल जाए, उसे उठा लाती है। बस, इसे यही जनून है। बच्चे को अपन पास रखती है, उसे खिलाती है, पिलाती है, हर तरह दुलारती है। मगर कोई बच्चा वापस लेन के लिए आए तो उसे काटन को दौडती है उसके कान भी नोच लेती है।

'वह कौन ?'

'मैं क्या जानू कौन है। यहा पास ही फूस की चटाइया बनती हैं वहा पर काम करती है। मुझस पहल थानदार ने इस पर रहम करके इस एक सरकारी कोठडी रहने को दी थी, बस यह वर्षों स उसी म टिकी हुई है। मैंन हजार कोशिश की है कि यह किसी तरह यहा से चली जाए, और हम इन तिकायतो स चैन मिले, मगर यह मुक्खड लोग किसी चीज को चिपट तो जाक की तरह चिपट जात हैं।

फिर टप टप बूटा की आवाज आई और हवालदार दाखिल हुआ। उसके पीछे एक औरत धीरे धीर अन्दर चली आई। तीस पतीस वष की औरत होगी। पिचका हुआ शरीर, मले कपडे, नग पाव बाहर क थापडा की तरह रगहीन, रूपहीन मेज के सामन आकर चुपचाप खडी हो गइ। उसके पीछे पीछे एक अधेड उमर का आदमी एक फटी हुई नीली कमीज बदन पर लटकाय, हाथ जोडे हुए, चारो ओर देखता हुआ दाखिल हुआ जैस पहली बार थान म लाया गया हो। बाहर की धूप और बारिश न उसकी त्वचा को खाल बना दिया था। बाल कुछ काले, कुछ सफेद धूल और मिट्टी म एक म हो रहे थ। उसन झुककर थानेदार साहब को उनक मित्र को, पास खडे हुए हवालदार को, तीनो को नमस्कार किया और हाथ बाधे औरत के पीछे खडा हो गया।

थानदार न औरत को देखत ही कडककर कहा

तू बाज आएगी या नहीं? ठीक रास्त पर आ जा, वरना हवालात म बन्द कर दूगा।'

औरत जैस आई थी, वैस ही मज के सामन खडी रही। थानेदार की कडक न उसक चेहरे पर कोई भय या आवश पैदा न किया। केवल अधेड उमर का आदमी आवाज सुनत ही सिर स पाव तक काप उठा।

यह आदमी कौन है?' थानदार न हवलदार को सम्बोधित करक पूछा।

जनाब दस बारह रोज हुए इसी का लडका खो गया था जो इस औरत की कोठडी म स मिला था। जनाब क हुक्म के मुताबिक मैंने बच्चा इस बेचारे को दिलवा दिया।

'फिर अब क्या बात है?

'जनाब, बच्चा अब भी इसी औरत के पास ही रहता है इसने वापस नहा लिया।

क्या मतलब ? यह बच्चे को ले नही गया, या उसने फिर उठा लिया है ?'

'कुछ शक्की मामला है, जनाब। दिन भर यह आदमी कोठरी के चक्कर काटता रहता है, और रात के वक्त भी मैंने इसे कई बार कोठरी के पास खडे देखा है। न मालूम कौन आदमी है, आज शाम हमने इसे हिरासत म ले लिया है।

थानेदार न भवें चढाकर उस आदमी की ओर देखा, और क्रुद्ध, तीखे स्वर म बोल

'इधर आगे आओ। क्या नाम है तुम्हारा ?'

उस आदमी की टागें फिर एक बार लडखडा गइ। दोनो हाथ बाधे मेज के सामने आ गया।

'परसू, माई बाप, मेरा नाम परसराम है।'

'यह औरत तेरी क्या लगती है ?'

परसू चुप रहा। इसकी दोना आखें धरती पर गड गइ।

'बोलता क्यो नही क्या लगती है ?'

परसू अब भी चुप रहा।

'क्या काम करते हो ?

परसू ने पहली बार आखें ऊपर को उठाइ, फिर एक बार नमस्कार किया, और बोला

'हुजूर, छाबडी लगाता हू।'

'रहते कहा पर हो ?'

हुजूर, मेरा कोई ठिकाना नहा।'

तो बदजात, यहा क्या करने आते हो ?' फिर हवालदार की ओर घूमकर बोल—

'इसका लडका किधर है ?'

'जनाब, बाहर कास्टेबल के पास है।'

थानेदार न एक बार परसू को सिर से पाव तक देखा, जैसे एक ही

नजर म उसका जीवन परिचय ले लेना चाहते हो। आवाज को धीमा करके बोले

तुझे जब लडका दिलवा दिया गया था तो उस ले क्या नहा गया ? क्या इस औरत स नजर लड गई है ?'

परमू की नजरें फिर धरती पर गड गइ। न हू, न हा। थानदार न अपन मित्र की ओर देखा, दोना मित्र मुस्काए।

तेरे बाल पक गय, आखो मे हया शरम नही है ? फिर हवालदार को सम्बोधित करके बोले।

क्या कोई और आदमी भी इसकी कोठडी के पास आत ह ?

'जी नही सिफ इसी आदमी को कुछ दिन स देखा है। इमीलिए इसे पकड लिया है जनाब।'

थानदार दिन भर के थके हुए थे। बहुत मगज पच्ची न करना चाहत थे। एक वाक्य मे फसला सुना दिया

ले जाओ इन्हें यहा से। इस औरत को कुछ दिन हवालात म रखो और कोठडी को ताला लगा दो। और इस बूढे का इसके लडके के साथ आबादी से बाहर निकाल आओ, जो फिर यह कभी इस तरफ आए तो मुझ खबर दो। जाओ ले जाओ इन्ह

हवालदार मुजरिमो को बाहर ले जान लगा। औरत चुपचाप दरवाजे की ओर जान लगी, मगर परमू ज्यो का त्यो हाथ बाधे खडा रहा। हवाल दार जब उसे धकेलकर बाहर की ओर धकेलन लगा तो वह कापती आवाज म बोल उठा

हुजूर, आपका दरबार बना रह एक अरज है, हुजूर, मैं अपन आप यहा स चला जाउगा, मानिए।'

थानदार न परमू की ओर देखा, मगर परमू रुका नहीं, दुस्साहस करके अपनी अरज कह गया

आप कहेंगे तो मैं शहर भी छोड जाउगा हुजूर। मगर इस कोठरी म रहन दिया जाए इस नहीं निकालें हुजूर। दोना मित्र फिर एक-दूसरे की देखकर मुस्काए हस—

तुझे इससे क्या मतलब ? गैर मनाआ ना तुझे छोड दिया है।

'हुजूर, यह कोठरी इनके पास रही तो यह लौण्डा भी पल जाएगा हुजूर।

'लौण्डा ?' कौन लौण्डा ?' थानदार ने हैरान होकर पूछा। फिर अपने मित्र को दबी आवाज म बोले।

'ह, इसमे कुछ है। यह कमीने कोई बात सीधे मुह नहीं बताएगे। हर बात म हेर फेर करते हैं। साफ साफ बता क्या बात है, वरना कोडो मे पिटवा दूगा।'

थानदार के मित्र की रुचि केस म बढने लगी थी। उन्होने थानदार साहब की कोहनी पर हाथ रखते हुए गुस्सा रोकने को कहा, और बूढे परसू को ढारस देते हुए बोले

'तुम्हे थानेदार साहब कुछ नहा कहगे बेशक आराम से बात करो। मगर सच-सच सारी बात बता दो।'

परसू के कापते हाथ थम गये। उसने कृतज्ञता से मित्र महोदय की ओर देखा और बोला

'माई बाप, यही अरज है, मैं चला जाऊगा, लौण्डा इसके पास टिका रहे।'

'तुम अपना लडका इस औरत के सुपुर्द करना चाहते हो ?'

हुजूर, यह मेरा लडका नही है।' परसू ने धीरे से कहा।

'तेरा नही है ? तो तू अब तक हमे बनाता रहा है ? किसका लडका है यह ?' थानेदार ने मेज पर झुकते हुए पूछा।

'मैं नहीं जानता, माई बाप, मुझे नही मालूम यह किसका लडका है।'

'तेरा नही तो तू इसे अपने साथ क्या लिये फिरता है ?'

'मैं नहीं लिये फिरता हुजूर।

कहता कहता परसू फिर चुप हो गया। थानेदार ने हवालदार को कहा

'लडके को अन्दर ले आओ।'

बच्चे को अन्दर लाया गया। कोई पाच साल का काला दुबला शरीर, उतनी ही चकित आखें, मुह म उगली दबाए कभी एक को देखता हुआ कभी दूसरे को, परसू की कमीज का छोर पकडकर खडा हो गया।

'अब बोनो क्या बात है' डरो नहीं मित्र महोदय ने धीरे से परमू को कहा।

'मैं छाबडी लगाता हू हुजूर। मण्डी मे से सबजी लेकर रोजगार करता हू।

एक रोज सवरे मण्डी म स निकल रहा था जब मैंने मुडकर देखा तो, हुजूर, यह लौण्डा, कुत्ते के पिल्ले की तरह मेरे पीछे चला आ रहा था। मण्डी म बहुत भीड थी मैंने सोचा किसी का बच्चा भटक गया ह। मगर यह मुझे देखकर भी वापस नहीं लौटा। मैंने अपनी छाबडी ठिकान पर रखी और इसका हाथ पकड कर इसे मण्डी म वापस ले गया। बहुत पूछा, हुजूर, मगर किसी न कोई पता नहीं दिया। अब मैं इसे कहा ले जाऊ! जहा पर मैं बैठू साथ म यह बैठ जाए, जो छाबडी उठाकर जाने लगू तो साथ साथ चलने लगे। अब हुजूर इनसान का बच्चा है इसे कोई मार के कैसे भगा दे। उस रोज शाम पडने तक यह मेरे साथ घूमता रहा। इसे कहा छोडता! मैं इसे अपने साथ ही ले गया। तब स यह मेरे साथ है, हुजूर।'

'तुम रहते कहा पर हो?

हुजूर, मेरा कोई ठिकाना नहीं, मैं कही भी नहीं रहता। मेरा एक वतनी इधर खोखे मे रहता है, सरदी बरसात हो तो उसके पास पड रहता हू नही तो इधर पुल के नीचे जहा और लोग सोते ह मैं भी रात काट लेता हू।

'यह लडका कब मे तुम्हारे पास है?'

'गरमी के दिनो म यह मेरे पास आया था हुजूर, अब जाडे के दिन हैं।'

'फिर क्या हुआ?'

'फिर एक रोज यह लडका खो गया, हुजूर। तो मैंने सोचा जिस किसी का है उसे मिल गया होगा। दो तीन रोज तो मैंने ध्यान नहीं दिया। मगर फिर दिल नहीं माना। यू ही कैसे भूल जाता हुजूर! भगवान ने जिसे मेरे पास भेजा, उसे बिना ढूढे पूछे कैसे छोड दूगा! मैं इसे खोजने लगा। उस रात हुजूर बारिश हो रही थी, मैं सिर पर टोकरी रखे पुल की तरफ जा रहा था जब एक कोठरी मे यह लौण्डा मुझे नजर आ गया। हुजूर

इसी की गोद म बैठा भात खा रहा था। मैने सोचा इमकी मा इसे मिल गई है।

'जी मे आया लौट जाऊ, फिर मैंने कहा इस लौण्डे के सिर पर हाथ तो फेर जाऊ, मा को वोल दू कि यह इतने दिन मेरे पास रहा है। मैं कोठडी के पास खडा हो गया। मगर यह औरत मुझे देखते ही मुझ पर लपक पडी, और मेरे बाल नोच डाले। मुझे शक हो गया कि यह लौण्डा इसका नही होगा। तब मैंने '

थानेदार साहब मे यह लम्बी राम कहानी सुनने के लिए धैय न था। मेज पर हाथ मार कर बोले

'बस बस सुन लिया, अब यह कथा बन्द करो।'

'हुजूर, यही अरज है इसकी कोठडी इससे मत छीनो। यह लौण्डा यही पर पल जाएगा इस औरत की गोद भी भरी रहगी।'

परन्तु थानेदार के मित्र मे सरल कौतूहल अधिक था, अविश्वास और घणा कम। मुस्काते हुए बूढे की आखो मे आखें मिला कर बोले

'हा, लौण्डा मिल जान पर तुम भी यही टिक गय ? तुम क्या रोज इधर चक्कर काटते थे ?

परसू ने धीरे धीरे कहा

'मुझ से भूल हो गई हुजूर माफ कर दो, फिर ऐसा नही होगा। मैं बूढा हो चला हू हुजूर, पुल के नीचे कभी सोने देते हैं कभी निकाल देते हैं। मेरा कोई ठिकाना नही मालिक यह औरत बच्चे को इतना दुलारती थी, मैंने सोचा, इन दोनो के साथ मेरे भी दिन कट जाएगे। मगर मैं चला जाऊगा मालिक ',

दोनो मित्रो ने फिर एक दूसरे की तरफ देखा और हसे। थानेदार ने कहा—

'जिस औरत को सरकारी कोठरी रहने को मिल जाए, उसे दस दूल्ह बियाहने को भी मिल जाते है।'

फिर दोनो मित्रो म दबी आवाज म परामर्श हुआ। थानेदार अपने आदेश मे कोई तबदीली न करना चाहते थे, मित्र बार-बार उन्हे समझा थे। हेरआखिर थानेदार साहब न हवालदार को कहा

'यह बच्चा इस औरत के हवाले कर दो। यह बेशक अभी कोठडी म टिकी रह। इस बूढे को इलाके से बाहर छोड आओ। अगर यह फिर कभी इस तरफ आए तो इसे मेरे सामन पेश करो।

हवालदार न फिर एडी से एडी टकराई और इन फटेहाल मुर्जारमा को बाहर ले गया। थानेदार ने फिर पगडी उतारी, और तोंद पर से बटन खोलते हुए बोले

'यही कुछ यहा रोज हाता रहता है। पागला के इलाके में मैं भी पागल हो जाऊगा। सुबह स शाम तक इनकी रिपोर्टें लिखो, इन्हें बत लगाओ, इनके किस्से सुनो। सब नसीब का खेल है किसी को क्या दोष दू।

थानेदार का मित्र चुप हो गया। इन लोगा के साथ कैसा बर्ताव होना चाहिए, यह वही लाग निश्चित कर सकते हैं जि हे इनके साथ वास्ता पडता हो। शायद थानेदारी चलाने के लिए, सब उसूला म से अविश्वास का उसूल ही सबसे जरूरी है। वह धीरे से कुर्सी पर से उठा और फिर खिडकी के पास जाकर खडा हो गया। बढते अधेरे के साथ साथ, अधकार और धुए के पुज के पुज जसे आकाश पर स इस बस्ती पर उतर रहे थे। सरदी बढ रही थी और कही कही पर, किसी झापडे के सामन जलते चूल्हे के इद गिद उस भापडे की गिरस्ती कोई काला नगा बालक, कोई सिर *सुजलाती हुई काली औरत कोई पाव के बल बैठा बीडी क कश लगाता* हुआ बूढा नजर आने लगा। सामने सडक पर से हवालदार बूढा परसू, बच्चा और औरत चुपचाप जाते हुए नाम के बढते अधेरे म खो गये।

बडी देर तक फिर दोना मित्रो म गप शप चलती रही। खिडकी क बाहर एक कान्स्टेबल, क धे पर बन्दूक रखे पहरा देन लगा। जब दोना मित्र थाने का दफ्तर छोड कर घर जाने लगे तो बरा॰ म फिर टप टप बूटा की आवाज आई। हवालदार दाखिल हुआ और चुपचाप एक मोटी सिक्के की चाबी थानेदार के सामने मेज पर रख दी।

'यह क्या ह ?' थानेदार ने पूछा।

'जनाब, कोठरी का ताला लगा दिया है।

क्या क्या हुआ ? वह औरत कहा है ?

'जनाब वह चली गई है।

'चली गई है ?'

'जनाब, मैं उन तीना को यहा से ले गया। कोठरी मे से मैंने बूढे ने टोकरी और जूत निकाल कर बाहर फेंक दिये। बूढा उ ह उठाकर ढलान के नीचे उतर गया। मैं उसके पीछे पीछे गया ताकि आबादी से बाहर उसे छोड आऊ। मगर जनाब, वह अभी ढलान पर से उतरा ही था कि वह बच्चा भागता हुआ उसके पास जा पहुचा। मैंन उसे रोकने की कोशिश की मगर वह रुका नही। इतन म वह औरत भी बच्चे के पीछे ढलान उतर आइ और उनके साथ साथ जाने लगी। मैंन सोचा, शायद बच्चा लेने आई ह, बच्चे को उठा कर लौट जाएगी। मगर वह भी नही लौटी, मेरे देखते ही देखत तीना एक साथ धीरे धीरे चलते बडी सडक पर दूर तक निकल गय। जनाब का हुक्म था जो अपने आप कोठरी छोड कर जाए तो जान दो। मैंन वापस आकर कोठरी को ताला लगा दिया।

थानेदार ने चाबी को उठाकर जेब म डाल लिया। और फिर अपनी हिम्मत की दुहाई देने लगे।

खून के छींटे

माघ महीने के बादल आए तो चिरवाछित सुधा का रूप लेकर, पर बरस विष बन कर। लहलहाते खेतो पर ओले बरसा गये। दस दिन तक नितान्त वर्षा का आक्रमण रहा, ओले पडे, आधी आई, फिर ओले पडे। अपने भाग्य की दुहाई देते हुए किसान हाथों मे दरातिया उठाए खेतो पर लपके और जो कट सका काट कर ले आए, पर तब तक खेत रौंद जा चुके थे और धरती एक विपाक्त देह की तरह काली पड चुकी थी। जगह जगह पर असरय गेहू के सिट्टे, कीच मे लिपटे और मिट्टी के ढेलो के नीचे दब पडे रह गये, जैसे रणभूमि मे तरुण सैनिक दब पडे हो। सहसा चारो ओर गावो और कस्बो पर एक भयानक चुप्पी छा गई और इस मौन, विषाद ग्रस्त चुप्पी के नीचे किसानो का जीवन एक और करवट लेने लगा। घर उजडने लगे, कौडियो के दाम जमीनें बिकने लगी खेतो की मेडो मे नई रेखाए खीची जाने लगीं। शहर को जाने वाली लम्बी सडक पर, जहा कभी गेहू से लदी बलगाडियो का ताता लग जाता था अब घरो से भागे हुए किसान नजर आने लगे। कोई किसान, घर परिवार को विधाता पर छोड शहर म जाकर रिक्शा हाकने लगा कोई दूसरा फौज म जा भरती हुआ, कोई आकाश के पराक्रम के सामने कापता हुआ बरागी बन गया। जगह जगह पर मेडो के पास घरो की गुप्त चारदीवारी के पीछे, सडको पर, नित नये हृदय विदारक नाटक खेले जाने लगे। हा, यदि कुछ नही बदला तो धरती की काया नही बदली उस पर असम्य मेडो का जाल, अपनी कठोर रेखाओ म धरती को छोटी छोटी तिकोनो म बाटता हुआ ज्यो का त्यो बिछा था, जसे बुन्निया धरती मा की पसलिया

और पिंजर निकले हुए हो।

दोपहर का वक्त था। शहर को जाने वाली लम्बी सपाट सड़क पर दो व्यक्ति चुपचाप चले जा रहे थे। सड़क के दोनों तरफ, दूर दूर तक पानी के ताल और छप्पड़ अब भी खड़े थे। शहर अभी दूर था, और ढलती दोपहर की गोधूलि म अभी केवल शहर के मंदिरों के कलश, और कारखानों के ऊँचे धुएं कश, धूमिल से नजर आ रहे थे। दोनों किसान थे मटमैले गाढे के कपडे पहने हुए, और दोनों थके हुए जान पड़ते थे। पिछला आदमी देह का चौडा और बलिष्ठ था, उमर मे तीस बत्तीस बरस का होगा, मोटे मोटे हाथ मोटी गरदन और मोटी गठीली टागें। अगला उमर म कम लडका सा था, देह छरहरी और दुबल। उसका चेहरा ढलती धूप की तरह पीला हो रहा था, जैसे बीमार हो। लडके के दोनों हाथ एक रस्सी से बंधे थे, जिसका दूसरा छोर पिछले आदमी के हाथ म था। किसी किसी समय, चलते हुए अगला आदमी रुक जाता, जिस पर पिछला आदमी लातों और घूसों से उसे पीटने लगता, और रस्सी से खींचता हुआ उसे आगे चलाने लगता। एक किसान दूसरे किसान को हवाले किए जा रहा था।

एक पेड के नीचे फिर दोनों रुक गए। लडका पाँव के बल जमीन पर बैठ गया। जाट ने पहले तो उसे उठाने की कोशिश की पर जब वह न उठा तो अपने कन्धे पर से लटकते हुए खाकी रंग के थैले म से एक मैला गाढे का रूमाल निकाला और लडके के मुह पर बाधने लगा। लडका छटपटाया मगर दोनों हाथ बधे होने के कारण, और ऊपर से पड़ते चाटों के डर मे, सहम कर जमीन पर बैठा रहा।

'उठ हरामजादे, रात पड जायगी तो शहर पहुँचेंगे ? देख, शहर अभी कितना दूर है। उठ जा नहीं तो जान से मार डालूगा।

लडका बधे मुह और बाधे हाथों को ऊपर उठाए, अपनी दो आखों से जाट के चेहरे की ओर देखता रहा। जाट फिर रस्सी को झकझोरता हुआ उसे लातों और घूसों के बल उठाने लगा।

अनायास ही शहर की ओर से एक साइकल आती हुई नजर आई, जिसे देखकर जाट के हाथ थम गये। साइकल पर कोई अधेड उमर का बाबू काली टोपी पहने और आखों पर चश्मा लगाए, धीरे धीरे चला

आ रहा था और दूर ही से यह कौतुक देख रहा था। दोनों के पास आकर रुक गया।

'क्या बात है? इसे पीटते क्यों हो?'

जाट पहले तो चुप रहा और बाबू को सिर से पाँव तक देखता रहा, फिर अपने फूले हुए साँस और गुस्से को दबाने की चेष्टा करते हुए बोला

'यह पागल है बाबू, मैं तीन दिन से इसके साथ भटक रहा हूँ। मेरा पल्ला छूटने में नहीं आता।'

'तो इसे कहाँ ले जा रहे हो?'

'इसे पागलखाने में दाखिल कराना है साहब, सुबह का गाँव से चला हुआ हूँ। अब दोपहर ढलने को आई, अभी तक शहर नहीं पहुँच पाए। रास्ते में ही चार बज जायेंगे और दफ्तर बन्द हो जायगा। तीन दिन से यही कुछ हो रहा है।'

जमीन पर बैठा हुआ लड़का, अपनी बीमारों की सी आकृति और सूनी आँखों से, कभी बाबू के चेहरे की ओर, और कभी शून्य में देख रहा था।

'कौन है यह?' बाबू ने पूछा।

जाट की आवाज आर्द्र हो उठी। धीरे धीरे बोला

'अभी हाल ही में पागल हो गया है बाबू। अभी नीम दीवाना है, पूरा पागल भी नहीं हुआ। इसका बाप मर गया है। जब वह मरा उस वक्त इसे ताप चढ़ा हुआ था और उसी हालत में यह मसान पर चला गया। हमने बहुत समझाया पर यह नहीं माना। जब मसान पर से लौट कर आया तो इसकी आँखें चढ़ गईं। तब से ऊल-जलूल बकने लगा है।'

बाबू साईकिल थामे खड़ा था। थोड़ी देर तक चुपचाप लड़के को देखता रहा। फिर अपने गहरे अनुभव और किताबी अध्ययन के बल पर बोला

'तो इसे पीटते क्यों हो? जितना ज्यादा पीटोगे, उतना ही ज्यादा यह पागल हो जायगा। इसके हाथ और मुँह भी तुमने बाँध रखे हैं।'

'पीटूँ नहीं तो दो कदम भी नहीं चले। यह सब पहले का [illegible] गया है।'

'इसका और कोई चारा नहीं है? पागलखाने में क्या [illegible]

कराते हो ? इसका इलाज करवाओ ठीक हो जाएगा।'

'नहीं बाबूजी, इसका कौन इलाज करेगा। इसकी बूढी दादी है, मगर वह अन्धी है उसके आसरे पर उसे कैसे छोड दें। वह इसे आने कब देती थी नम्बरदार ने समझाया बुझाया तब कहीं मानी। बाबू, उर्दू जानते हो ? खत पढ सकते हो ?'

हा, क्या है ?'

जाट ने अपने कुर्ते के नीचे पहनी हुई गाढे की वास्कट का जेब टटोला, और उसमे से एक मला अधफटा कागज निकाल कर बाबू के हाथ मे दे दिया।

'इसे पढो बाबूजी।'

बाबू ने कागज को हाथ मे लिया, उस पर लिखे मजमून के नीचे दो अगूठे और एक दस्तखत को देखा, और फिर धीरे धीरे पढने लगा।

' आज रोज मारूखा—फिदवी नम्बरदार दीदासिह वमैह दा पचा के बयान करते है कि बिशनसिह वल्दे सुखासिह मरहूम, बाप की मौत के बाद नीमपागल हो गया है। हम इल्तजा करते हैं कि इसे जालन्धर शहर के पागलखाने मे दाखिल कर लिया जाव। इसका कोई वली वारस नही। गाव म इसका रहना खतरनाक है '

बाबू ने इस मजमून को एक बार पढा, और दोबारा पढ ही रहा था, जब उसने घूम कर देखा कि पागल जाट के हाथ से रस्सी छुडा कर खेतो मे भागा जा रहा ह। खेतो मे कीच था, मिट्टी के मोटे मोटे ढेले थे, मेडे थी। पागल भागता जा रहा था। उसकी पतली लडखडाती टांगें जमीन पर से उठती, और बेतरह ढग से कभी दाए कभी बाए जाकर पडती। और इन दोनो के बीच रेंगते साप की तरह बल खाती हुई रस्सी भागी जा रही थी, जिससे उसके हाथ बधे थे।

मगर बाबू यह देखकर हैरान रह गया कि जाट ने पागल को पकडने की तनिक भी कोशिश नही की, न वह चिंतित ही हुआ या घबराया। बल्कि पहले खडा था, अब सडक के किनारे बैठ गया।

'वह तो भाग गया है, अब क्या कराग ?'

जाट ने हसते हुए जवाब दिया

'जाएगा कहाँ, अभी लौट आयगा। पहले भी तीन बार भाग चुका है, देखो बाबू तुम कहते थे इसकी रस्सी खोल दो।

मगर अभी पागल एक ही खेत की मेड़ पार कर पाया था कि उसके पाँव फिसलने और लड़खड़ाने लगे, और देखते ही देखते वह धड़ाम से औंधे मुँह जमीन पर जा गिरा। फिर घबराया हुआ उठा और छटपटाता पानी से भागने लगा। अब की बार चार पाँच कदम ही जा पाया होगा कि उसकी टाँगें जवाब दे गईं और वह फिर मुँह के बल जा गिरा। अब उससे न उठा गया, और वह वहीं मिट्टी के ढेले पर हाँफता हुआ बैठ गया। जाट चुपचाप बैठा हुआ उसकी तरफ देख रहा था। बाबू को पागल पर दया आने लगी। न मालूम कौन बदनसीब है जो बेघर, यतीम यूँ सड़कों पर ठोकरें खा रहा है। पागल जिस ओर भाग कर गया था वहाँ मीलों की दूरी तक मैदान ही मैदान थे। इतने असीम विस्तार में वह कहाँ भाग कर जा सकता था।

लौट आ, कुछ नहीं कहूँगा, वापस आ जा देर हो रही है। जाट ने पुकारा।

पागल सिर थामे हाँपता रहा, फिर वह अपने आप वहाँ से उठ खड़ा हुआ और धीरे-धीरे जाट की ओर लौटने लगा। पागल का सिर मुँडा हुआ था, और उसका पीला जर्द माथा और सिर पसीने में तर थे। इतना भागने पर भी उसके चेहरे पर वही मृतप्राय दुर्बलता छाई हुई थी। उसकी साँसें अब भी काँप रही थीं। हाँ, साँस लेने के व्याकुल प्रयास में उसने अपने मुँह पर बँधा हुआ रूमाल दोनों हाथों से नोच डाला था, जो अब उसके गले में एक फंदे की तरह लटक रहा था। गिरता पड़ता वह लौट आया और चुपचाप जाट के पास सड़क के किनारे बैठ गया।

'आप जाओ बाबू, देर हो रही है। कहते हुए जाट उठा और फिर रस्सी का छोर पकड़ कर पागल को उठाने लगा।

बाबू ने चुपचाप साइकल को मोड़ा और सड़क पर आ गया। मन में कौतूहल होते हुए भी इन ग्रामीणों के मामले में कोई दखल न देना चाहता था। मगर वह साइकल पर सवार हुआ ही था कि सहसा पागल ने भागकर उसकी साइकल का पिछला पहिया दोनों हाथों से पकड़ लिया। बाबू जमीन पर पाँव रखकर उतर आया। पागल पहिया पकड़े जमीन पर बैठ गया।

एक बार तो बाबू की देह काप गई, मगर पागल के दोनो हाथ बधे थे घबराने का कोई कारण न था।

जाट ने छूटते ही पागल के मुह पर दो थप्पड रसीद किय और उसके हाथ साइकल के पहिये पर स छुडा लिये। थप्पड खान के बाद पागल पीछे हट गया मगर ज्या ही बाबू साइकल पर जाने लगा तो पागन चिल्लाने लगा

यह मुझे पीटता है। भूसे की कोठरी मे बन्द करता है। मैं नही जाऊगा, मैं नही जाऊगा।'

बाबू रुक गया। उसे मालूम था कि लडका नीम पागन है कोई वाक्य होश म और कोई बहोशी मे कहता है। उस धीरे धीरे समझाने लगा

'नही, नही, कभी बन्द नही करेगा। तुम चुपचाप इसके साथ चले जाओ। यह तुम्हे कुछ नही कहेगा।'

पागल बच्चा की तरह जिद करने लगा, और फिर पहिया पकड कर बोलता गया

'यह मुझे मारेगा, मेरा बापू मर गया ह, मेरा बापू मर गया है, यह मेरी जमीन छीनता है।' और यही वाक्य बार-बार दोहराता हुआ, ऊची-ऊची आवाज म रोने चिल्लाने लगा।

बाबू को सन्देह हुआ। कोई इस मामले म गडबड है, बात साफ नही मगर इस सन्देह ने बाबूजी के कदम और भी तज कर दिये। शहर से दूर वीरान म वह उजडड लोगो के झगडे म न पडना चाहते थे। पागल की नम्र आखो को देखते हुए भी वह फिर साइकल को सडक पर ले जाने लगे। मगर अब की बार पागल उनके पीछे पीछे चलने लगा।

जाट अब तक चुपचाप खडा था। अब वह आगे बढ आया और रस्सी खीचता हुआ पागल को रोकने लगा। जब वह न रुका तो जाट की आखें गुस्से से लाल होने लगी। पागल की छाती म जोर से घूसा मारते हुए बोला—'बाबू के साथ जाएगा हरामजादे जाता क्या नहीं ?'

और फिर पागल पर लातो और घूसो की बौछार पडने लगी। ज्यो-ज्यो पागल को पीटता, जाट का क्रोध बढता जाता था। बाबू भी जाट के गुस्से को देखकर काप उठा। जाट ने थप्पड जमाने के बाद अपने खाकी

थैले में हाथ डाला और एक मोटी साँकल जिसके एक सिरे पर मिक्‍क का ताला बंधा था, निकाली और जोर से पागल के सिर पर दे मारी। पागल ने बहुतेरे हाथ उठाए गिड़गिड़ाया चिल्लाया, मगर जंजीर को रोक न सका। क्षण भर में उसके सिर में से खून का फव्वारा फूट निकला और देखते ही देखते पागल का मुँह खून से लथपथ हो गया। पागल काँपता हुआ, अपने लड़खड़ाते घुटने थामने की चेष्टा करते हुए जमीन पर बैठ गया और कराहने लगा। झट अपने दोनों हाथ सिर पर रखे अपनी रुलाई रोकते हुए बोला

'तू जमीन ले ले, मुझे नहीं चाहिये। मैं जो कहूँगा करूँगा। मैं कागज पर अँगूठा लगा दूँगा। मेरा बापू मर गया है। तू जमीन ले ले '

बाबू की आँखों के सामने सारा षड्यन्त्र स्पष्ट होने लगा। यह जाट सचमुच इसकी जमीन छीनना चाहता होगा जिसके लिए यह इस पागल खाने में धकेल रहा है। ऐसा न हो तो पागल जमीन की बात बार-बार क्या कहे। मगर बाबू क्या कर सकता था। अपनी निस्सहायता को भली भाँति समझते हुए, जड़वत खड़ा रहा।

जाट के कपड़ों पर खून के छींटे पड़े, उसके हाथ में से साँकल गिर गई और वह बहते खून को देखता हुआ जड़वत खड़ा रह गया। पागल के सिर पर से खून की धारा टप टप धरती पर गिरने लगी। फिर, देखते ही देखते, अपना थैला और साँकल और रस्सी वहीं छोड़ कर जाट वहाँ से भागने लगा। वह भी खेतों में भागने लगा, सीधा उसी दिशा में जिसमें थोड़ी देर पहले पागल भाग कर गया था, अपने बोझिल पाँव के नीचे कीच के छींटे उड़ाता, बड़ी तेजी से जमीन की मेड़ें पार करने लगा। बाबू कुछ देर तो उसे खड़ा देखता रहा फिर उसने जोर से पुकारा

अरे डर नहीं, मरेगा नहीं, सिर्फ माथे पर चोट आई है, लौट आ।

मगर जाट के डरे हुए पाँव भागे जा रहे थे। बार बार वह मुड़कर पागल की ओर देखता, फिर भागने लगता।

फिर बाबू ने देखा कि एक जमीन की मेड़ के पास जाट के पाँव सहमा कर गए हैं और वह खड़ा हो गया है। बाबू ने उसे फिर पुकारा, हाथों से इशारा किया मगर जाट दूर खड़ा, हाँफता हुआ, चुपचाप उसकी तरफ

देखता रहा। फिर एक अजीव बात हुई जिसकी बाबू को आशा न थी। जाट धीरे धीरे वापस आने लगा। बिना कुछ कहे, बिना कुछ सुन वापस आने लगा। उसके कपडा पर पागल के खून की छीटें दूर म ही नजर आ रही थी। वह सीधा पागल के पास आया और आकर बैठ गया। उसने अपनी पगडी को सिर पर से उतारा, और उसके एक छोर पर स लम्बी-सी पट्टी को फाडा। फिर जमीन पर से थोडी सी मिटटी उठाकर पागल के जख्म पर रखी जहा म खून वह रहा था और उस पर धीर-धीर पटटी बाधन लगा। मगर आधी पटटी भी नही बाध पाया होगा कि पटटी छोड कर फफक फफक कर रोन लगा। रोता जाता और धरती पर पडी हुई खून भरी मिटटी को अपन माथे पर लगाता जाता।

'मैं पागल हू बाबू, मैं पागल हू। यह पागल नही है ओ ओ मैं बडा गुनहगार हू बाबू। ओ मैंने क्या किया है वाह गुरु मेर हाथ काट दे '

बाबू अब भी खडा हतबुद्धि यह नाटक दख जा रहा था।

'मैं अधा हो गया हू बाबू यह मेरा अपना भाई है मेर सगे चाचे का वेटा है बाबू ' और दोनो हाथ बाधकर, आकाश की ओर दखते हुए याचना करन लगा 'गुरु महाराज, मेर गुनाह माफ कर दो। माफ कर दो गुरु महाराज।

फिर बाबू का सम्बोधित करके बोला

यह सच कहता है, सब ठीक कहता है। यह मेरे चाचे का वटा है बाबू, इसकी एक बीघा जमीन है। नम्बरदार न मुझे भरमाया है बाबू, मैं सच कहता हू। मरा खेत बारिश मे सत्यानाश हो गया है सारी जमीन म स पाच मन गेहू निकला, हम आठ जीव खान वाले है। मैं नम्बरदार की बातो म आ गया। उसन मुझे बहका दिया कि यह जमीन मेर नाम हो सकती है। पचा के अगूठे भी उसी ने लगवाय है। बारिश न सत्यानाश कर दिया है बाबू हम कहीं के नही रहे। इतनी सी जमीन मे स क्या निकलेगा? पिछली दो पीढियो म छ बार जमीन बट चुकी है। वाह गुरु म कहा जाऊ मैंन बीमार का सताया है बाबू, मैंने तीन रातें इसे भूसे की कोठडी म '

परन्तु वाक्य अभी पूरा नहीं कर पाया था कि वह सिसकियां लेता हुआ जमीन पर बैठ गया, और पागल के पांव पर बार-बार अपना सिर रखने लगा।

बाबू ने गांवों की अनेक कहानियां सुनी थीं। गांवों की भूख और गरीबी के अनेक किस्से सुन चुका था, मगर आज पहली बार उस जीवन से साक्षात् कर पाया था।

थोड़ी देर के बाद जाट उठा, पागल के हाथों की रस्सी खोल दी। उसकी बगल को अपने बाजू का सहारा देते हुए उसे उठाता हुआ सड़क पर ले आया और धीरे धीरे उस पर झुके हुए उसे वापस गांव की ओर ले जाने लगा।

खून में लिथड़ी हुई सांकल, और रस्सी और नम्बरदार की चिट्ठी वहीं पड़े रह गये। बाबू बड़ी देर तक उन्हें जाते हुए देखता रहा। न मालूम किस गांव के रहने वाले थे, कहां से आए थे। शाम की बढ़ती छाया में दोनों किसान धीरे धीरे दूर निकल गए। *आकाश की स्वच्छ नीलिमा में अब भी* दो एक जलहीन श्वेत बादल उड़ रहे थे, जैसे धरती की दुर्दशा का अट्टहास कर रहे हों। नीचे धरती पर मेड़ों का जाल शाम की बढ़ती छाया में और भी गहरा होने लगा था। शहर को जाने वाली लम्बी सड़क फिर चुपचाप हो गई, केवल कहीं कहीं, मीलों की दूरी पर, कोई इक्का दुक्का किसान शहर की ओर जाता नजर आ जाए तो आ जाए। मीलों की दूरी तक सपाट मैदान फैले हुए थे, और कहीं-कहीं जाटों के फुटकर घर, ढलती धूप में शान्त, मौन चित्रवत नजर आ रहे थे। इतनी दूरी पर उनमें छिपी व्याकुलता का कोई आभास न मिलता था।

घर की इज्जत

प्रभातवेला म जब बडे भाई साहब की नीद टूटी तो नियमानुसार उन की पत्नी उनके सिरहाने खडी थी। एक पानी का लोटा लिये कधे पर तौलिया रखे, पति सेवा का पुण्य यह अभागिनी पिछले बीस साल स कमाती चली आ रही थी। भाई साहब ने मुह हाथ धोते हुए देखा कि पत्नी का हाथ बार-बार अपने मुह की ओर जा रहा है।

'क्या ? दात मे फिर दद है क्या ?' उ होने आख उठा कर पूछा।

'हा, दद है।'

भाई साहब ने दिल ही दिल मे कहा बीवी बूढी हो चली है। और एक हलकी सी टीस उनके मन मे उठी मुझे इससे क्या सुख मिला ? अन-पढ, न सुदर, न चतुर, जो वक्त से पहले बूढी हो चली है। परतु सुबह सवेर वह अपन मन को अशात न करना चाहते थे। मुह हाथ धोकर गभीर मुद्रा धारण किये वह थोडी देर तक चुपचाप बठे रहे, फिर बोले

'सुनो, तुमने छोटी वहू को समभाया-बुभाया है या अब भी वह मन-मानी कर रही है ?'

'मैं उस क्या समभाऊगी। जैस उसका घरवाला कह वैसे कर। मैं इसमे क्या कह सकती हू ?'

'घर की इज्जत मिट्टी मे मिल जाए तो तुम खुश होगी ?

नाटक खेल लेगी तो कौन सा पहाड टूट पडेगा ? छोटी सी बच्ची है, दो दिन खुश हो लेने दो, फिर उमर भर इसी घर मे रहना है, अपन आप समझ जाएगी।'

अब मेरी समभ म आया कि क्या इस लडकी का माहत्म्य बढता जा

रहा हू। बडी बहू उसकी पीठ पर हो तो वह किसकी सुनगी ?

मैंने उसे कुछ नहीं कहा। पर छोटी सी बच्ची का ताडना करने का क्या लाभ ? बचपन म दिन की उमगें होती हैं, बाद म तो जून भुगतन वाली बात रह जाती है।' अपन दुखते दात पर हाथ रखे बडी बहू यह वाक्य कह गई।

'तो तुम इस घर म जून भुगत रही हो ?'

मेरी कौन सी साध पूरी हुइ है ? पर यह कहते ही चुप हो गई और अपने दुस्साहस पर पछतान लगी।

बडे भाइसाहब जहा अपनी पत्नी के साथ अपने घर की गुत्थिया सुलझा रहे थ, वहा बाकी सारा परिवार गरमिया की ठडी सुबह मे मीठी नीद सोया पडा था। बडे भाई के पलग से पाच छ गज की दूरी पर चार खाटे एक *साथ बिछी थी, जिन पर उनसे छोटे भाई और उनका परिवार* सोया पडा था। ये चार खाटें छोडकर थोडी दूरी पर इसी लाइन म चार और खाटें बिछी थी, जिन पर घर के तीसर रत्न और उनका परिवार सो रहा था। और उनसे आगे पाच खाटा पर चौथे भाइ का परिवार था। इसी प्रकार चक्राकार मे बिछी लगभग पच्चीस खाटा क सामने, चाद तारे की तरह बडे भाई का बडा पलग बिछा था। खाटा के पीछे एक पुराना इकहरा घर था और घर के सामने खुली जमीन थी जिसम एक ऊचा शीशम का पेड पीढ़िया स *इस सयुक्त परिवार को अपनी छत्रछाया म लिये हुए था।*

बडे भाई अपने पाच भाइया म धमराज युधिष्ठिर थ—सौम्य मुद्रा, मीठी वाणी, मर्यादा के पक्के, अपने सयुक्त परिवार को पुरखाओ के सौंपे हुए नियमा पर चलाना अपने जीवन का ध्येय मानते थ। बरसों से गृहपति के पद पर आसीन थे। जहा शहर म और कई सयुक्त परिवार टूट फूट रह थ, *वहा इन भाइया का परिवार प्राचीनता का दृढ दुग बना हुआ था।*

बडे भाई आज सचमुच चिंतित थे और इसका कारण सबस छोटे भाई की नवविवाहिता बहू थी। जब से यह भाग्यवान घर मे आई थी बडे भाई का जैसे सिंहासन डोल गया था, और इनकी प्रौढ प्रतिभा भी यह जानने म असमर्थ रही थी कि उसे किस ढग से घर के अनुकूल चलाया जाए।

सुनदा अप्सरा सी सुदर थी, पर साथ ही बेसुध और बेपरवा भी थी।

कमरा म घूमती तो गीत गुनगुनाती हुई, जब हमती ता झरन के पानी की तरह स्वच्छद। पहले पहल जब आइ ता घर की जीण दीवार भी जस मुसकरा उठी पर धीर धीर घर की मर्यादाओ के उल्लघन का डर पदा होने लगा। गादी के हफ्ते भर बाद ही सुनदा न जेवर गहन उतार दिए और साद कपडे पहन कर सहलियो स मिलने चली गई। और इसके बाद दस दिन भी न गुजरे हाग कि एक दिन बोली 'मैं कहीं नौकरी करूगी किसी स्कूल म पढाऊगी। आज गादी के दो महीने बाद वह एक नाटक म भाग लेन जा रही थी।

इस वार्तालाप न बडे भाइ को और भी गभीर बना दिया। पहले अशात न थे, अब हो गए। बडी बहू साबुन और लोटा उठा कर रसोईघर की ओर जाने लगी। और बडे भाई फिर गहरी सोच मे डूब गए। थोडी देर बाद उन्हान धीरे से अपन सिरहान के पास टिके हुए एक मोटे से लट्ठ को बडे आदर भाव से छू लिया यह भी उनके जीवन का एक नियम था। स्वर्गीय पिता की इस निशानी के स्पश से उनके मन म दृढता और विश्वास का सचार हो उठता था। इसके बाद वह बिस्तर पर से उठ कर धीरे धीरे अपन कमरे की ओर चले गए।

पूजापाठ व नाश्त के बाद बडे भाई साहब न सबसे छोटे भाई को अपन कमरे म बुला भेजा, और स्वभावानुसार थोडी देर चुप रहने के बाद बोले

यह नाटक कब खेला जाएगा ?'

'अगले शनीचर को। अभी आठ दस दिन बाकी है।

बडे भाइ धीरे धीरे कहने लगे

'भगवान का शुक्र है जो आज बाबू जी जिन्दा नही। उन्ह यह दिन नहीं देखना पडा।

छोटा भाई सुनते ही सिहर उठा और कुर्सी छोड कर उनके पास आकर खडा हो गया।

बडे भाइ के तरकश का यह अचूक तीर था। जब देखते कि उनके प्रभाव म शिथिलता का डर ह तो स्वर्गीय बाबूजी का नाम लेकर अपना प्रभाव जमा लेत।

'मैं तुम्हारी बाता म दखल नही देना चाहता, मगर बेहतर हो कि

सुनदा इस नाटक मे से अपना नाम कटवा द। म नही चाहता कि हर एर गैरे के सामने हमारे घर की बहू स्वाग भरती फिरे।

'पर भाइसाहब, यह तो सामाजिक नाटक है स्कूल की लडकिया सलन जा रही है।'

'मैं कब कहता हू कि सामाजिक नही है ? मगर कुलीन घरा का बहू बेटिया लोगा के सामने बपरदा होकर नही आती।'

छोटा भाई चुप हो गया। उसे घबराया हुआ देखकर उसके कधे पर हाथ रखत हुए बडे भाई बोले

'स्त्रिया मे चचलता अच्छी नही होती इसे पनपने नही देना चाहिए। इससे बन बनाए घर धूल मे मिल जात है। अभी अभी तुम्हारी शादी हुई है। कई बातें यदि शुरू म ठीक न कर ली जाए तो बाद म गृहस्थ सम्भाल नही सम्भलता। अगर हम भाइया को एक मुटठी होकर रहना है तो हम अपनी स्त्रिया को काबू म रखना होगा।'

छोट भाइ ने श्रद्धा और भय स सिर हिलाया। उसे अब मालूम हुआ कि वह सुनदा का नाटक मे भाग लेन की अनुमति देकर बहुत बडी भूल कर चुका है। नए विवाह और सुनदा के रूप की मादकता उसकी आखो स छन न पाई थी। परतु बडे भाई अनुभवी पुरुष थे। क्या ठीक है और क्या नही, इसका निश्चय वही कर सकते थे।

बडे भाई फिर कहने लग

'शादी के बाद लडकी को अपने नए घर के जीवन म ढल जाना चाहिए। सुनदा पर स भी मायके का रग जितनी जल्दी धुल जाए उतना अच्छा होगा।

एन उसी वक्त मझली बहू चाय के बरतन उठाए बरामद म स गुजरी, और दोना भाइया न उस जाते हुए देखा।

तुम इस मझली बहू की बात भूल गए ? यह जब आई थी तो अपना अलग घर बसाना चाहती थी। यदि इसकी बात मान ली जाती तो यह घर कब का टूट गया हाता। मगर अब कितनी सीधी हो गई ह। स्त्रिया की चचलता का तोडना ही पडता है।'

समय के धूमिल अतीत म छाटे भाइ को मझली बहू की बाता याद

हो आई। तब वह स्कूल मे पढता था। उन दिनो घर म एक तूफान उठ खडा हुआ था और सब लोग मझली बहू को कोसने लगे थे। फिर क्या और कैसे मझली बहू सहसा चुप हो गई, वह उस समय न जानता था। साल भर मझली बहू रोती रही थी। वह उसे कभी घर के एक कोने मे और कभी दूसरे कोने म खडे रोते देखा करता था।

बडे भाई गहस्थ जीवन पर उपदेश देने गए और छोटा भाई दत्तचित्त सिर हिलाता गया। एक एक वाक्य उसके हृदय पर अंकित होता गया। जब वह उठा तो क्षोभ और चिंता मे अपने आपको कोसता हुआ। उसने दिल मे निश्चय कर लिया कि कुछ भी हो जाए, वह सुनदा को नाटक मे भाग न लेने देगा, चाहे उसे मच पर से घसीट कर ही क्यो न लाना पडे। वह अपने हाथा परिवार के नाम को वट्टा नही लगने देगा। कोई भीरु पुरुष किसी काम को करने मे असमर्थ होता है तो वह धष्टता का सहारा ले लेता है। छोटा भाई बडे भाईसाहब की विशाल छाया के नीचे पल कर बडा हुआ था, उसके लिए बडे भाई का एक एक वाक्य ब्रह्मवाक्य के समान पूज्य था।

बात मामूली थी, अति साधारण, पर इस घर की चहारदीवारी मे छोटी छोटी बातें भी विकराल रूप धारण कर लेती थी। छोटी बहू जिस स्कूल म पढी थी, उस स्कूल की लडकिया एक नाटक खेलने जा रही थी, और उनम छोटी बहू भी शामिल हो गई थी। घर के सब लोग, पाचो भाई नाटक सिनमा देखने के शौकीन थे। बडे भाई तो ऐसे कई अधिवेशनो पर सभापति पद पर भी बैठ चुके थे। पर वह तब था जब और घरो की लडकिया पाट कर रही हो, जब वह स्वय दशक हो, कला के प्रशसक। जब उनकी अपनी बहू को पाट खेलने का शौक हो आए तो धम नियमावली बदल जाती थी, और कुल की मर्यादा टूटने का भय उठ खडा होता था।

सुनदा सयुक्त परिवार के वातावरण को न जानती थी। छोटे से परिवार से आई थी, जहा पिता और भाई बहनें एक दूसरे के साथ मित्रो के समान हसते खेलते थ। पिता अमीर तो न थे, पर स्वच्छदता के प्रेमी थे, और बाहर की खुली हवा के सामन खिडकिया-दरवाजे बद रखने के आदी न थे। सुनदा जब इस घर मे आई थी तो वह उस पक्षी की तरह थी

जो अनजाने म एक पिंजरे मे चला आये और फिर अपने पर फैलाने की चेष्टा करने लगे।

जब छोटा भाई अपने कमरे मे पहुचा तो सुनन्दा रोज की तरह गुन गुना रही थी हसकर कहने लगी

'तुम दोनो भाई क्या खुसफुस कर रह थे ? इस घर मे खुसफुस बहुत चलती है। हर नुक्कड मे दो दो आदमी खडे न मालूम क्या खुसफुस करते रहते हैं।' और फिर हसने लगी।

छोटे भाई न गम्भीर मुद्रा बनाते हुए कहा

'सुनो, सुनदा, तुम यह नाटक खेलने का विचार छोड दो।'

'क्या ? क्या बडे भाईसाहब से नाटक की बात कर रहे थे ?'

'नही, हम दोनो तो दुकान की बात कर रहे थे। मगर सारे शहर म नाटक की चचा होने लगी है। मुझे अच्छा नही लगता। तुम नाटक म से नाम कटवा दो।'

'वाह, जी, ऐसा भी कभी हुआ है ! इस वक्त उन्ह मेरे पाट के लिए कौन मिलेगा ? और फिर सामाजिक खेल है, इसमे काम करना क्या बुरा है ? नही, साहब, मैं तो पाट करूगी।'

पर सुनन्दा के मन मे शका सी उठ खडी हुई, उसने पूछा

'क्या घर मे किसी ने ऐतराज उठाया है ? क्या मझली बहू ने कुछ कहा है ?'

'नही, किसी न कुछ नही कहा।'

'तो फिर किस बात से डरते हो ? लोग तो कहते ही हैं। ज्यादा चर्चा होगी तो हमारे टिकट भी ज्यादा बिकेंगे।' कहकर सुनदा हसन लगी।

'तुम इसे मजाक समझ रही हो। पर मैं मजाक नही कर रहा हू। अगर तुमने नाटक म पाट किया तो इसका परिणाम बुरा होगा।'

'सुनदा को शादी के बाद पहली बार अपन पति की आवाज मे कठोरता का आभास हुआ, पर वह हसती रही।

'इस वक्त मैं छोडना भी चाहू तो नही छोड सकती। मेरा पाट सबस लम्बा है। इस वक्त उन्हें मेरी जगह कौन मिलेगा—तुम यह तो सोचते ही नहीं। जान पडता है तुमन कभी नाटक नहीं खेले।'

छोटे भाई को इस जवाब मे अपमान नजर आया। कडवे स्वर बोला

'अगर तुम मेरा कहा न मानोगी तो इस घर म तुम्हारे लिए कोई स्थान नहीं होगा।'

सुनदा सिर से पाव तक काप गई, और घबराकर बिस्तर पर जा बैठी। उस मालूम न था कि शादी के बाद इस प्रकार के वाक्य भी सुने जाते हैं। उसका चेहरा पीला पड गया, और होंठ कापने लगे। पल भर मे उसकी आखें डबडबा आईं।

'तुम इसे इतने आसान समझते हो कि यदि तुम्हें किसी ने नाटक के विरुद्ध कुछ कहा तो तुम मुझे घर से निकाल दोगे?'

छोटा भाई गुस्से मे वाक्य कह गया था, मगर अब नम्रता दिखाना भूल गी। उसी दृढता से बोला

'अगर तुम मेरे प्रतिकूल चलोगी तो '

'इसमे प्रतिकूलता क्या है? तुम्ही ने कहा था कि वेनक खेलो।'

पर वार्तालाप यहा खत्म हो गया। सुनदा का पति कपडे पहनकर दुकान पर चला गया, और सुनदा बैठी शून्य में ताकती रही। दिन भर वह उद्भ्रात सी अपन कमरे में बैठी रही। एक बार एक सात्वना की खोज म बडी बहू के पास गई। मगर बडी बहू रसोईघर की दीवार के साथ अपना मुह पकडे निढाल होकर बैठी थी। सुनदा उन्ही कदमा वापस लौट आई। बार बार वह अपनी आखें पोछती रही। उसे आशा न थी कि विवाहित जीवन के पहले आसू इतने अनूठे और अपमान भरे ढग से आएग।

शाम हुई। ज्यो ही बडे भाई साहब दुकान स लौटे, सुनदा उनके पास जा पहुची और सकाच भरे स्वर म बोली

देखिय, मैंने एक नाटक मे भाग लिया है। हफ्ते दस दिन मे नाटक होने जा रहा है और आज यह कहते हैं कि नाटक मे से नाम कटवा दो। नाटक म भाग लेना क्या बुरी बात है? आप बताए मैं क्या करू?'

बडे भाई सुनदा के चेहरे को एक ही नजर मे देखकर समझ गए कि छोटे भाई न अपना कतव्य निभाया है, और इन आसुओ मे नाटक का उत्साह बहुत कुछ धुल चुका है। स्नेह भरी आवाज म हसकर बोले

'सुनदा वटी, उस आदमी से वडा मूख ससार भर मे नही होगा जो पति पत्नी के झगडे मे पडता है। मैं अपने लिए यह उपाधि नही लेना चाहता। तुम अपना निपटारा आपस म कर लो।'

यह सुनते ही सुनदा के मन का बोझ हलका हो गया। जो बडे भाई साहब ने अपना रुद्र पाव इस पर नही रखा तो अपने पति को तो वह समझा लेगी, उनसे लड झगडकर भी उन्ह मना लेगी। उसने कृतज्ञता से सर झुकाया और प्रणाम करके बाहर निकल आई। दिन भर की व्याकुलता को भुलाने के लिए पडोस म एक सहेली से मिलने चली गई।

पर सुनदा अभी तक एक सयुक्त परिवार के बाहरी और भीतरी रूप से परिचित न हो पाई थी।

जव वह अधेरा होने पर लौटकर आई तो गोल कमरे मे मझली बहू और तीसर भाई की बहू दोनो धीरे धीरे आपस मे बातें कर रही थी। सुनदा को मझली बहू से डर लगने लगा था उसकी वाणी मे विष की सी कटुता थी। छोटी को वह चाहती थी, पर छोटी हर वक्त गुमसुम रहती अपने दिल की बात किसी से न कहती थी। ज्यो ही सुनदा ने गोल कमरे मे पाव रखा, मझली बहू जो हाथ फैला फैलाकर बात कर रही थी, सहसा चुप हो गई और सुनदा को सबोधित करके बोली

आओ, बहूरानी, अन्दर आ जाओ।'

पर सुनदा बैठने की वजाय सीधी गोल कमरा पार करके बाहर बरामदे मे चली गई। बरामद म अधेरा था। सुनदा चुपचाप अपन कमरे की आर जा रही थी जब सहसा उसके पाव रुक गए उसके पास दरवाजे के पीछे दो आदमी बात कर रहे थे। सुनदा न बडे भाई साहब की आवाज पहचान ली। वडे भाई दरवाजे की ओट म सुनदा के पति को कुछ समझा रह थे। कुछ शब्द सुनदा के कानो मे भी पड गए

जो अब भी न माने तो कुछ दिन के लिए मायके भेज दो। इसकी चचलता जब तक टटेगी नही, तब तक वह हमार घर म रह नही पाएगी। इस वक्त दढ रहोगे तो उमर भर सुखी रहोगे।'

सुनदा को जैस काठ मार गया हो। वह दीवार के साथ सटकर खडी थी वही खडी रह गई। आगे कदम बढान की उसकी हिम्मत न हुई,

आवाज बडे भाई साहब की थी, इसमे कोई सन्देह न था। धीरे-धीरे वह अपने आपको सभालती हुई वापस लौट आई और बरामदा लाघकर मदान म आ गई। उस ऐसा जान पडने लगा जैसे वह किसी भूल-भुलैया मे आ गई है, जिसमे मनुष्य जितना ही अपना रास्ता ढूढने की चेष्टा कर उतना ही भटक जाता है।

सुनदा धीरे धीरे कापत हुए पाव से पड के नीचे आ खडी हुई—उसी तरह व्याकुल जैसे कभी बडे भाई की बहू खडी हुई थी, जैस मझली बहू, अपने नए घर की साध को टूटता देखकर खडी हुई थी, जैस तीसर भाई की बहू, अपन पति से दुत्कारी हुई, जो रोज शराब पीकर घर लौटता था और किसी पर स्त्री स प्रेम करन लग गया था, खडी हुआ करती थी। यह वक्ष उन सब घटनाओ का साक्षी था। मूक और वृद्ध उसन एक के बाद दूसरे चार युवतियो की चचलता की आहुति इस सयुक्त परिवार के होम मे पडते देखती थी, और आज पाचवी का अभिनय दख रहा था।

सुनदा को ऐसा जान पडन लगा जैसे सहमा उसका शरीर किसी पुरानी व्याधि से रुग्ण हो उठा है।

दो दिन बीत गए। सुनदा न फिर नाटक का जिक्र न किया। मन म वह बहुत छटपटाई। कभी मायके जाने की सोचती, कभी अपन पिता को खत लिखन की। जो लोग जीवन से अपनी माग बहुत आग्रह स मागत ह, ठुकराए जान पर उनकी यातना भी असह्य हो उठती है। मगर वह मुह पर एक शब्द भी न लाई। सार घर म नाटक की चचा शान्त हो गई। बडे भाई भी आश्वस्त नजर आने लग। उनका ख्याल था कि सुनदा को सीधे रास्ते पर लान के लिए बडे दावपच खेलन पडेंग, मगर लडकी बाहर से ही शोख और निडर थी, अन्दर से कायर निकली। छोटे भाई को भी पत्नी के व्यवहार म पराजय का आभास मिलन लगा—वह नम्रता जो असहायता और उदभ्राति स पैदा होती है। परन्तु बडे भाई साहब का उपदेश उसे याद था कि स्त्री झुकने से पहले सब दाव खेलती है। पुरुष एक बार भी झुक जाए तो स्त्री आयु पयत उसकी गरदन पर सवार रहती ह। छोटे भाई इसलिए अभी तक तने रहे।

पर धीरे धीरे वह नम्रता घृणा मे परिवर्तित होने लगी। सुनन्दा की

आखा के सामने इस घर की कुरुपता स्पष्ट होने लगी। वह दिल ही दिल मे झल्लान लगी कि यह दासता और अपमान कहा तक सहन पडेंगे। जब वह नाटक के बारे म चुप हो गई तो सभी चुप हो गए। और इसी झल्ला-हट म सुनदा एक दिन नाटक म से अपना नाम कटवाने के लिए चली गई।

फिर एक अनोखी घटना घटी। सुनदा गई तो भाग को कोसती हुई और मन मे झल्लाती हुई, पर लौटी आश्वस्त, मुसकराती हुई। मगर मुह से फिर भी कुछ न बोली।

दो दिन और बीत गए और उसके चेहरे पर से निराशा की मलिनता जस धुलने लगी, और वह फिर से हसने-बोलने लगी। उसके चेहरे पर पहली सी अबाध उत्सुकता तो न थी, मगर वे आसू भी न थे। और तो और बडे भाई भी हैरान हुए। इस घर की स्त्रिया म से किसी ने भी इतनी जल्दी और इतनी सुगमता से घर की अनुकूलता ग्रहण न की थी। हा, अगर इस परिवतन पर किसी को सदेह हुआ तो वह मझली बहू थी। मझली बहू का अपना हृदय यौवन की हिलोर का अनुभव कर चुका था, और फिर बहुतरा छटपटाने के बाद इस सयुक्त परिवार की दुर्निवार चट्टान के साथ एक काच के खिलौन की तरह चूर चूर भी हो चुका था। वह एक युवती के हृदय के स्पदन को समझती थी। उसन जरूर दाता तले उगली दबा कर कहा

'छोट को कहो कि सुनदा पर आख रखे, ये लक्षण अच्छे नही।'

धीरे धीरे नाटक का दिन आ पहुचा। दोपहर होते होत सुनदा उत्तेजित हो उठी। बार बार खिडकी से झाकने लगती और अपने कमरे मे चक्कर काटने लगती उसके दिल की वही हालत हो रही थी जो उस आदमी के दिल की होती है जो अपनी सारी कमाई जुए के एक दाव पर लगा दे। घर का वातावरण रोज की तरह शात और स्तब्ध था। घर की स्त्रिया नाटक की तारीख तक भूल चुकी थी। और बडे भाई साहब आश्वस्त, कब के दुकान पर जा चुके हैं।

दोपहर ढल रही थी जब एक टागा घर के सामने रुका और उसमे से बडे भाई साहब उतरे, और मैदान म चलत हुए सीधे अपने कमरे म चले

गए। खिडकी के अधखुले पल्लो के पीछे सुनदा न उन्ह देखा, और अपनी उत्तेजना को दवाने के लिए मुह मे दुपट्टे का छोर ठूसकर एक एक क्षण गिनने लगी कि कही बडे भाईसाहब उसके कमरे की ओर न चले आए। टागा सडक पर ही खडा रहा। सुनदा ने अपने धडकते दिल से घडी की ओर देखा। उस वक्त चार बजे थे।

पन्द्रह बीस मिनट बाद बडे भाई फिर अपने कमरे म से निकले, काली अचकन पहने और सिर पर काली ही नोक्दार टोपी रखे हुए। और धीरे-धीरे मदान पार करते हुए टागे पर जा बैठे, और टागा जिस दिशा से आया था उसी दिशा म लौट गया। सुनदा के चेहरे पर हसी फूट पडी। वह जल्दी से उठी और फौरन कपडे पहनकर घर से निकल आई। सिर मुह को अच्छी तरह से ढाक लिया ताकि कोई यह न कहे कि कुलीन घर की वहू सडक पर अकेली घूम रही है।

परदा उठने स पहले तीन घटिया वजती है। पहली घटी नाटक के पात्रो को तैयार हो जाने की चेतावनी देती है, दूसरी दशको को अपनी अपनी जगह पर बैठ जाने की, तीसरी घटी पर परदा उठ जाता है।

दो घटिया वज चुकी थी। हाल मे सबसे पहली कतार मे शहर के डिप्टी कमिश्नर के साथ बैठे हुए बडे भाई साहब उनकी किसी हा म हा मिला रहे थे। वही सौम्य गम्भीर मुद्रा, वही शात आश्वस्त चेहरा, काली अचकन, काली टोपी—बडे भाई भद्र समाज के स्तम्भ नजर आ रह थे।

बडे भाई साहब उठ खडे हुए और झुककर प्रणाम करते हुए फूलो का हार डिप्टी कमिश्नर साहब के गले मे डाला। सारा हाल तालियो से गूज उठा। फिर बडे भाई साहब ने अपना भाषण आरम्भ किया, डिप्टी कमिश्नर का स्वागत और धयवाद किया, स्कूल की प्रशसा की, शिक्षाप्रद नाटक का परिचय कराया, भारतीय सस्कृति के गुण गाए, और अत म नाटक मे भाग लेन वाला को आशीवाद दिया

'हमारे नाटक हमारे देश के इतिहास और सस्कृति का एक गौरवमय अग हैं। मुझे खुशी है कि इस काय म हमारी वालिकाआ और स्त्रिया न

भाग लिया है। देश की कला दश की स्त्री जाति पर अवलम्बित है। उनका भाग नेना कला के लिए मगलकारी है।'

सुनदा नाटयशाला म परदे के पीछे खडी एक न्हे से सुराख मे से हाल म खडे दशकों को देख रही थी यह सुनकर वह हसी, पर साथ ही साथ उसकी आखा म घणा और विमुखता की तीव्र भावना भी झलक उठी। इतने मे उस पीछे से किसी ने कहा

'अब तुम स्वय फैसला कर लो। अगर न भी खेलना चाहो तो कोई बात नहीं, हमने दूसरी लडकी को तुम्हारी जगह तैयार कर लिया है' पीछे खडे हुए कायकर्त्ता ने सुनदा स कहा।

सुनदा ने कायकर्त्ता के मुह की ओर देखा, और हसते हुए बोली तुम्हे अब भी शक है कि मैं अपना पाट नही खेलूगी ?'

'जो खेलना चाहो तो जरूर खेलो, मैं चाहता था कि तुम अच्छी तरह से सोच लो।'

'मैंन सोच लिया है। शायद पहले म न भी खेलती। पर अब भारतीय नारी और भारतीय सस्कृति की प्रशसा के बाद तो जरूर खेलूगी।'

मगर बात यही खत्म नहीं होगी, हमारा नाटक बेशक यहा खत्म हो जाएगा। यह सोच लो। तुम्हे उसी घर म रहना है, कायकर्त्ता ने विवेक भरे लहजे म कहा।

'मैं जानती हू। यह मत भूलो कि भाई साहब को भी उसी घर म रहना है'' कहकर हसती हुइ स्टेज की ओर भागने लगी। फिर कोने मे रुकी और घूमकर बोली

'यह सब तुम्हारे खत की करामात है।' और हसती हुई आखा म ओझल हो गई।

एन उसी वक्त तीसरी घटी के बजने की आवाज सुनाई दी।

भीष्म साहनी

जन्म सन् 1915, रावलपिण्डी मे
शिक्षा एम ए (अंग्रेजी) पी एच डी
साहित्यिक गतिविधि सात वर्ष तक 'विदेशी भाषा प्रकाशन गृह' मास्को स सम्बद्ध रहे रूसी भाषा पर अधिकार 'तॉल्सतॉय की कहानिया', 'पुनजन्म नामक उपन्यास तथा चगेत ऐतमातोव के लघु उपन्यास 'पहला अध्यापक' आदि लगभग दो दजन पुस्तको का मूल रूसी से अनुवाद किया
प्रकाशित कृतिया 'भटकती राख', 'भाग्यरेखा', 'पहला पाठ और 'पटरिया' (कहानी सग्रह)
झरोखे', 'कडिया', 'तमस' तथा बसती' (उपन्यास)
सम्प्रति जाकिर हुसैन कालज, दिल्ली विश्वविद्यालय म अंग्रेजी के प्राध्यापक